जैन तीर्थ दर्शन

संपादन
अक्षयकुमार जैन, राधेश्याम 'प्रगल्भ'
शिवनाथ मित्तल

प्रकाशन
सुभाष जैन
मंत्री
अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद
पब्लिशिंग हाऊस
३६२५, सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली की प्रतिमा के सहस्रवें स्थापना वर्ष पर प्रकाशित

संस्करण : 1997

मूल्य : बारह रुपए

प्रकाशक :
अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद पब्लिशिंग हाउस
३६२५, सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

मुद्रक : शकुन एन्टरप्राइसेस, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली

JAIN TEERTH DARSHAN : Rs. 12.00
AKHIL BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN PARISHAD
PUBLISHING HOUSE, 3625, Subhash Marg, New Delhi-110002

दो शब्द : प्रकाशक के

जैन आचार्यों ने तीर्थों की वंदना को आध्यात्मिक उन्नति का एक महत्वपूर्ण सोपान माना है। तीर्थ दर्शन से अन्य अनेक लाभ भी हैं, जैसे—ज्ञानवृद्धि, स्वास्थ्य लाभ, आदि। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद ने अपने छात्रों के लिए कुछ समय पूर्व 'जैन तीर्थ और उनकी यात्रा' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित की थी। पुस्तक छात्रों के लिए तो उपयोगी थी ही, उसे अन्य जैन पाठकों एवं जैनेतर बंधुओं ने भी पसंद किया।

पाठकों की निरंतर मांग को देखते हुए, पुस्तक का यह संस्करण आवश्यक था। जब परिषद पब्लिशिंग हाऊस के मंत्रीपद का भार मुझे सौंपा गया तो मैंने इस आवश्यकता को समझा। मेरी इच्छा थी कि पुस्तक में सभी जैन तीर्थों का विवरण समाविष्ट हो। इस विचार से मैंने लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार श्री अक्षय कुमार जैन, सुप्रसिद्ध कवि और लेखक श्री राधेश्याम 'प्रगल्भ' एवं जैन धर्म की उन्नति के लिए समर्पित व्यक्तित्व श्री शिवकुमार मित्तल से पुस्तक तैयार करने का अनुरोध किया। तीनों संपादकों ने अनथक परिश्रम कर पुस्तक को तैयार किया है। इस पुस्तक को तैयार करने में पुरानी पुस्तक के अतिरिक्त भा० दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बंबई द्वारा चार खंडों में प्रकाशित जैन तीर्थ संबंधी पुस्तकों से भी सहायता ली गई है।

पुस्तक में तीर्थों का वर्णन प्रदेशों के अंतर्गत दिया गया है। उल्लेखनीय

बात यह है कि यदि कोई बंधु भारत के समस्त तीर्थों के दर्शन एक ही यात्रा में करना चाहें तो इस पुस्तक में दिए गए वर्णनानुसार यात्रा करने से उन्हें एक तीर्थ पर दोबारा नहीं जाना पड़ेगा। पुस्तक अत्यंत सरल भाषा में लिखी गई है और इसमें तीर्थ संबंधी पूर्ण जानकारी (क्षेत्र का महत्व, दूरी, आवास आदि की सुविधा) दी गई है। मैं तीनों संपादकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

मंहगाई के इस दौर में मैपलिथो पर तथा आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ २४० पृष्ठों की पुस्तक प्रकाशित करना, काफी व्ययसाध्य कार्य है। इसलिए सौ बंधुओं से एक सौ एक रुपया प्रति बंधु अंशदान लिया गया है। मैं उन सभी अंशदान दाताओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

भगवान बाहुबली के सहस्रवें स्थापना वर्ष के अवसर पर इस पुस्तक को प्रकाशित करते हुए तथा लागत मूल्य से भी कम कीमत पर इसे पाठकों को उपलब्ध कराते हुए परिषद पब्लिशिंग हाऊस प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आशा है पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

—सुभाष जैन

अनुक्रम

१

जैन तीर्थं : महत्व, वंदन और लाभ

कर पावन है वही कि जो सत्कर्म करें नित,
जिह्वा वही पवित्र करे जो श्री जिन का गुणगान।
सार्थकता है पग पाने की तभी कि जब हम
करे सहित उल्लास पुण्य तीर्थों की ओर प्रयाण।

'प्रगल्भ'

तीर्थ क्या है ?

तीर्थ शब्द के अनेक अर्थ हैं : शास्त्र, उपाध्याय, उपाय, पुण्य कर्म, पवित्र स्थान आदि। लोक में इस शब्द का अर्थ 'पवित्र स्थान' के रूप में रूढ़ हो गया है। जैन तीर्थों से अभिप्राय है : वे पवित्र स्थान जिनको जैन पूजते और मानते हैं।

संसारविरक्त महापुरुष प्रकृति के एकांत-शांत स्थानों में विचरते हैं। वे उच्च पर्वतमालाओं, मनोरम उपत्यकाओं, गहन गुफाओं एवं वनों में जाकर साधना में लीन होते हैं। जैन धर्म जीवमात्र को परमार्थ सिद्धि की साधना का उपदेश देता है, क्योंकि प्रत्येक जीवन सुख चाहता है। सुख संसार के प्रलोभनों में नहीं है। वह आत्मा का गुण है। संपत्ति तो छाया के समान है। छाया का पीछा करने से वह हाथ नहीं आती। उसके प्रति उदासीन हो जाइए। वह स्वतः आपके पीछे पीछे चलेगी। महान बनने के लिए त्याग धर्म का ही अभ्यास करना कार्यकारी है। अर्थ और काम पुरुपार्थों की सफलता धर्म पुरुपार्थ पर ही निर्भर है। इसलिए अन्य कार्यों के साथ तीर्थवंदना भी धर्म-साधना का मुख्य कारण कहा गया है। वस्तुतः तीर्थ वह विशेप स्थान है जहां पर किसी साधक ने साधना करके आत्मसिद्धि को

प्राप्त किया है। वह स्वयं तारण-तरण हुआ है और उस क्षेत्र को भी अपनी भवतारण शक्ति से संस्कारित कर गया है। धर्म-मार्ग के महान प्रयोग उस क्षेत्र में किए जाते हैं—मुमुक्षु जीव तिल-तुषमात्र परिग्रह का त्याग करके मोक्ष पुरुषार्थ के साधक बनते हैं। वे वहाँ पर आसन लगाकर तपश्चरण, ज्ञान और ध्यान का अभ्यास करते हैं। अंत में कर्म शत्रुओं तथा द्वेषादि का नाश करके परमार्थ को प्राप्त करते हैं। यहीं से वे मुक्त होते हैं। इसलिए ही निर्वाण स्थान परम पूज्य हैं।

किंतु निर्वाण स्थान के साथ ही जैन धर्म में तीर्थंकर भगवान के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक के पवित्र स्थानों को भी सिद्ध तीर्थ कहा गया है। तीर्थंकर कर्म प्रकृति जैन कर्म सिद्धांत में एक सर्वोपरि पुण्य प्रकृति कही गई है। जिस महानुभाव से यह पुण्य प्रकृति बँध को प्राप्त होती हैं अन्य सभी पुण्य प्रकृतियाँ उसकी अनुसारिणी हो जाती हैं। यही कारण है कि भावी तीर्थंकर के माता के गर्भ में आने के पहले ही वह पुण्य प्रकृति अपना सुखद प्रभाव प्रकट करती है। और गर्भ में आने के छह मास पूर्व से और गर्भावस्था के नौ मास तक, इस प्रकार १५ मास तक रत्न और स्वर्ण की वृष्टि होती है। उनका गर्भावतरण और जन्म स्वयं माता-पिता एवं अन्य जनों के लिए सुखकारी होता है। जिस समय तीर्थंकर भगवान तपस्वी बनने के लिए पुरुषार्थी होते हैं, उस समय के प्रभाव का वर्णन करना दुष्कर है। वह महान अनुष्ठान है—संसार में सर्वतोभद्र है। उस समय कर्मवीर से धर्मवीर ही नहीं बल्कि वह धर्मचक्रवर्ती की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके द्वारा महान लोकोपकार होने का पुण्य

योग इसी समय से घटित होता है। तब फिर उनका तपोवन क्यों न पतितपावन हो ! उनके दर्शन करने से क्यों न धर्ममार्ग पर अग्रसर होने का उत्साह जागृत हो !

उस पर केवल ज्ञान, कल्याण महिमा की सीमा असीम है। इसी अवसर पर तीर्थंकरत्व का पूर्ण प्रकाश होता है। इसी समय तीर्थंकर भगवान को धर्मचक्रवर्तित्व प्राप्त होता है। उनके ज्ञानपुंज रूप, दिव्य आत्मप्रकाश के सामने सहस्रों सूर्यों का प्रकाश भी लज्जित है। यही वह कल्याणक है जिसमें लोकोपकार के बहाने तीर्थंकर भगवान द्वारा धर्मचक्रप्रवर्तन होता है। यही वह पुण्य स्थान है, जहां जीव मात्र को सुखकारी धर्मदेशना कर्णगोचर होती है। और यहीं से एक स्वर्ण वेला में तीर्थंकर भगवान का विहार होता है, जिसके आगे आगे धर्मचक्र चलता है। सारे आर्यखंड में सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिनेंद्र प्रभु का विहार और धर्मोपदेश होता है। अतः आयुकर्म के निकट अवसान में वह जीवनमुक्त परमात्मा किसी पुण्य क्षेत्र पर आ विराजमान होते हैं। यहीं से लोकोत्तर ध्यान की साधना से अघातिया कर्मों का भी नाश करके अशरीरी परमात्मा हो जाते हैं। वह क्षेत्र ज्ञान किरण से संस्कारित हो जाता है। देवेंद्र वहां आकर निर्वाण कल्याण की पूजा करता है और उस स्थान को अपने वज्र दंड से चिह्नित कर देता है। भक्तजन ऐसे पवित्र स्थानों पर चरण-चिह्न स्थापित करके उपर्युक्त दिव्य घटनाओं की पुनीत स्मृति को स्थायी बना देते हैं। मुमुक्षु उनकी वंदना करते हैं और उस आदर्श से शिक्षा ग्रहण करके आत्मकल्याण करते हैं।

किंतु तीर्थंकर भगवान के कल्याणक स्थानों के अतिरिक्त

सामान्य केवली महापुरुषों के निर्वाण स्थान भी तीर्थवत पूज्य हैं। वहां निरंतर यात्रीगण आते-जाते हैं, उस स्थान की विशेषता उन्हें वहां ले जाती है। वह एकमात्र आत्मसाधना के चमत्कार की द्योतक होती है। उस पवित्र क्षेत्र पर या तो किसी पूज्य साधु ने उपसर्ग सहन कर अपने आत्मबल का चमत्कार प्रकट किया होगा अथवा वह स्थान अगणित आराधकों की धर्माराधना और सल्लेखनाव्रत की पालना से दिव्य रूप पा लेता है। वहां पर अद्भुत और अतिशयपूर्ण दिव्य मूर्तियां और मंदिर मुमुक्षु के हृदय पर ज्ञान-ध्यान की शांतिपूर्ण मुद्रा अंकित करने में कार्यकारी होते हैं। इन्हें अतिशय क्षेत्र कहा जाता है।

जैन सिद्धांत साक्षात धर्म विज्ञान है। उसमें अंधेरे में निशाना लगाने का उद्योग कहीं नहीं है। वह साक्षात सर्वज्ञ-सर्वदर्शी तीर्थंकरों की देन है। इसलिए उनमें पद पद पर वैज्ञानिक निरूपण मिलता है। हर कोई जानता है कि जिसने किसी मनुष्य को देखा नहीं वह उसको पहचान नहीं सकता। मोक्ष-मार्ग के पर्यटक का ध्येय परमात्म स्वरूप प्राप्त करना होता है। तीर्थंकर भगवान उस परमात्म स्वरूप के प्रत्यक्ष आदर्श जीवन-मुक्त परमात्मा होते हैं। अतएव उनका दर्शन करना एक मुमुक्षु के लिए उपादेय है। उनका दर्शन उसे परमात्मदर्शन कराने में कारण भूत होता हैं। इस काल में उनका प्रत्यक्ष दर्शन सुलभ नहीं हैं। इसलिए ही उनकी तदाकार स्थापना करके मूर्तियों द्वारा उनका दर्शन किया जाता है। तीर्थ स्थानों में उनकी उस ध्यानमयी शांत मुद्रा को धारण करने वाली मूर्तियां बिराजमान हैं। वे मूर्तियां भक्तजनों के हृदय में सुख और शांति की पुनीत

धारा बहा देती हैं। भक्तहृदय उन मूर्तियों के सम्मुख पहुंचते ही अपने आराध्यदेव का साक्षात अनुभव करता है। उनका गुण गाकर अलभ्य आत्मतुष्टि पाता है। पाठशाला में बच्चे भूगोल पढ़ते हैं। उन देशों का ज्ञान नक्शे के द्वारा कराया जाता है जिनको उन्होंने देखा नहीं है। उस अतदाकार स्थान अर्थात नक्शे के द्वारा वह उन विदेशों का ठीक ज्ञान उपार्जन करते हैं। ठीक इसी तरह जिनेंद्र की प्रतिमा भी उनका परिज्ञान कराने में कारणभूत है। इसीलिए जिनमंदिरों में जिन प्रतिमाएं होती हैं। उनके आधार से एक गृहस्थ ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ता है। तीर्थ स्थानों पर भी इसीलिए अति मनोज्ञ और दर्शनीय मूर्तियों का निर्माण किया गया है।

पहले तो तीर्थस्थान स्वयं पवित्र हैं। उस पर वहां आत्म-संस्कारों को जागृत करने वाली बोलती सी जिन प्रतिमाएं होती हैं। उनके दर्शन से तीर्थयात्री को महती निराकुलता का अनुभव होता है। वह साक्षात सुख का अनुभव करता है।

तीर्थ का महत्व

तीर्थ वह स्थान है जिससे संसार सागर से तरा जाए। उसके समागम में पहुंचकर मुमुक्षु संसार सागर से तरने का उद्योग-उपक्रम करता है। तीर्थ स्थान योगियों की योग निष्ठा, ज्ञान-ध्यान और तप-साधना से पवित्र हो चुके होते हैं। उनमें भी निर्वाण क्षेत्र का महत्व सर्वोपरि है। वे तो महातीर्थ हैं। इन क्षेत्रों में बड़े बड़े प्रसिद्ध पुरुष सिद्ध हुए हैं। पुराण पुरुष अर्थात तीर्थंकरों के आश्रय स्थानों अथवा उनके निमित्त कल्याणक

स्थानों में ध्यान की विशेष सिद्धि होती है। ध्यान ही वह अमोघ अस्त्र है जो पापशत्रु को नष्ट करता है। मुमुक्षु पाप से डरता है। पाप में पीड़ा है और पीड़ा से सब बचना चाहते हैं। इस पीड़ा से बचने के लिए भव्य जीव तीर्थों की शरण लेते हैं। लोक-विश्वास के अनुसार तीर्थवंदन से पापमल धुल जाता है। लोगों का यह श्रद्धान सार्थक है। परंतु यह विवेकपूर्ण होना चाहिए। तीर्थ के स्वरूप, महत्व और उसकी वंदना के रहस्य को समझे बिना तीर्थदर्शन मात्र पर्याप्त नहीं होता। लोक में सागर, सरोवर, नदी आदि को तीर्थ मानकर उनमें स्नान कर लेने मात्र से बहुधा पवित्र हुआ माना जाता है। यह धारणा गलत है। बाहरी शरीर मल के धुलने से आत्मा पवित्र नहीं होती। आत्मा तब ही पवित्र होती है जबकि क्रोधादि अंतर्मल दूर हों। अतएव तीर्थ वही कहा जा सकता है और वही तीर्थ वंदना हो सकती है, जिसकी निकटता में पापमल दूर होकर अंतरंग शुद्ध हो। जिनमार्ग में वही तीर्थ वंदना है, जिसके दर्शन और पूजन करने से पवित्र उत्तम क्षमादि धर्म, विशुद्ध सम्यक्‌दर्शन, निर्मल संयम और यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति हो। जहां से मनुष्य शांति-भाव का पाठ उत्तम रीति से ग्रहण कर सकता है, वही तीर्थ है। जैनमत के माननीय तीर्थ उन महापुरुषों के पावन स्मारक हैं जिन्होंने आत्मशुद्धि की पूर्णता प्राप्त की है। लौकिक शुद्धि विशेष कार्यकारी नहीं है। साबुन लगाकर, मलमल कर नहाने से शरीर भले ही शुद्ध सा दिखने लगे, परंतु लोकोत्तर शुचिता उससे प्राप्त नहीं हो सकती। वह तो तब ही प्राप्त हो सकती है जब अंतरंग से क्रोधादि कषाय मैल धो दिया जाए। इसको धोने

के लिए धर्म उपादेय है। सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्-चरित्र रूप रत्नत्रय धर्म को आराधना ही लोकोत्तर शुचिता की आधारशिला है। इस रत्नत्रय धर्म के धारक साधु जनों के आधार रूप निर्वाण आदि तीर्थस्थान हैं। वे तीर्थ ही इस कारण लोकोत्तर शुचित्व के योग्य उपाय हैं, प्रबल निमित हैं। इसीलिए शास्त्रों में तीर्थों की गणना मंगलों में की गई है। वे क्षेत्रमंगल है। कैलास, सम्मेदाचल, ऊर्जयंत (गिरिनार) पावापुर, चंपापुर आदि तीर्थस्थान अर्हंतादि के तप, केवल ज्ञानादि गुणों के उपजने के स्थान होने के कारण क्षेत्रमंगल हैं।

तीर्थ की वंदना

इन पवित्र क्षेत्रों का स्तवन और पूजन 'क्षेत्रस्तवन' है। तीर्थ-स्थल के दर्शन होते ही हृदय में पवित्र आह्लाद की लहर दौड़ती है। हृदय भक्ति से भर जाता है। उस पुण्य भूमि को देखते ही यात्रा का मस्तक झुक जाता है। वह उस तीर्थ की पवित्र प्रसिद्धि का गुणगान मधुर स्वरलहरी से करता हुआ आगे बढ़ता है। जिनमंदिरों में जाकर वह जिनदर्शन करता है, सुविधानुसार अष्ट द्रव्यों से जिनेंद्र का और तीर्थ का पूजन करता है। तीनों समय सामायिक वंदना करता है। शास्त्र स्वाध्याय और धर्म-चर्चा करने में निरत रहता है। बार बार जाकर पर्वतादि क्षेत्र की वंदना करता है। चलते चलते यही भावना करता है कि भव भव में मुझे ऐसा ही पुण्य योग मिलता रहे। सारांश यह है कि यात्री अपना सारा समय धर्म पुरुषार्थ की साधना में ही लगाता है। वह तीर्थ स्थान पर रहते हुए अपने मन में बुरी

भावना उठने ही नहीं देता। इन पवित्र स्थानों पर यात्री गण कड़ी से कड़ी प्रतिज्ञाएं सहर्ष से कर लेते हैं। अन्यत्र वे शायद ही उन्हें कर सकें। यह सब तीर्थ का माहात्म्य है। ऐसे पवित्र स्थान को किसी भी तरह अपवित्र न बनाना ही उत्तम है।

तीर्थ यात्रा से लाभ

घर बैठे ही कोई अपने धार्मिक पवित्र स्थानों के महत्व और प्रभाव नहीं जान सकता। सारे भारतवर्ष में जैन तीर्थ बिखरे हुए हैं। उनका दर्शन करके धर्म महिमा की मुहर अपने हृदय पर अंकित हो जाती है। वह उसके भावी जीवन को समुज्ज्वल बनाती है। यह तो हुआ धर्म लाभ, परंतु इसके साथ ब्याजरूपी देशाटनादि के लाभ भी होते हैं। देशाटन में बहुत सी नई बातों का अनुभव होता है और नई वस्तुओं को देखने का अवसर मिलता है। यात्री का वस्तुज्ञान और अनुभव बढ़ता है और उसमें कार्य करने की चतुरता और क्षमता आती है। घर में पड़े रहने से बहुधा मनुष्य संकुचित विचारों का कूप मंडूक बना रहता है। तीर्थयात्रा करने से हृदय से विचार संकीर्णता दूर हो जाती है। उसकी वृत्ति उदार होती है। वह आलस्य और प्रमाद का नाश करके साहसी बन जाता है, परहित के लिए वह तत्पर रहता है।

जैन लोग अपने पूर्वजों के गौरवमय अस्तित्व का परिचय प्राचीन स्थानों का दर्शन करके ही पा सकते हैं। यह तीर्थयात्रा में सुलभ है। साथ ही जैन समाज की उपयोगी संस्थाओं: जैसे जैन महाविद्यालय, छात्रावास श्राविकाश्रम, अनाथाश्रम

आदि देखने का अवसर मिलता है। इस दिग्दर्शन से दर्शक के हृदय में आत्मगौरव की भावना जागृत होना स्वाभाविक है। वह अपने गौरव को जैन समाज का गौरव समझेगा और ऐसा उद्योग करेगा जिसमें धर्म और संघ की प्रभावना हो। तीर्थ-यात्रा में मुनि. आर्यिका आदि साधु पुरुषों के दर्शन और उनकी भक्ति करने का भी सौभाग्य प्राप्त होता है। अनेक स्थानों के सामाजिक रीति-रिवाजों और भाषाओं का ज्ञान भी सुगमता से होता है। यात्रा के दौरान उसे घर-धंधे की आकुलता से छुट्टी मिल जाती है। इसलिए यात्रा करते समय भाव बहुत शुद्ध रहते हैं। विशाल जैन मंदिरों और भव्य प्रतिमाओं का दर्शन करने पर बड़ा आनंद मिलता है। अनेक शिलालेखों को पढ़ने से इतिहास का ज्ञान होता है। संक्षेप में तीर्थयात्रा से मनुष्य को लाभ ही लाभ हैं।

प्रश्न

१. तीर्थ यात्रा से आप क्या समझते हैं?
२. तीर्थ क्षेत्र कैसे बनते हैं?
३. निर्वाण क्षेत्र या सिद्ध क्षेत्र और अतिशय क्षेत्र पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए।
४. तीर्थ क्षेत्रों पर तीर्थंकरों अथवा महापुरुषों की मूर्तियां या उनके चरण चिह्न क्यों बनाए जाते हैं?
५. तीर्थ क्षेत्र का महत्व अपने शब्दों में लिखिए।
६. सच्ची तीर्थ यात्रा और सच्ची तीर्थ वंदना किस प्रकार होती है?

७. किस प्रकार की गई यात्रा निष्फल और पाप कर्मबंध का कारण होती है ?

८. तीर्थ यात्रा के लाभों का विस्तार से वर्णन करिए।

९. भारत और जैन धर्म के इतिहास की क्या क्या सामग्री जैन तीर्थों से उपलब्ध होती है ?

१०. तीर्थ वंदना को धर्मसाधना का मुख्य कारण क्यों कहा जाता है ?

११. जैनसिद्धांत को साक्षात धर्मविज्ञान क्यों कहा गया है ?

१२. शास्त्रों में तीर्थों की गणना 'मंगलों' में क्यों की गई है ?

१३. यदि आपने कोई तीर्थ यात्रा की हो तो उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

२

जैन तीर्थ : वर्णन

दिल्ली और उत्तर प्रदेश

दिल्ली का जैन धर्म से प्राचीन काल से ही संबंध रहा है। यहां जैन बड़ी संख्या में है। जहां आज कुतुब मीनार है, वहां कभी जैन मंदिर था। चांदनी चौक का लाल मंदिर तथा पालम हवाई अड्डे के सामने स्थित चार सौ वर्ष पुराना जैन मंदिर भी इसके प्राचीन संबंध के साक्षी है।

उत्तर प्रदेश का जैनों मे संबंध जैन इतिहास मे प्राचीनतम कहा जा सकता है। आदि-तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म कल्याणक अयोध्या मे तथा सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ एवं तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक वाराणसी में हुआ था। इस प्रदेश मे बड़ी संख्या में सिद्ध क्षेत्र है।

दिल्ली

दिल्ली को भारत की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है—आज से ही नहीं, अति प्राचीन काल से। महाभारत काल में इसका नाम इंद्रप्रस्थ था। कालांतर में समय समय पर इसका नाम बदलता रहा। कभी यह नगर योगिनीपुर (जोहणीपुर) के नाम से जाना गया तो कभी ढिल्ली या ढिल्लिका के नाम से। इसे जहानाबाद और दिल्ली भी कहा गया।

इसके नामकरण के बारे में एक किंवदंती प्रसिद्ध है। सम्राट समुद्रगुप्त ने इंद्रप्रस्थ में एक लोहे की लाट गड़वाई थी। तोमर-वंशी राजा अनंगपाल ने उसे पुन: मजबूत गड़वाने के विचार से उखड़वाया। कारण यह था कि राजा अनंगपाल से किसी ज्योतिषी ने कहा था : 'यह लाट जितनी स्थिर होगी, उनना ही आपका राज्य स्थिर रहेगा।'

लाट उखड़वाने पर देखा गया कि उसके सिरे पर खून लगा था। खैर, राजा ने लोहे की वह किल्ली पुन: गड़वा दी। किंतु वह कुछ ढीली रह गई। इसी कारण लोग उसे ढील्ली या ढिल्ली कहने लगे। ढिल्ली ही बदलते बदलते दिल्ली बन गई। शाहजहां ने इस नगर का नाम शाहजहांनाबाद रखा। पर यह नाम चल

नहीं पाया। बोलचाल में लोग इसे दिल्ली ही कहते रहे। अंगरेजों के शासनकाल में यह नगर 'देहली' हो गया था।

जैनधर्म का दिल्ली से घनिष्ठ संबंध रहा है। कुतुब की लाट के पास जैन मंदिर और मूर्तियों के अवशेष इसके प्राचीन संबंध की साक्षी दे रहे हैं। कुतुबुद्दीन ने २७ हिंदू और जैन मंदिरों को तोड़कर यहां मस्जिद बनाई थी। इसके खंभों एवं छतों में अब भी जैन मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। फीरोजशाह एवं अकबर आदि बादशाहों को जैन गुरुओं ने अहिंसा का उपदेश दिया था। ये बादशाह जैन आचार्यों का बड़ा सम्मान करते थे। इन्होंने उन्हें दिल्ली में स्थान भी समर्पित किए।

वर्तमान समय में दिल्ली में कुल मिलाकर लगभग ७५ जैन मंदिर हैं। किंतु मुगलकाल में बने हुए लालमंदिर, धर्मपुरा का नया मंदिर, सेठ के कूचे का बड़ा मंदिर, आदि दिव्य जैन मंदिर हैं। लाल मंदिर का निर्माण शाहजहां के काल में हुआ था। इस मंदिर को लश्करी मंदिर भी कहते हैं। कहा जाता है कि शाही फौज के एक जैन अफसर की प्रेरणा पर इस मंदिर का निर्माण सन १६५६ में हुआ था। इस मंदिर में आठ वेदियां हैं। प्राचीन वेदी में लगभग आधे मीटर की श्वेत पाषाण की भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। धर्मपुरा का नया मंदिर के निर्माण (सन १८००) में मुख्य योग राजा हरसुखराय का था। इस मंदिर के निर्माण कार्य में भावनात्मक दृष्टि से सारी बिरादरी जुड़ी थी। सेठ के कूचे के 'बड़ा मंदिर' का निर्माण सेठ इंद्रराजजी ने कराया था। दिल्ली (पालम) हवाई अड्डे के ठीक सामने लगभग ४०० वर्ष पुराना प्राचीन

जैन मंदिर है। भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के समय वर्धमान वनस्थली और महावीर मेमोरियल नग निर्माण कार्य हैं।

जैन मंदिरों के अतिरिक्त दिल्ली में प्राचीन एवं आधुनिक काल के अन्य अनेक दर्शनीय स्थल हैं : यथा, कुतुब की लाट, जंतर-मंतर, लाल किला, पुराना किला, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, राष्ट्रीय संग्रहालय, चिड़ियाघर, राजघाट (अहिंसा के उपासक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि,) शांति वन (विश्वमानव शांतिदूत पं० जवाहरलाल नेहरू की समाधि) और विजयघाट (युद्ध के विजेता और शांति के दूत श्री लालबहादुर शास्त्री की समाधि)।

यहां दिगंबर जैन महा समिति तथा अखिल भारतीय दिगंबर जैन परिषद के केंद्रीय कार्यालय हैं। भरतवर्षीय जैन बाल आश्रम, वीर सेवा मंदिर के भवन भी हैं। विभिन्न क्षेत्रों में जैन धर्मशालाएं हैं। दरियागंज में महावीर वाटिका है जो समारोहों के लिए बहुत उपयुक्त है।

बड़ा गांव

दिल्ली-सहारनपुर सड़क पर दिल्ली से २२ कि० मी० दूर खेकड़ा स्थित है। दिल्ली से बस द्वारा खेकड़ा पहुंचकर वहां से मेरठ जाने वाली बस या रिक्शा-तांगा से बड़ा गांव पहुंचा जा सकता है। शाहदरा-सहारनपुर रेलवे लाइन पर खेकड़ा स्टेशन है। बड़ा गांव खेकड़ा-मेरठ बस मार्ग पर खेकड़ा से ५ कि० मी० दूर है। यह अतिशय क्षेत्र है। यहां काफी बड़ी संख्या में लोग

मनौती मनाने आते हैं। यहां विशाल जैन मंदिर है जिसमें भगवान पार्श्वनाथ की दिव्य एवं चमत्कारिक प्रतिमा है। बड़ा गांव में जैन धर्मशाला है, किंतु आवास की दृष्टि से खेकड़ा अधिक सुविधासंपन्न है।

हस्तिनापुर (मेरठ)

खेकड़ा से मेरठ ५३ (दिल्ली से ६२) कि० मी० है। मेरठ उत्तर रेलवे का प्रमुख स्टेशन है। यहां काफी संख्या में जैन रहते हैं तथा कई दर्शनीय जिनमंदिर हैं। मेरठ से ३७ कि० मी० दूर हस्तिनापुर है। दिल्ली व मेरठ से बसें चलती हैं।

महाभारत काल में यह नगरी कुरुप्रदेश की राजधानी बताई जाती है। कौरव-पांडव यहीं के थे। हस्तिनापुर ही वह तीर्थ है जहां इस युग के आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का विहार हुआ था। उन्होंने एक वर्ष के उपवास के बाद यहां पदार्पण किया। तब यहां के राजा श्रेयांस थे। उन्होंने भगवान को इक्षुरस का आहार देकर पुण्यलाभ प्राप्त किया था। वह तिथि थी अक्षय तृतीया। तब से ही अक्षय तृतीया का पर्व संचालित हो गया। और इस प्रकार श्रेयांस को दान के आद्य प्रवर्तक कहा जाने लगा। इस क्षेत्र में भगवान आदिनाथ का समवसरण कई बार आया था। बाद को यहीं पर श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक हुए थे। इन तीर्थंकरों ने छः खंड पृथ्वी की दिग्विजय करके राजचक्रवर्ती की विभूति पाई थी। किंतु उसको तृणवत समझ, उसका त्याग कर दिया। और इस प्रकार वे धर्मचक्रवर्ती हुए।

यह तीर्थ हमें त्याग धर्म की शिक्षा देता है। श्री मल्लिनाथ का समवसरण भी यहां आया था। कुछ विद्वानों के मतानुसार भगवान पार्श्वनाथ का भी यहां पदार्पण हुआ था।

बलि और उसके मंत्रियों द्वारा अंकपनाचार्य और ७०० मुनियों पर यही उपसर्ग किया गया था। उस उपसर्ग को मुनि विष्णुकुमार ने वामन रूप धारण कर दूर किया था। तभी से रक्षाबंधन का पर्व प्रारंभ हुआ।

यहां दिल्ली के मुगलकालीन शाही खजांची और धर्मात्मा, राजा हरसुखराय का बनवाया हुआ एक विशाल एवं भव्य जिन-मंदिर है। इसका निर्माण १८०१ में हुआ था। इसका विशाल द्वार का निर्माण राजा सुगनचद ने कराया था। यहां तीनों भगवानों के (जिनके कल्याणक यहां हुए थे) चरणचिह्नों सहित तीन नसियां हैं। भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष में यहां बाहुबली मंदिर, २४ तीर्थंकरों की टोंकें, जल-मंदिर, पांडुकशिला आदि का भी निर्माण हुआ है। हाल ही में एक नहर की खुदाई के समय कुछ प्राचीन जैन मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं। यहां दो श्वेतांबर मंदिर भी हैं। यहां कई धर्मशालाएं हैं। उत्तर प्रांतीय दिगंबर जैन गुरुकुल भी है।

यहां कार्तिक अष्टाह्निका पर्व पर विशाल मेला होता है। फाल्गुनी अष्टाह्निका और ज्येष्ठ कृष्ण १४ को भी मेले होते हैं। श्वेतांबर मंदिर में भगवान आदिनाथ के इक्षुरस आहार के दिन भी समारोह होता है।

हस्तिनापुर के समीप ही एक गांव है—बहसूमा। यहां एक भव्य मंदिर है जिसमें दर्शनीय प्राचीन मूर्तियां हैं।

बहलना

यह अतिशय क्षेत्र है। यह मेरठ-मुजफ्फरनगर मार्ग पर मेरठ से ४३ कि० मी० है। सड़क पर पार्श्वनाथ मार्ग लिखा है। उस मार्ग पर लगभग १ कि० मी० चलकर छोटा सा गांव है। इस स्थान का मुख्य आकर्षण यहां का जैन मंदिर है। मंदिर विशाल है, और मंदिर के बाहर उत्तर की ओर पांडुक शिला विराजमान है। यहां प्रतिवर्ष २ अक्तूबर को मेला लगता है। यहां से मुजफ्फरनगर ५ कि० मी० है। जो यात्री रेल या सार्वजनिक बस से यात्रा करते है, उनको मुजफ्फरनगर (मेरठ ४८ कि० मी० है) पहुंचकर रिक्शा द्वारा बहलना जाना चाहिए। मुजफ्फरनगर में आवास आदि की सब सुविधाएं हैं।

श्रीनगर

मेरठ से मुरादाबाद जाना चाहिए। मुरादाबाद से नजीबाबाद पहुंचें। वहां से बस द्वारा कोटद्वार होते हुए श्रीनगर पहुंचा जा सकता है। नजीबाबाद से श्रीनगर १६० कि० मी० है। ऋषिकेश से भी श्रीनगर पहुंचा जा सकता है। वहां से श्रीनगर १०७ कि० मी० दूर है। अपनी भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक कारणों से श्रीनगर प्रमुख नगरों में गिना जाता रहा है। किसी समय यह पौढ़ी गढ़वाल की राजधानी था। श्रीनगर में अलकनंदा के तट पर जैन मंदिर स्थित है। वहां भगवान पार्श्वनाथ की चमत्कारी प्रतिमा है। इसके चमत्कारों से संबद्ध अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं। सन १८९४ में श्रीनगर ध्वस्त हो गया

था। उस विनाशलीला से जैन मंदिर भी नहीं बच पाया था। हां, प्रतिमाएं अवश्य सुरक्षित रह गई थीं। लाला प्रतापसिंह एवं लाला मनोहरलाल के प्रयासों से मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ। श्रीनगर में ठहरने के लिए जैन धर्मशाला है।

बदरीनाथ और कैलास

श्रीनगर से बस द्वारा केदारनाथ, बदरीनाथ जाना चाहिए। मार्ग में रुद्रप्रयाग पड़ता है। बदरीनाथ में भगवान ऋषभदेव की पद्मासन प्रतिमा है। इसकी दो भुजाएं ही असली हैं। शेष दो नकली लगाई गई हैं। यहां पट खुलने पर 'निर्वाण दर्शन' होते हैं। बोली लेने पर न्हवन के समय दिगंबर मूर्ति के दर्शन की भी अनुमति मिल जाती है। बदरीनाथ मंदिर के पीछे चरण बने हुए हैं। संभवतः ये चरण नाभिराय की निर्वाण प्राप्ति के उपलक्ष में बनाए गए।

प्राप्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि बदरीनाथ कभी जैनों का प्रमुख केंद्र रहा होगा। यह भगवान ऋषभदेव की साधना स्थली है। उन्होंने कैलास पर योगनिरोध किया था तथा कैलास मार्ग से मोक्षगमन किया था। बदरीनाथ (तत्कालीन विशाला) में भगवान ऋषभदेव के पिताजी नाभिराय और माता मरुदेवी ने भी घोर तप करके मुक्ति प्राप्त की थी। इस क्षेत्र में मुनियों के आश्रम थे। लोगों का आना-जाना बना रहता था। यहीं भगीरथ ने तप किया था। तभी से गंगा की एक धारा का नाम भगीरथी पड़ गया है।

आजकल बदरीनाथ-कैलास मार्ग बंद है। बदरीनाथ से

नीतीमठ (भारतीय सीमा का अंतिम गांव) ६४ कि० मी० है। कैलास इससे आगे है और यह सारा प्रदेश इस समय चीन के अधिकार में है।

अहिक्षेत्र या अहिच्छत्र

बदरीनाथ से पुनः मुरादाबाद लौटकर चंदौसी होते हुए आंवला स्टेशन पहुंचें। आंवला स्टेशन से रामनगर (जिला बरेली) केवल १८ कि० मी० है। रामनगर ही अहिक्षेत्र है। आंवला स्टेशन से अहिक्षेत्र के लिए तांगे आदि मिलते हैं। बरेली व बदायूं से बस-सेवा भी उपलब्ध रहती है।

भगवान पार्श्वनाथ कुमारावस्था में वाराणसी में गंगातट पर घूम रहे थे। उन्होंने कुछ तापसों को अग्नि जलाकर तप करते हुए देखा। अपने विदीप्त ज्ञान से उन्होंने जान लिया कि एक लकड़ी में सर्पयुगल था। लकड़ी चीरने पर वह सर्पयुगल निकला। उन्हें मरणासन्न जान भगवान ने उनके कान में णमोकार मंत्र पढ़ा। वह सर्प धरणेंद्र और सर्पिणी पद्मावती हुई।

इस घटना के बाद भगवान पार्श्वनाथ ने दीक्षा ली। तदुपरांत इस क्षेत्र में आकर तपस्या में लीन हुए। कमठ ने उन पर घोर उपसर्ग किया। वह तनिक भी विचलित नहीं हुए। अपने ध्यान में लीन रहे। धरणेंद्र और पद्मावती ने आकर अपने 'नागफण मंडलरूप' छत्र लगाकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। उपसर्ग दूर हुआ। भगवान को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। यहीं से उनके प्रथम धर्मचक्र का प्रवर्तन हुआ। उपसर्ग की अवस्था में

सौ फण का छत्र होने के कारण धर्मेंद्र ने इस स्थान का नाम अहिच्छत्र या अहिक्षेत्र प्रकट किया।

'महाभारत' में पांचाल जनपद का उल्लेख मिलता है। उसके दो भाग बताए गए हैं। उत्तर भाग की राजधानी अहिक्षेत्र और दक्षिण भाग की राजधानी कांपिल्य। पहले पूरे पांचाल पर द्रुपद का राज्य था। द्रोणाचार्य ने उसे जीत लिया। फिर दो भागों में विभाजित कर दिया। उत्तर पांचाल पर स्वयं राज्य करने लगे। दक्षिण पांचाल द्रुपद को दे दिया।

यहां महाभारतकालीन एक किला भी बताया जाता है। यहां विस्तृत भूभाग में यत्र-तत्र प्राचीन खंडहर भी मिलते हैं। यहां कई शिलालेख और जैन मूर्तियां मिली हैं। यह क्षेत्र जैन धर्म का प्रमुख केंद्र रहा है। यहां जैन राजाओं का दीर्घकाल तक राज्य रहा है। राजा वसुपाल ने यहां एक सुंदर सहस्रकूट जिन-मंदिर का निर्माण कराया था। उसमें कसौटी के पाषाण की भगवान पार्श्वनाथ की नौ हाथ ऊंची लेपदार प्रतिमा विराजमान की थी। आचार्य पात्र केशरी ने यहीं पर पद्मावती देवी द्वारा फणमंडप पर लिखित अनुमान के लक्षण पर अपनी शंका का निवारण किया था और जैन धर्म की दीक्षा ली थी। यह घटना राजा अवनिपाल के शासनकाल की है। राजा इस घटना से प्रभावित हुआ और उसने जैन धर्म धारण कर लिया था। जिस समय गिरिनार पर्वत पर भगवान नेमिनाथ का निर्वाण कल्याणक मनाया गया था, उसी समय यहां के राजा ने भी निर्वाणोत्सव मनाया था। श्री अहिक्षेत्र के दर्शन से कृतज्ञता ज्ञापन और सत्य के पक्षपाती बनने की शिक्षा मिलती है।

यहां एक प्राचीन शिखरबंद मंदिर है। इसमें एक बेदी 'निखालवाले बाबा' की कहलाती है। बाबा का बड़ा चमत्कार है। इस मूर्ति की बड़ी मान्यता है। अनेक लोग मनौती मनाने आते हैं।

रामगर गांव में एक विशाल दिगंबर जैन मंदिर है। इसमें छ: वेदियों में भगवान विराजमान हैं। यहां धर्मशालाएं भी हैं। प्रतिवर्ष चैत वदी अष्टमी से त्रयोदशी तक यहां मेला होता है। आषाढी अष्टाह्निका पर्व में यात्रीगण आकर श्री सिद्धि चक्र विधान करते है। यह उत्सव भी एक लघु मेले का रूप धारण कर लेता है।

यहां पर एक कुएं के जल में विशेष गुण है। उस जल के पीने से अनेक रोग शांत हो जाते हैं। प्राचीन काल में समीपस्थ क्षेत्रों के राजा, नवाब आदि इस कुएं का जल मंगवाते थे। उत्तराभिधाना बावड़ी के जल में स्नान करने से कुष्ट रोग दूर हो जाता है। यहां के वन से अनेक प्रकार की औषधियां प्राप्त होती हैं।

स्व० साहू शांतिप्रसाद जैन एवं श्रीमती रमा जैन की स्मृति में क्षेत्र का जीर्णोद्धार कराया गया है। पूरे मंदिर की मरम्मत कराई गई है। बड़े हाल, स्वाध्याय भवन तथा सीढ़ियों आदि का निर्माण हुआ है। यात्रियों के लिए अनेक सुविधाएं जुटाई गई हैं।

मथुरा

बरेली से अलीगढ़-हाथरस होते हुए सिद्ध क्षेत्र मथुरा पहुंचा जा

सकता है। मथुरा दिल्ली से १४५ कि० मी० है। मथुरा अति प्राचीन काल से भारत का महान तीर्थ रहा है। हिंदू, बौद्ध और जैनों में इसकी बड़ी मान्यता रही है। हिंदू अनुश्रुति के अनुसार मथुरा की गणना सप्त महापुरियों में की जाती है। श्रीकृष्ण की जन्मस्थली एवं लीलाभूमि होने के नाते यहां देश-विदेश के लाखों यात्री प्रतिवर्ष आते हैं।

यहां अंतिम केवली श्री जम्बूस्वामी संघ सहित पधारे थे। उनके साथ महामुनि विद्युच्चर और पांच सौ मुनिराजों ने भी तप किया था। किसी धर्मद्रोही ने उन पर उपसर्ग किया। मुनिराजों ने उसे समभाव से सहा। अंत में उनका समाधिमरण हुआ। उनकी स्मृति में यहां पांच सौ स्तूप बने हुए थे। सोलहवीं शताब्दी तक उनका उल्लेख मिलता है। सम्राट अकबर के समय में अलीगढ़-वासी साहू टोडर ने उनका जीर्णोद्धार किया था। कालांतर में वे भी नष्ट हो गए। वहीं पर एक स्तूप भगवान पार्श्वनाथ के समय का बना हुआ था। इसे 'देव निर्मित' कहा जाता था। श्री सोमदेवसूरि ने उनका उल्लेख अपने 'यशस्तिलकचंपू' में किया है। जम्बूस्वामी के निर्वाण के कारण यह स्थान (चौरासी) सिद्ध क्षेत्र माना जाता है। चौरासी में सेठ मनीराम द्वारा निर्मित भव्य जैन मंदिर, ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम और धर्मशाला हैं। पहले चौरासी मथुरा से ५ कि० मी० की दूरी पर अलग नगर था। मथुरा के विस्तार के कारण अब यह मथुरा नगरपालिका क्षेत्र में ही आ गया है।

मथुरा में समय समय पर की गई खुदाई में शिलालेखों, आयागपट्टों, मूर्तियों आदि की विपुल सामग्री मिली है। यहां

बहुत सारे टीले हैं जिनमें कंकाली टीला अति प्रसिद्ध है। यह सात टीलों का समूह है और कंकाली देवी के मंदिर के कारण कंकाली टीला कहलाता है। इस स्थान से स्तूप, मूर्तियां, सर्वतो-भद्र प्रतिमाएं, शिलालेख, आयागपट्ट, धर्मचक्र, तोरण, स्तंभ, वेदिकाएं, आदि जैन पुरातत्व की बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध हुई हैं। कतिपय अन्य स्थानों से भी काफी सामग्री प्राप्त हुई है। यह सामग्री ईसा पूर्व चौथी शताब्दी से ईसा की बारहवीं शताब्दी तक की है और इस समय मथुरा के राष्ट्रीय संग्रहालय (कर्जन म्यूजियम) में सुरक्षित है।

मथुरा के दर्शनीय स्थलों में श्रीकृष्ण जन्मस्थान, श्री द्वारिकाधीश का मंदिर, वृंदावन के श्रीरंगजी और बांकेबिहारी जी के मंदिरों का उल्लेख किया जा सकता है। श्रीकृष्ण की लीलाओं के संबद्ध होने के कारण समीपवर्ती स्थान—गोकुल, नंदगांव, बरसाना, दाऊजी, गोवर्धन, राधाकुंड आदि भी तीर्थ माने जाते हैं। यहां भी हर समय यात्रियों का आना-जाना बना रहता है।

मथुरा नगर में चार दिगंबर जैन मंदिर और एक चैत्यालय है। घीया मंडी में दिगंबर जैन धर्मशाला भी है। वृंदावन में भी एक दिगंबर जैन मंदिर है।

आगरा

आगरा भारत का विख्यात पर्यटक केंद्र है। मथुरा से ४५ कि० मी० दूर है। मथुरा से बस या रेल द्वारा सुविधापूर्वक पहुंचा जा सकता है। ताजमहल, किला, सिकंदरा (जहां अकबर की

समाधि है) और फतेहपुर सीकरी (आगरा से कुछ कि० मी० दूर जिसे अकबर ने राजधानी बनाया था पर पानी के अभाव में स्थान छोड़ देना पड़ा) बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकृष्ट करते हैं। शाहजहां द्वारा दिल्ली (तत्कालीन शाहजहांनाबाद) के बसाए जाने से पूर्व मुगल साम्राज्य की राजधानी प्रायः आगरा में ही रही।

मुगलकाल में यह जैनों की बड़ी बस्ती थी। अनेक जैन व्यक्ति सरकारी पदों पर थे, या समृद्ध व्यापारी थे। अब भी आगरा में जैन काफी संख्या में हैं। इस समय आगरा में ३६ जैन मंदिर व चैत्यालय हैं। मुहल्ला ताजगंज में चिंतामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा, रोशन मुहल्ले के मंदिर में भगवान शीतलनाथ की प्रतिमा और मोतीकटरा का पंचायती दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में भगवान संभवनाथ की प्रतिमा—ये तीन मूर्तियां प्राचीनता और अतिशय के कारण विशेष प्रसिद्ध हैं।

बहुत से विद्वान भी आगरा आकर बसे। मंदिरों में तत्व चर्चा व गोष्ठियां होती थीं। किसी समय आगरा, जयपुर और मुल्तान की तत्व गोष्ठियां बहुत प्रसिद्ध थीं। कविवर बनारसीदास, पं० भगवतीदास, पांडे रूपचंद, कवि कुंवरपाल, कविवर द्यानतराय, भैया भगवतीदास, कविवर भूधरदास आदि ने हिंदी में साहित्य की श्रीवृद्धि की है। आगरा संगतराशी और संगमरमर के काम के लिए विश्वप्रसिद्ध है।

दयालबाग का राधास्वामी मंदिर जो अनेक वर्षों से निर्माणाधीन है, पूर्ण होने पर उत्तम कला का उत्कृष्ट उदाहरण सिद्ध होगा।

फिरोजाबाद-चंदवार

फिरोजाबाद दिल्ली-हावड़ा व आगरा-कानपुर रेलवे लाइन पर स्टेशन है तथा आगरा-मैनपुरी सड़क मार्ग पर स्थित है। यह आगरा से ४५ कि० मी० है। यह नगर कांच की वस्तुओं (मुख्यत: चूड़ियों) के लिए सारे संसार में प्रसिद्ध है।

यहां इक्कीस दिगंबर जैन मंदिर और चैत्यालय हैं। नगर के प्रसिद्ध सेठ स्व० छदामीलाल ने जैन नगर में एक विशाल एवं कलापूर्ण दिगंबर जैन मंदिर और मानस्तंभ का निर्माण कराया है। सारा मंदिर संगमरमर का बना है और अत्यंत भव्य एवं खुली हुई वेदी पर भगवान महावीर की लगभग दो मीटर अवगाहना की श्वेत पाषाण की पद्मासन प्रतिमा है। मंदिर से संलग्न सरस्वती देवी जैन धर्मशाला, कानजी स्वामी पुस्तकालय, मोतीलाल जैन पारमार्थिक औषधालय के भवन हैं। पृष्ठ भाग में जैन म्यूजियम और जैन डिग्री कालेज है। म्यूजियम के सामने भगवान बाहुबली की लगभग ९ मीटर ऊंची खड़े योग की प्रतिमा स्थापित की गई है। यह प्रतिमा अत्यंत मनोहारी एवं दर्शनीय है।

पचायती दिगंबर (जैन) मंदिर में हीरा और स्फटिक मणि की प्रतिमाएं दर्शनीय हैं। भगवान चंद्रप्रभ की लगभग आधा मीटर ऊची स्फटिक की प्रतिमा अत्यनुपम है।

फिरोजाबाद से ६ कि० मी० की दूरी पर चंदवार है। यह अतिशय क्षेत्र है। इसका ऐतिहासिक महत्व है। यहां चारों ओर दूर तक खंडहर दिखाई देते हैं। यह जैनों का प्रमुख केंद्र

रहा है। अनुमान है कि यहां दसवीं से पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी तक जैन नरेशों का शासन रहा है। अब यहां केवल एक मंदिर अवशिष्ट है। निकट ही यमुना बहती है।

लगभग चार सौ वर्ष पूर्व सूबेदार फिरोजशाह ने चंदबार को बुरी तरह नष्ट कर दिया था। उसने ही अपने नाम पर यहां से कुछ दूरी पर फिरोजाबाद बसाया था।

मरसलगंज

फिरोजाबाद से मरसलगंज जाना चाहिए। यह अतिशय क्षेत्र है और फिरोजाबाद से २२ कि० मी० दूर है। फिरोजाबाद से बस द्वारा फरिहा पहुंचकर मरसलगज जाते हैं। फरिहा से क्षेत्र लगभग १ कि० मी० है। यहां हर तीसरे वर्ष मेला लगता है।

शौरीपुर-बटेश्वर

फिरोजाबाद मे बस द्वारा शिकोहाबाद पहुचकर शौरीपुर-बटेश्वर पहुचा जा सकता है। बटेश्वर शिकोहाबाद से २५ कि० मी० है (इस मार्ग से यमुना पार करनी पड़ती है)। बटेश्वर से शौरीपुर २ कि० मी० है।

शौरीपुर यादववंशी राजा शूरसेन की राजधानी था। यह स्थान बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) के गर्भ और जन्म कल्याणक का स्थान है। यह श्री धन्य, यम, विमलामुत केवलियों की मुक्तिभूमि और बहुत से मुनियों की केवलज्ञान भूमि भी है।

भगवान नेमिनाथ श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे। नेमिनाथ के

पिता का नाम महाराज समुद्रविजय था। उस समय यह नगर बड़ा समृद्ध था। बाद में श्रीकृष्ण की लीलाभूमि मथुरा हो गई। राजगृही अधिपति जरासंघ के आक्रमणों से त्रस्त होकर यादव इस क्षेत्र का त्याग करके द्वारका जा बसे।

शौरीपुर में कई प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर हैं। मुख्य मंदिर दो मंजिला है। दूसरा मदिर बरुआमठ सबसे प्राचीन है। यहां कई मनोज्ञ प्रतिमाएं हैं। एक बड़े परकोटे के भीतर कई प्राचीन टोंकें व छत्रियां हैं। एक छत्री में मुनि धन्य एवं यम की चरण पादुकाएं हैं। दालान में भगवान नेमिनाथ की मूंगई पाषाण की एक प्रतिमा अति मनोहारी एवं अतिशययुक्त है। यहां एक प्राचीन कुआं भी है जिसका जल स्वास्थ्यवर्धक है।

शौरीपुर बटेश्वर होकर ही पहुंचना होता है। बटेश्वर यमुनातट पर स्थित प्रमुख शैव तीर्थ है। यहां बटेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है और यमुना के किनारे एक सौ एक शिव-मंदिर हैं। यहां यमुनातट पर एक विशाल जैन मंदिर है जिसके साथ धर्मशाला भी है। इसमें श्री अजितनाथ भगवान की विशालकाय प्रतिमा है। इस मंदिर का निर्माण यहां के भट्टारकों ने कराया था। यहां श्री जगतभूषण आदि भट्टारकों का पट्ट भी रहा है। यमुना के चढ़ जाने पर मंदिर का एक भाग जलमग्न हो जाता है।

३ जून, १९७६ को इस क्षेत्र के लगभग ८० दस्युओं ने इसी मदिर के प्रांगण में आत्मसमर्पण किया था।

नवीन धर्मशाला, शोध एवं अध्ययन भवन (निर्माता श्री पद्मचंद सर्राफ, आगरा), श्रीमती रमा रानी पुरातत्व संग्र-

हालय, नवप्रवेश द्वार (स्व० साहू शांतिप्रसाद जैन द्वारा निर्मित), साहू अशोक जैन अतिथिग्रह आदि के निर्माण से इस क्षेत्र के विकास में सहयोग मिला है।

कंपिलाजी

शिकोहाबाद से रेल द्वारा कायमगंज जाना चाहिए। कायमगंज फर्रुखाबाद जिले की एक तहसील है। कंपिलाजी कायमगंज से ८ कि० मी० दूर है। सड़क पक्की है।

कंपिलाजी ही प्राचीन कांपिल्य है। यहां तेरहवें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक हुए थे। यह राजा द्रुपद की राजधानी थी। यहीं पर द्रौपदी का स्वयंवर हुआ था। हरिषेण चक्रवर्ती ने यहां पर जैन रथ निकलवा कर धर्मप्रभावना की थी। भगवान महावीर का समवसरण भी यहां आया था। किंतु कंपिलाजी में इस समय एक भी जैन नहीं है। बस्ती के बीच में एक अति प्राचीन मंदिर (निर्माण काल ४९२ ई०) है। इसमें भगवान विमलनाथ की मूलनायक प्रतिमा तथा दो और प्रतिमाएं भी हैं। पहले इस मंदिर में जमीन के नीचे बनी एक कोठरी में भगवान विमलनाथ के चरणचिह्न थे। अब वह कोठरी बंद कर दी गई है और चरण-पादुका बाहर विराजमान कर दी गई हैं। भगवान विमलनाथ की मूर्ति अतिशयपूर्ण है। मंदिर के बाहर एक जैन धर्मशाला है। बस्ती के दूसरे सिरे पर एक विशाल धर्मशाला बनी है। यहां चैत्र कृष्णा अमावस्या से चैत्र शुक्ला तृतीया तक और आश्विन कृष्णा २ को मेले होते हैं।

कपिलाजी में चारों ओर खडित जिनप्रतिमाएं बिखरी पड़ी है। इससे स्पष्ट है कि यहा और भी मंदिर है।

कानपुर

कायमगज से रेल द्वारा कानपुर पहुंचना चाहिए। कानपुर उद्योग और व्यापार का प्रमुख केंद्र है। यहा जैन काफी सख्या में रहते है तथा यहा कई दर्शनीय जिनमदिर हैं। इनमें पचायती बड़ा मदिर सबसे प्रसिद्ध है जिसमें विपुल शास्त्रसग्रह है।

इलाहाबाद (फफोसाजी)

कानपुर से इलाहाबाद जाना चाहिए। इलाहाबाद (प्रयाग) गगा-यमुना-सरस्वती के सगम पर बसा है। यह भारत का अति पवित्र तीर्थ माना जाता है। हिंदू इसे तीर्थराज कहते है। यह शिक्षा और सस्कृति का प्रमुख केंद्र है। संगम के निकट ही इलाहाबाद का प्रसिद्ध किला है। किले के अदर एक वटवृक्ष है। यह अक्षयवट कहलाता है। कहते है कि तीर्थकर ऋषभदेव ने इसी वटवृक्ष के नीचे तप किया था। यही उन्हे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। इसीलिए इसे अक्षयवट कहते है। इस नगर में चार शिखरबद मदिर है जिनमें प्राचीन प्रतिमाए है। मदिरों की बनावट मनोहर है। चाहचद मुहल्ले मे जैन धर्मशाला है। यहां किला, विश्वविद्यालय, सगम, आनदभवन, हिंदी साहित्य सम्मेलन भवन, उच्च न्यायालय आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

यहा बारहो महीने यात्री आते रहते है। हर बारहवे वर्ष 'कुभ' और छठे वर्ष 'अर्धकुभ' पड़ता है। उस समय यहां बड़ा

भारी मेला लगता है। लाखों की संख्या में स्नानार्थी आते हैं।

कौशांबी

इलाहाबाद से कौशांबी ६० कि० मी० दूर दक्षिण-पश्चिम दिशा में यमुनातट पर स्थित है। कौशांबी पहुंचने के दो मार्ग हैं: (१) सड़क द्वारा (२) यमुना नदी द्वारा।

इलाहाबाद से सराय अंकिल तक ४२ कि० मी० पक्की सड़क है। वहां से कौशांबी रेस्ट हाउस तक १८ कि०मी० कच्ची सड़क है। रेस्ट हाउस से क्षेत्र तक ४ कि० मी० तक कच्चा मार्ग है। दूसरे रास्ते से इलाहाबाद से ३२ कि० मी० भरवारी रेलवे स्टेशन है। वहां से क्षेत्र ३२ कि० मी० दक्षिण की ओर है। प्राचीन वैभवसंपन्न कौशांबी की जगह दो छोटे गांव है—गढ़वा कौसम इनाम और कौसम खिराज। ये यमुनातट पर हैं। कौसम इनाम से क्षेत्र १ कि० मी० है।

छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु के गर्भ-जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक यहीं पर हुए थे। दूसरी महत्वपूर्ण घटना यहां तब घटी जब भगवान महावीर केवलज्ञान प्राप्ति से पहले यहां पधारे थे। यहीं पर पारणा के लिए निकलने पर चंदन (चंदनबाला), जो सेठ वृषभसेन की पत्नी द्वारा बंधन में डाल दी गई थी, ने उनके दर्शन किए और उसके बंधन खुल गए। आगे चलकर भगवान महावीर के समवसरण में ३६००० आर्यिकाओं के संघ की प्रमुख यही चंदनबाला हुई।

भगवान महावीर कौशांबी कई बार पधारे थे। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा खुदाई कराने पर यहां बड़ी संख्या में जैन

मूर्तियां प्राप्त हुईं। वे सब प्रयाग संग्रहालय में रखी हुई हैं। खुदाई में एक विहार भी निकला जो मखली गोशालक का विहार कहलाता है।

यह जैन धर्म का बहुत बड़ा केंद्र रहा है। किंतु अब यहां कोई प्राचीन जैन मंदिर नहीं है। ला० प्रभुदास (आरावाले) का बनवाया हुआ दिगंबर जैन मंदिर और जैन धर्मशाला है।

भगवान पद्मप्रभु निर्वाणोत्सव (फाल्गुन कृष्णा ४) पर यहां हर साल मेला होता है।

पभोसा

यह कल्याणक क्षेत्र है। छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु के दीक्षा और ज्ञान कल्याणक का स्थान है।

कौशांबी से पभोसा के लिए कच्चा मार्ग है जिस पर इक्के चलते हैं। पाली होते हुए एक पैदल मार्ग भी है जो ८ कि० मी० लंबा है। कौशांबी से यमुना के रास्ते नावों द्वारा जाना सबसे सुविधाजनक रहता है। इस मार्ग से पभोसा १० कि० मी० पड़ता है।

पभोसा कौशांबी का ही भाग माना जाता है। यहां एक दिगंबर धर्मशाला है। उसी के एक कमरे में मंदिर है। कुछ प्राचीन मूर्तियां भी जो खेतों से मिली थीं, यहां विराजमान हैं। मूलनायक प्रतिमा अतिशययुक्त है। यह दिन के बढ़ने-घटने के साथ रंग बदलती दिखाई देती है। एक चमत्कार यह भी बताया जाता है कि यहां केशर बरसती है, विशेष रूप से कार्तिक सुदी १३ और चैत्र सुदी १५ को।

यह क्षेत्र दीर्घ काल तक जैनों का एक प्रमुख केंद्र रहा है। यहां का राजा उदयन बड़ा प्रसिद्ध था। उसके समय में यहां पर जैन धर्म बहुत उन्नति पर था। यहां आसपास में जैन पुरातत्व संबंधी सामग्री और मूर्तियां बहुतायत से मिली हैं।

पभोसा बहुत छोटा गांव है। समीपस्थ शहजादपुर, दारानगर, पाली आदि स्थानों में जैन मंदिर हैं।

लखनऊ

इलाहाबाद से लखनऊ जाना चाहिए। लखनऊ उत्तर प्रदेश की राजधानी और प्रमुख सांस्कृतिक नगर है। इसका प्राचीन नाम लक्ष्मणपुर है। यहां ६ जैन मंदिर हैं। जैनों की आबादी भी यहां काफी है। यहां अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें राज्य संग्रहालय प्रमुख है। इस संग्रहालय में कई सौ दिगंबर जैन मूर्तियां हैं। जैन मूर्तियों का ऐसा भव्य संग्रह अन्यत्र शायद ही हो।

चारबाग रेलवे स्टेशन के पास ही मुन्नेलाल कागजी की धर्मशाला है। इस धर्मशाला में जैन मदिर भी है। इसके अतिरिक्त चौक, डालीगंज और यहियागंज के मंदिर भी दर्शनीय हैं। मदिरों के अतिरिक्त छोटा और बड़ा इमामबाड़ा तथा चिड़ियाघर आदि भी दर्शनीय स्थल हैं। यहां विधान सभा भवन भी अत्यंत भव्य है।

अयोध्या

अयोध्या फैजाबाद से ५ कि० मी० है। यह दिल्ली-लखनऊ-मुगलसराय रेलवे लाइन पर उत्तर रेलवे का स्टेशन है। सड़क

मार्ग से लखनऊ से १३६ कि० मी० और इलाहाबाद से १६० कि० मी० है। मुगलसराय को वाराणसी और लखनऊ से सीधी गाड़ियां आती हैं। गोरखपुर की ओर से आने वालों को मनकापुर स्टेशन पर रेल बदलनी पड़ती है और कटरा स्टेशन पर उतरना होता है। यह सरयू नदी के तट पर बसा है।

जैन मान्यता के अनुसार अयोध्या शाश्वत नगरी है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के गर्भ और जन्म कल्याणक यहीं हुए। चार तीर्थंकरों—दूसरे भगवान अजितनाथ, चौथे भगवान अभिनंदननाथ, पांचवें भगवान सुमतिनाथ और चौदहवें भगवान अनंतनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक यहीं पर हुए। इस प्रकार १८ कल्याणक संपन्न होने का सौभाग्य इस नगरी को प्राप्त है।

इसी नगरी में भगवान ऋषभदेव ने छः कर्मों (असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य) का ज्ञान समाज को दिया। अपनी पुत्री ब्राह्मी और सुंदरी के माध्यम से लिपि और अंक विद्या का आविष्कार किया। पुत्रों को बहत्तर कलाओं का शिक्षण दिया, सामाजिक व्यवस्था की स्थापना की, राजनीतिक सुव्यवस्था की दृष्टि से पुर, ग्राम, खेट, नगर आदि की व्यवस्था की। समूचे राष्ट्र को उन्होंने ५२ जनपदों में बांटा था।

भगवान के ज्येष्ठ पुत्र भरत ने यहीं से संपूर्ण भरत-खंड पर विजय प्राप्त कर प्रथम चक्रवर्ती सम्राट होने का गौरव प्राप्त किया।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र के कारण अयोध्या को विशेष गौरव मिला। श्रीराम ने संसार में लोकमान्य मर्यादाओं

की रक्षा, पितृभक्ति, बंधुत्व, जन सामान्य के महत्व आदि के आदर्श उपस्थित किए। इन आदर्शों से भारतीय संस्कृति और गरिमा आप्लावित है। आज भी रामराज्य एक आदर्श के रूप में स्मरण किया जाता है। सतीत्व रक्षा में भगवती सीता द्वारा प्रस्तुत आदर्श, आत्मविश्वास और साहस स्तुत्य है। महा सती सीता का निश्कलंक चरित्र लोक-लोकांतरों को गरिमा प्रदान करता है।

अयोध्या से अनेकानेक महत्वपूर्ण घटनाओं का संबंध है लोकमानस पर उनकी गहरी छाप है।

यहां दो दिगंबर जैन मंदिर और पांच टोंक (कटरा, सरयूतट, कटरा स्कूल, बेगमपुरी, वम्सरिया) हैं। कटरा मोहल्ले में (स्टेशन से ३ कि० मी०) प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर है जिसके निकट जैन धर्मशाला है।

रायगंज मुहल्ले में (स्टेशन से डेढ़ कि० मी०) एक नया विशाल मदिर है। मंदिर में लगभग ९ मीटर अवगाहना वाली भगवान ऋषभदेव की कायोत्सर्ग प्रतिमा विराजमान है!

हिंदू, जैन, बौद्ध, सिख, मुसलमान सभी अयोध्या को अपना तीर्थस्थल मानते हैं। चैत्र कृष्णा ७ से ९ तक यहां मेला लगता है। इस पुण्य तीर्थ के दर्शन से मनुष्य में कर्मवीरता का संचार और त्यागवीरता का उदय होता है।

रतनपुरी

रतनपुरी (रौनाही ग्राम) वह पवित्र स्थान है जहां १५वें तीर्थंकर भगवान धर्मनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा और ज्ञान

कल्याणक हुए थे। यहीं पर उन्होंने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था। यह स्थान फैजाबाद-बाराबंकी सड़क मार्ग पर अयोध्या से २६ कि० मी० है। यहां एक छोटी सी धर्मशाला भी है।

त्रिलोकपुर

अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर बाराबंकी जिले में (छोटी लाइन: उ० पू० रे०) के बिंदौरा रेलवे स्टेशन से ५ कि० मी० है। सड़क मार्ग द्वारा यह अयोध्या से १६७ (रतनपुरी से १४३) कि० मी० है। बाराबंकी से १६ कि० मी० बिंदौरा नहर पहुंचकर बाईं ओर के कच्चे रास्ते से लगभग ६ कि० मी० पैदल चलना पड़ता है।

यहां दो जैन मंदिर हैं। भगवान नेमिनाथ का मंदिर अतिशय क्षेत्र कहा जाता है। इसमें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ की श्यामवर्ण पाषाण की ५५ से०मी० की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमा अति मनोज्ञ है। इसके चमत्कारों और अतिशयों की नाना किंवदंतियां प्रचलित हैं। सुबह से शाम तक मूर्ति का भावपरिवर्तन होता दिखाई देता है। मंदिर के बाहर धर्मशाला भी है। दूसरा मंदिर भगवान पार्श्वनाथ का है। यहां प्रति वर्ष कार्तिक शुक्ला ६ को मेला होता है।

वाराणसी (काशी)

वाराणसी (प्राचीन काशी) जैन धर्म का प्राचीन केंद्र है। यहां दो तीर्थंकरों—भगवान सुपार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ—के गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान कल्याणक हुए। भेलूपुरा में सातवें

तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ का तथा भदैनी घाट में तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था। भेलूपुरा में दिगंबर और श्वेतांबरों का एक सम्मिलित मंदिर एवं धर्मशाला है। इस मंदिर में एक ही वेदी पर दिगंबर प्रतिमाएं भी हैं और श्वेतांबर प्रतिमाएं भी। यहां दोनों समाजों के कार्यालय हैं। धर्मशाला में दोनों समाज के यात्री ठहरते हैं। यहां दो दिगंबर जैन मंदिर भी हैं। इनके अतिरिक्त बूलानाले पर एक पंचायती मंदिर और अन्यत्र तीन चैत्यालय हैं। जौहरीजी के चैत्यालय में हीरे की एक प्रतिमा अति मनोज्ञ है। मैंदाग्नि में विशाल दिगंबर जैन धर्मशाला है जिसमें बीचोबीच में मंदिर है।

मदैनीघाट (गंगताट) पर श्री स्यादाद महाविद्यालय दिगंबर जैनों का एक प्रमुख शिक्षा केंद्र है। यहां संस्कृत और जैन सिद्धांतों की उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती है। हिंदू विश्वविद्यालय के समीपस्थ 'सन्मति निकेतन' नामक स्थान है जहां एक जैन मंदिर और छात्रावास है।

जैन परंपरा के अनुसार स्वामी समंतभद्र ने काशी में ही अपना रोग शांत किया और धर्म प्रभावना की थी। यहीं पर कविवर वृंदावनजी ने साहित्य साधना और काव्य रचना की थी। यहीं पर उनके पिता ने धर्मद्रोहियों का मानमर्दन कर जिन-चैत्यालय बनवाया था। इससे धर्म की विशेष प्रभावना हुई थी। भावुक यात्रियों को यह धर्म प्रभावना के सतत उद्योग की सीख देती है।

स्थानीय भारत कला भवन में पुरातत्व संबंधी बहुमूल्य सामग्री संग्रहीत है। यह सामग्री विभिन्न युगों से संबंधित है।

कला भवन में पाषाण और धातु की अनेक मूर्तियां भी हैं।

हिंदू मान्यता के अनुसार वाराणसी सप्त महापुरियों में है। यह भगवान शिव की नगरी कहलाती है। यहां अनेक शिव मंदिर हैं। काशी का संबंध सत्यवादी महाराजा हरिश्चंद्र, संत कबीर और गोस्वामी तुलसीदास से भी रहा है। काशी में प्राचीन विद्या के पठन-पाठन की परंपरा अभी भी चली आती है।

यहां गंगा के तट पर महामना मालवीयजी के प्रयासों से स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय दर्शनीय है।

सिंहपुरी (सारनाथ)

सिंहपुरी (सारनाथ) वह स्थान है जहां बारहवें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ के गर्भ-जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक हुए। यह वाराणसी से सड़क द्वारा ६ कि० मी० है। यहां आने के लिए बसें, टैक्सी आदि हर समय मिलती हैं। यहां रेलवे स्टेशन भी है। स्टेशन से लगभग आधा कि० मी० की दूरी पर दिगंबर जैन मंदिर और धर्मशाला है।

जैन मंदिर के निकट ही एक विशाल स्तूप है। इसकी ऊंचाई लगभग ३३ मीटर है। यह स्तूप २२०० वर्ष पुराना बताया जाता है। इसका निर्माण 'सम्राट प्रियदर्शी' ने कराया था। स्तूप के सामने के सिंहद्वार के दोनों स्तंभों पर सिंहचतुष्क बना है। सिंहों के नीचे धर्मचक्र है जिसके दाईं ओर बैल और घोड़े की मूर्तियां अंकित हैं। इस स्तंभ की सिंहत्रयी को भारत सरकार ने राजचिह्न के रूप में स्वीकारा है, तथा धर्मचक्र को

राष्ट्रध्वज पर अंकित किया है। इस स्तूप के बारे में मतभेद हैं। कुछ लोग इसे जैन स्तूप मानते हैं क्योंकि बनवाने वाले का नाम 'देवनां प्रिय' ही दिया गया है। पुरातत्व विभाग ने इसको सम्राट अशोक द्वारा निर्मित माना है। 'देवनां प्रिय' और स्तूप निर्माण ईसा के कुछ समय पूर्व तक जैनों में बहुत प्रचलित था।

बौद्ध मान्यता के अनुसार यह तीर्थ बहुत महत्वपूर्ण है। यहां पर भगवान बुद्ध ने पंचवर्गीय शिष्यों को उपदेश देकर धर्मचक्र प्रवर्तन किया था। इसे सारनाथ के नाम से जाना जाता है।

यहां के संग्रहालय में बहुत सी जैन मूर्तियां हैं।

चंद्रपुरी

यह मेनलाइन पर कादीपुर स्टेशन से ५ कि० मी० दूर गंगातट पर है। सड़क मार्ग द्वारा यह वाराणसी से २० कि० मी० तथा सिंहपुरी से १७ कि० मी० है। यह मुख्य सड़क से २ कि० मी० हटकर है (सुविधा इसमें है कि वाराणसी से सड़क द्वारा यहां पहुंचा जाए। टैक्सी मंदिर तक जाती है)। चंद्रपुरी एक छोटा-सा गांव है। अब इसे चंद्रोही कहा जाता है। गांव में पुजारी रहता है। चौकीदार मंदिर पर ही रहता है।

चंद्रपुरी अत्यंत रमणीक स्थान है। यहां आठवें तीर्थंकर भगवान चंद्रप्रभ के गर्भ-जन्म, तप और केवलज्ञान कल्याणक हुए। यहां गंगातट पर दिगंबर जैन मंदिर है जिसके चारों तरफ धर्मशाला बनी हुई है।

काकंदी (खुखुंदू अथवा किष्किधापुर)

वर्तमान का खुखुंदू ही प्राचीन किष्किधापुर या काकंदी नगर है। यह देवरिया जिले का एक कस्बा है। नूनखार स्टेशन से ३ कि० मी० पड़ता है। पश्चिम से आने वाले यात्रियों को देवरिया और पूर्व से आने वाले यात्रियों को सलेमपुर उतरकर खुखुंदू पहुंचना चाहिए। दोनों ही स्थानों से यह समान दूरी (१४ कि० मी०) पर है।

यहां तीन टीले और अनेक प्राचीन तालाब हैं। प्राचीन मंदिरों एवं भवनों के भग्नावशेष यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं।

इस स्थान का संबंध मुख्यत: नवें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंत से है। यहीं उनके गर्भ एवं जन्म तथा इसी नगर के पुष्पकवन में दीक्षा कल्याणक हुए थे। भगवान महावीर का समवसरण भी यहां कई बार आया था। यह स्थान अभयघोष मुनि का निर्वाण स्थल है। यहीं से अनेक जैन मुनियों ने मुक्ति प्राप्त की।

अब तक की खुदाई में यहां से अनेक जैन मूर्तियां, यक्षमूर्ति, चैत्यवृक्ष, स्तूप अंश आदि प्राप्त हुए हैं।

कुकुभ ग्राम

यह स्थान आजकल 'कहाऊं' गांव के नाम से जाना जाता है। यह काकंरी से १६ कि० मी० है। रास्ता कच्चा है। जीप-बस आदि यहां पहुंच सकती हैं। गोरखपुर से इसकी दूरी लगभग ६७ कि० मी० है।

यहां भगवान पुष्पदंत के तप और केवलज्ञान कल्याणक हुए थे। गुप्तकाल में यहां अनेक जिनमंदिर बने। अब वे मात्र खंडहर रह गए हैं। उनमें से एक में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अब भी विराजमान है। गांव में उत्तर की ओर एक दर्शनीय मानस्तंभ है। इसकी ऊंचाई लगभग ८ मीटर है। इसका निर्माण वर्ष सन ४६० ई० में बताया जाता है। स्तंभ के निचले भाग में भगवान पार्श्वनाथ की तथा शीर्ष पर पांच अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएं अंकित हैं। कहते हैं इस स्तूप का निर्माण सम्राट स्कंदगुप्त के समय में मद्र नामक ब्राह्मण ने कराया था।

श्रावस्ती (सहेठ-महेठ)

श्रावस्ती बलरामपुर-बहराइच रोड पर स्थित है। यह अयोध्या से गोंडा, बलरामपुर होते हुए १०६ कि० मी० है। गोंडा (अयोध्या से ५० कि० मी०) से ५६ कि० मी० और बहराइच (गोंडा से ४२ कि० मी०) १७ कि० मी० है। यह प्राचीन नगर है किंतु अब तो गोंडा और बहराइच जिलों की सीमा पर खंडहरों के रूप में है। रेल या बस-टैक्सी आदि से श्रावस्ती पहुंचा जा सकता है।

बलरामपुर-बहराइच मार्ग पर बसें खूब मिलती हैं। बलरामपुर से टैक्सी, जीप आदि भी मिलती हैं। बलरामपुर में एक जैन धर्मशाला भी बनी हुई है।

यह तीसरे तीर्थंकर भगवान संभवनाथ के गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान का कल्याणक क्षेत्र है। भगवान का प्रथम समवसरण यहीं लगा था। भगवान महावीर का समवसरण भी

यहां कई बार आया था। श्वेतांबर आगमों के अनुसार भगवान महावीर के कई चतुर्मास यहां पर हुए। पार्श्व परंपरा के मुनि केशी और भगवान महावीर के मुख्य गणधर भगवान गौतम स्वामी की भेंट और शंका निवारण भी यहां पर हुए।

प्राचीन काल में यह एक समृद्ध व्यापार केंद्र और संपन्न नगर था। यहां पर बड़ी संख्या में मंदिर, स्तूप और विहार बने थे। यहां से खुदाई में निकली सामग्री (मूर्तियां, सिक्के, ताम्रपत्र, अभिलेख) प्राय: कलकत्ता और लखनऊ के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

श्रावस्ती आजकल सहेठ-महेठ कहलाता है। संभवत: यह मुनि मृगध्वज और मुनि नागदत्त की मुक्तिथली है। यहीं पर जैन राजा सुदृढ़ध्वज ने सैयद सालार यसऊद गाजी को हराया था।

अलाउद्दीन खिलजी ने यहां के मंदिरों, विहारों, स्तूपों, मूर्तियों को ध्वस्त किया था। भगवान संभवनाथ का मंदिर अब एक खंडहर के रूप में ही है। आजकल यह सोमनाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है। सहेठ वह स्थान है जहां पर जेतवन था। उस स्थान पर बौद्ध विहार था। महेठ प्राचीन श्रावस्ती था। इसके पश्चिमी भाग में जैन अवशेष प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं। पुरातत्व वेत्ताओं के अनुसार यहां बहुत से जैन मंदिर थे।

श्रावस्ती बौद्धों का भी तीर्थस्थल है। यहां विदेशी यात्री भी काफी बड़ी संख्या में आते है। तीन नवीन बौद्ध मंदिर बन चुके हैं। यहां वैशाखी पूर्णिमा को बौद्धों का मेला लगता है।

क्षेत्र पर (बहराइच जाने वाली सड़क पर) नवीन जैन मंदिर निर्मित हुआ है जिसके सामने धर्मशाला भी है।

पावा (नवीन)

कुछ लोग सठियांव या फाजिल नगर को पावा (भगवान महावीर की निर्वाण भूमि) मानते हैं। यह टीलों पर बसा हुआ है। इसके चारों ओर खंडहर दिखाई पड़ते हैं।

राजमार्ग नं० २८ पर देवरिया से ५६ कि० मी०, गोरखपुर से ६७ कि० मी० और पडरौना से ४० कि० मी० पर साठियांव गांव या फाजिल नगर स्थित है।

इस मान्यता के पक्ष में एक विशाल सरोवर का होना, आठ-दस पोखरों का होना, शाल वृक्ष का होना (जो गंगा के दक्षिण में नहीं है), भगवान बुद्ध के उस समय के स्थान से सामीप्य, मल्लगणतंत्र के इलाके में होना आदि प्रमाण दिए जाते हैं। जो भी है, यह एक विवादास्पद क्षेत्र है।

यहां फाजिल नगर बस अड्डे से कुछ ही दूर जैन धर्मशाला है। बड़ा जैन मंदिर निर्माणाधीन है। स्व० बाबा राघवदास की प्रेरणा से यहां 'पावा नगर महावीर इंटर कालेज' की स्थापना पहले ही हो चुकी थी। महावीर भगवान के २५०० वें निर्वाणोत्सव के उपलक्ष में 'श्री भगवान महावीर महाविद्यालय' भी स्थापित हो गया है।

देवगढ़

देवगढ़ पहुंचने के लिए पावा से कानपुर होकर ललितपुर

पहुंचना चाहिए। ललितपुर मध्य रेलवे की दिल्ली-बंबई लाइन का रेलवे स्टेशन है। यहां से देवगढ़ बस द्वारा ३२ कि० मी० है। देवगढ़ दिल्ली से ५०४ कि० मी०, आगरा से ३०५ कि०मी० झांसी से ६० कि० मी० कानपुर से झांसी होते हुए ३१० कि० मी० है। जाखलौन स्टेशन से देवगढ़ का फासला केवल १३ कि० मी० है। सड़क पक्की है, मगर पहाड़ी घाटियों से होकर जाती है। बेतवा नदी के तट पर स्थित देवगढ़ एक छोटा-सा ग्राम है। क्षेत्र पहाड़ी पर स्थित है।

नदी किनारे दिगंबर जैन धर्मशाला, दिगंबर जैन मंदिर और साहू जैन संग्रहालय है। पास ही गुप्तकाल का एक मंदिर है जो दशावतार मंदिर कहलाता है। वन विभाग का विश्राम-गृह भी समीप ही है। यहां राज्य संग्रहालय भी है।

धर्मशाला से क्षेत्र तक (जो पहाड़ी पर है) लगभग १ कि० मी० चलना पड़ता है। पहाड़ के पास ही एक बावड़ी है जिसमें यात्रीगण सामग्री धो लेते हैं।

पहाड़ी पर प्राचीन दुर्ग की दीवार है। इसका पश्चिमी द्वार कुंज द्वार और पूर्वी द्वार हाथी दरवाजा कहलाता है। इस दीवार के बाद दूसरी दीवार आती है। इसे दूसरा गेट कहते हैं। जैन मंदिर इस परकोटे के भीतर है। यहां ४० प्राचीन जैन मंदिर और २६ मानस्तंभ हैं। यहां लगभग ५०० अभिलेख भी सुरक्षित हैं। कहा जाता है इन जैन मंदिरों को श्री पाड़ाशाह और उनके दो भ्राताओं (देवपत-खेवपत) ने बनवाया था। किंतु कुछ मंदिर तो पाड़ाशाह काल से भी पूर्व के हैं। यहां श्री शांतिनाथ की विशालकाय दर्शनीय प्रतिमा विराजमान है।

मंदिरों, मूर्तियों, मानस्तंभों का कला सौष्ठव देखते ही बनता है। वास्तुकला की विभिन्न शैलियां देखने को मिलती हैं। यहां पच परमेष्ठी, शासन देवताओं, देवियों तीर्थंकर माता आदि की मूर्तियां तो ऐसी हैं कि अन्यत्र देखने को नहीं मिलतीं। यहां एक प्राचीन गुफा भी है जिसे 'सिद्ध गुफा' कहते हैं। देवगढ़ में कला और पुरातत्व की अनुपम संपदा है।

यह अतिशय क्षेत्र है। कहा जाता है कि कभी कभी देव अब भी यहां पूजन हेतु आते हैं। ऐसी भी मान्यता है कि भगवान शांतिनाथ की मूर्ति के दर्शन से मनोकामना पूर्ण होती है। देवगढ़ को उत्तर भारत का जैनबद्री कहा जाता है।

ललितपुर (क्षेत्रपाल)

देवगढ़ से ललितपुर ३० कि० मी० है। यह एक समृद्ध नगर है और यहां जैनों की आबादो भी खासी है। यहां लगभग एक हजार दिगंबर जैन परिवार हैं।

ललितपुर को जैन तीर्थों का जंकशन कहा जाता है। यह चारों ओर से उत्कृष्ट जैन कला तीर्थों से घिरा हुआ है, यथा—देवगढ़, सैरोन, चदेरी, थुबौनजी, पपौरा, अहारानी आदि।

यहां चार शिखरबंद जिनालय और तीन चैत्यालय हैं। रेलवे स्टेशन से नगर को आते हुए कुछ ही दूर पर क्षेत्रपाल स्थित है। यहां एक कोट के अंदर पांच अत्यत रमणीक मदिर बने हुए हैं। उनमें भगवान अभिनंदन नाथ की प्रतिमा बड़ी मनोज्ञ है। इन मदिरों में से एक मंदिर भूगर्भ (भोंयरे) में है। वहां १२ प्रतिमाएं तीर्थंकरों की तथा ३५ देवी-देवताओं की हैं।

क्षेत्रपाल में धर्मशाला भी है। क्षेत्रपाल के अतिशय बहुत प्रसिद्ध हैं।

दुधई

ललितपुर से जाखलौन होते हुए ५० कि० मी० (देवगढ़ से ३० कि० मी०) दुधई है। यहां मंदिरों के खंडहर और बहुत सी मूर्तियां (जिनमें से कुछ ही अच्छी दशा में है) हैं।

चांदपुर-जहाजपुर

ललितपुर से बीना जाते हुए धौरा स्टेशन है। यहां से एक कि० मी० जंगल में रेलवे लाइन के दोनों ओर बहुत सी मूर्तियां पड़ी हुई है। कोट के भीतर तीन मंदिर है जिनमें साढ़े पांच मीटर और चार मीटर की भी मूर्तियां हैं। रेलवे लाइन से पूर्वी भाग चांदपुर है और पश्चिमी भाग जहाजपुर।

सेरोन

ललितपुर से २१ कि० मी० सेरोन है। जंगल में परकोटे के भीतर ६ मंदिर हैं। लगभग १५० मूर्तियां हैं। पास में मंदिरों और मूर्तियों के भग्नावशेष पड़े हैं।

बानपुर

ललितपुर से महरौनी होते हुए ५३ कि० मी० पर बानपुर है। कोट के भीतर ५ मंदिर हैं जिनमें एक सहस्रकूट चैत्यालय है। यह लगभग एक हजार वर्ष पुराना है।

सीरौन

ललितपुर से मंडावरा होकर ७४ कि० मी० सीरौन है। यहां एक मंदिर है जो भग्नावस्था में है। जंगल में तथा गांव के मकानों में बहुत सी मूर्तियां हैं।

मदनपुर

मंडावरा से १७ कि० मी० दक्षिण में है। ललितपुर से महारौनी होकर ८३ कि० मी० और बरौदियां कला होकर ७५ कि० मी० है। पहाड़ी पर तीन मंदिर हैं। बड़े मंदिर में एक मूर्ति साढ़े तीन मीटर और दो ढाई ढाई मीटर की हैं। १६ छोटी मूर्तिया हैं। इस स्थान को पचमढ़ी कहते हैं। उत्तर पश्चिम में जो स्थान चपोमढ़ो कहलाता है वहां कई मंदिर हैं। इनमें केवल एक अच्छी हालत में है। यह मोदीमठ कहलाता है। शेष भग्नावस्था में हैं और खंडित मूर्तियां और अवशेष पहाड़ी पर जगह जगह बिखरे पड़े हैं। पास ही जंगल में वीरान पुरपट्टन है जहां एक जौहर कुंड है और आल्हा-ऊदल की बैठक है। अब एक धर्मशाला भी बन गई है।

बालाबेहट

ललितपुर से सागर वाली सड़क पर लगभग २५ कि० मी० जाकर १३ कि० मी० कच्चा मार्ग है। ललितपुर से बस मिलती है पर बरसात में बंद रहती है। दूसरा रास्ता अमझरा घाटी होकर है। अमझरा घाटी से ५ कि० मी० पक्का है, फिर १४ कि० मी० कच्चा मार्ग है। यह मार्ग अपेक्षाकृत अच्छा है।

यह अतिशय क्षेत्र है। मुख्य प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। यहां पर एक ही मंदिर है। एक और मंदिर जीर्णावस्था में है। ५१ प्रतिमाएं हैं। दो धर्मशालाएं हैं जिनमें एक जीर्ण है।

पवाजी (पावागिरि)

यह झांसी से ४१ कि० मी० और ललितपुर से ४८ कि० मी० है। रेलमार्ग से बसई स्टेशन या तालबेहट उतर कर १४ कि० मी० पड़ता है। यहां पर १३वीं-१४वीं शताब्दी की मनोज्ञ मूर्तियां और तीन नवीन जिनालय हैं। लगभग १० मीटर ऊंचा मानस्तंभ है। बाहुबली स्वामी की एक मूर्ति भी विराजमान की गई है। यहां एक धर्मशाला भी है।

इस क्षेत्र की मान्यता अतिशय क्षेत्र के रूप में रही है। कुछ समय से कुछ विद्वानों का मत है कि स्वर्णभद्र आदि मुनि जिस पावागिरि से मोक्ष गए थे वह स्थान यही है।

करगुवां

यह झांसी से ५ कि० मी० दूर लखनऊ वाली सड़क पर है। यह यह अतिशय क्षेत्र माना जाता है। यहां क्षेत्र के सामने मेडीकल कालेज है। क्षेत्र एक प्राचीन परकोटे में है। मंदिर भूगर्भ (भोंयरे) में है, जिसमें बड़ी बड़ी प्रतिमाएं हैं। यहां मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है।

धर्मशाला है पर सुविधा इसमें है कि झांसी में ठहरें और रिक्शे आदि द्वारा क्षेत्र का दर्शन करें। भगवान महावीर के जन्म दिवस पर और निर्वाण दिवस पर यहां मेला लगता है।

बिहार, बंगाल, उड़ीसा

बिहार राज्य को श्रमण संस्कृति का अति प्रमुख केंद्र समझना चाहिए। यहा चौबीस तीर्थंकरों मे से बाईस तीर्थकरो ने निर्वाण प्राप्त किया, छ. तीर्थंकरो के गर्भ, जन्म, ज्ञान और निर्वाण कल्याणक हुए।

अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म का श्रेय भी इसी प्रदेश को प्राप्त है। निष्कर्षतः इस प्रदेश मे तीर्थंकरों के कुल छियालीस कल्याणक मनाए गए। इन कल्याणकों से संबंधित १० तीर्थ क्षेत्र है : भद्रिकापुरी, कुलुहा, मिथिलापुरी, चंपापुरी, मदारगिरि, राजगृही, वैशाली-कुंडग्राम, जृम्भकग्राम, पावापुरी और सम्मेदशिखर।

उड़ीसा और बंगाल प्राचीन काल में जैन धर्म के प्रमुख केंद्र रहे है। यहा तीर्थंकरों का विहार निरंतर हुआ। फलस्वरूप इन दोनों प्रदेशो में जैन धर्म का व्यापक प्रचार हुआ। उदयगिरि-खंडगिरि की गुफाओं मे अनेक जैन मुनि तपस्या करते थे। कलिंग मे जैन धर्म राष्ट्रधर्म ही बन गया था। कलिंगजिन की प्रतिमा उनके राष्ट्र देवता की प्रतिमा थी।

वैशाली

यह स्थान मुजफ्फरपुर जिले में मुजफ्फरपुर से ३५ कि० मी० पक्की सड़क पर है।

जैन वाङ्मय में भगवान महावीर का जन्म स्थान विदेह में स्थित कुंडग्राम बताया जाता है। कुछ समय तक नालंदा का प्राचीन भाग कुंडलपुर वह स्थान माना जाता था किंतु श्वेतांबर मान्यता से लिच्छुआड़ और क्षत्रिय कुंड को यह सम्मान प्राप्त था। इतिहासज्ञों के मत से कुंडग्राम वैशाली नगर का उपनगर था। अब भगवान महावीर के जन्म स्थान का गौरव वैशाली को दिया जाता है।

वर्तमान में इस स्थान पर बसाड़ नामक गांव है। किसी समय वैशाली अत्यंत समृद्ध नगरी थी। बौद्ध ग्रथ 'विनय पटिक' के अनुसार इस नगरी में ७७७७ प्रासाद, इतने ही कूटागार, इतने ही आराम और इतनी ही पुष्करणियां थीं। तिब्बत से प्राप्त कुछ ग्रंथों के अनुसार यहां सोने के कलश वाले ७०००, चांदी के कलश वाले १४००० और तांबे के कलश वाले २१००० महल थे।

वैशाली में भगवान महावीर के प्रति अगाध धार्मिक श्रद्धा।

थी। वहां पर महात्मा गौतम बुद्ध भी कई बार गए थे। उनके प्रति भी वहां पूर्ण सम्मान प्रकट किया गया। महात्मा बुद्ध ने वैशाली का अनेक स्थलों पर बड़े प्रशंसात्मक रूप में उल्लेख किया है।

उदारचेता मनस्वी विद्वानों ने वैशाली के पुनरुद्धार की ओर ध्यान दिया। ३१ मार्च, १९४५ को वैशाली संघ नामक संगठन की स्थापना हुई। इसके सक्रिय कार्यकर्ताओं में तत्कालीन शिक्षा सचिव (बिहार सरकार) श्री जगदीशचंद्र माथुर, डा० योगेंद्र मिश्र, श्री जगन्नाथ प्रसाद साहू आदि थे। जनता के सहयोग से तीर्थंकर महावीर हाईस्कूल की स्थापना हुई। २१ अप्रैल, १९४८ को यहां पर संघ के प्रयत्न से महावीर जयंती मनाई गई। इस समारोह में हजारों जथरिया भुमिहार सम्मिलित हुए। तब जैन समाज का ध्यान इस स्थान की ओर गया। हर वर्ष यहां पर महावीर जयंती बिहार सरकार और संघ की ओर से मनाई जाती है।

१९५५ में वैशाली संघ ने 'वैशाली रिसर्च इंस्टीट्यूट आफ प्राकृत्त, जैनोलाजी ऐंड अहिंसा' की स्थापना की। इसके भवन में पुस्तकालय अध्ययन कक्ष, अध्यापन कक्ष, अनुसंधाता निवास, प्राध्यापक निवास आदि की व्यवस्था है। विदेश के छात्रों के लिए भी सुविधाएं प्राप्त हैं। इस संस्थान की स्थापना में स्व० साहू शांति प्रसाद जैन का भारी योगदान रहा।

सन १९५१ में जैनों ने वैशाली-कुंडपुर तीर्थ प्रबंधक कमेटी की स्थापना की। यह समिति दिगंबर जैन समाज की ओर से तीर्थ संबंधी व्यवस्था करती है। इसने जैन विहार नाम

से धर्मशाला बनवाई है। पास ही पर्यटन विभाग का टूरिस्ट सेंटर और रेस्ट हाउस भी है। जैन विहार से वैशाली शोध संस्थान लगभग पांच कि० मी० दूर है।

जैन विहार से लगभग ५ कि० मी० की दूरी पर भगवान महावीर की जन्मस्थली है। स्थानीय जनता की परंपरागत आस्थानुसार यह भगवान महावीर का जन्म स्थान है। यह पवित्र स्थल है। यह सदा से पूज्य रहा है। यह कोई दो बीघे का एक क्षेत्र है। इस पर कभी हल नहीं चलाया गया। इसके पास के खेतों में खेती होती है। यहां के निवासी श्रद्धापूर्वक इस स्थान की सुरक्षा किए हुए हैं। कुछ दिन पूर्व उन्होंने भगवान महावीर का स्मारक बनाने के लिए यह भूमि बिहार सरकार को दान कर दी है। स्थानीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने इस जगह की हदबंदी कर दी है। एक चौकोर कुंड बनाया गया है और उसमें पक्का कमल पुष्प बनवाकर शिलापट्ट लगाया है। इस शिलापट्ट का अनावरण सन १९५६ में (भगवान महावीर के जन्म से २५५५ वर्ष बाद) तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने किया था।

इस स्थान से शोध संस्थान लगभग आधा कि० मी० है। यहां भगवान महावीर स्मारक बनाने की योजना है। इसका आधा व्यय बिहार सरकार और आधा दिगंबर जैन समाज की ओर से वहन किया जाता है। स्मारक पर ६ लाख रुपए व्यय होने का अनुमान है।

शोध संस्थान से ३ कि० मी० पर अशोक स्तंभ है। इस स्तंभ से ४-५ कि० मी० पर राजकीय संग्रहालय तथा पी०

डब्ल्यू०डी० का रेस्ट हाउस है। संग्रहालय के पास का सरोवर प्राचीन काल में 'मंगल पुष्करिणी' अथवा 'अभिषेक पुष्करिणी' कहलाता था। संग्रहालय से डेढ़ कि० मी० पर 'वामन पोखर' है जहां पर जैन मंदिर है। इस स्थान के चारों ओर अक्सर पानी ही रहता है। प्राय: पानी में से जाना पड़ता है। बरसात में यह रास्ता बंद रहता है। यहां से जैन विहार तक की दूरी डेढ़ कि० मी० है।

आरा

वैशाली से पटना होते हुए आरा पहुंचा जाए। आरा बिहार प्रदेश का एक प्रमुख नगर है। यह स्थान अपने प्राचीन मनोज्ञ मंदिरों के लिए सुप्रसिद्ध है। यहां १४ शिखरबंद मंदिर और १३ चैत्यालय हैं। एक शिखरबंद मंदिर नगर से लगभग ११ कि० मी० दूर है। दो शिखरबंद मंदिर धनुपुरा में हैं। यह स्थान नगर से लगभग ३ कि० मी० है। यहीं पर धर्मकुंज में श्रीमती पंडिता चंदाबाई द्वारा स्थापित 'जैन महिलाश्रम' है। यहां पर दूर दूर से आकर महिलाएं शिक्षा ग्रहण करती हैं। यहीं एक कृत्रिम पहाड़ी पर भगवान बाहुबली की लगभग ३ मीटर ऊंची भव्य खड्गासन प्रतिमा है। यहीं पर दिगंबर जैन मुनिसंघ पर अग्नि उपसर्ग हुआ था। आग की प्रचंड लपटों से भस्मीभूत होते हुए मुनिवृंद शांत एवं वीर भाव से उस दारुण कष्ट को सहन करते रहे। जैन धर्म की यह वीरतापूर्ण सहनशीलता अभिनंदनीय है। यह वीरभाव न केवल पुरुषों में अपितु महिलाओं के आत्मबल का द्योतक है। आरा जैन धर्म के इसी वीरभाव का

स्मरण दिलाता है। यहां चौक में स्व० बाबू देवकुमार द्वारा संस्थापित 'श्री जैन सिद्धांतभवन' है जिसमें अद्वितीय ग्रंथों का दुर्लभ संग्रह है।

पटना

आरा से पटना (गुलजार बाग) पहुंचना चाहिए। पटना का इतिहास लगभग ढाई हजार वर्ष पुराना है। मौर्य काल का पाटलिपुत्र यही है। कुसुमपुर आदि नामों से भी इसका उल्लेख मिलता है। यह नगर संस्कृति और राजनीति का प्रमुख केंद्र रहा है। यहां आचार्य चाणक्य द्वारा नंद वंश के उन्मूलन के बाद मौर्य वंश की स्थापना की गई थी। यहीं पर सम्राट चंद्रगुप्त ने आचार्य भद्रबाहु से मुनिदीक्षा ली थी और वह उनके संघ के साथ दक्षिण की ओर चले गए थे। कालांतर में यही नगर गुप्त वंश की राजधानी बना। वर्तमान समय में यह बिहार प्रदेश की राजधानी है।

जैन शास्त्रों में इस स्थान को सिद्ध क्षेत्र माना जाता है। यहीं से मुनि सुदर्शन ने निर्वाण प्राप्त किया था। गुलजार बाग के निकट ही सुदर्शन मुनि की टेकरी है जहां चरणपादुकाएं विराजमान हैं। इनसे मंत्री या मुनि को शीलव्रती बनने की प्रेरणा मिलती है। टेकरी के चारों ओर चार सरोवर हैं जिनमें कमल हैं। पास में ही एक जैन मंदिर और धर्मशाला है। यहां मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है। धटधातु की एक चौबीसी तथा अन्य मूर्तियां भी हैं। यहां का प्रबंध दिगंबर जैन तीर्थ कमेटी करती है।

पटना में कुल मिलाकर पांच मंदिर हैं और एक चैत्यालय है। यहां तीन संग्रहालय हैं—राज्य संग्रहालय, जालान संग्रहालय और कानोडिया संग्रहालय। इनके अतिरिक्त राजभवन, विधानसभा, कदम कुआं, पाटलीपुत्र के ध्वंसावशेष, शहीद स्मारक और हैवतजंग का मकबरा भी दर्शनीय हैं।

कहा जाता है कि श्री इंद्रभूति गौतम और सुधर्माचार्य के सम्मुख शिशुनाग वंश के राजा अजातशत्रु जैन धर्म में दीक्षित हुए थे। पाटलिपुत्र नगर को अजातशत्रु के पौत्र उदयन ने बसाया था। उन्होंने अनेक जिनमंदिरों का भी निर्माण कराया था। यहां से बिहारशरीफ जाना चाहिए। बिहारशरीफ में एक दिगंबर जैन मंदिर में दर्शनीय जिनबिंब है।

नालंदा (कुंडलपुर)

बिहारशरीफ से नालंदा तीन किलोमीटर है। नालंदा के लिए बिहारशरीफ से बस-टैक्सी मिलती हैं। नालंदा बौद्ध विश्वविद्यालय के लिए विख्यात है। किंतु अब इसके ध्वंसावशेष ही मिलते हैं। नालंदा से बडगांव नामक गांव तीन किलोमीटर की दूरी पर है। गांव के बाहर एक जिनमंदिर है। यही स्थान भगवान महावीर की जन्मभूमि (कुंडलपुर) माना जाता रहा है। किंतु अब यह श्रेय वैशाली के कुंडग्राम को प्राप्त हो गया है। वहीं भगवान महावीर का स्मारक बन रहा है।

राजगृही (पंच शैल)

राजगृही नालंदा से १३ कि० मी० और बिहारशरीफ से

२३ कि० मी० है। यह बखत्यारपुर-राजगृही रेलवे लाइन का आखिरी स्टेशन है। पटना से बस या टैक्सी द्वारा सीधे आने पर ६७ कि० मी० पड़ता है। बखत्यारपुर से रेल या बस द्वारा इसकी दूरी ५३ कि० मी० है। यहां गया से नवादा होते हुए भी आया जा सकता है। भागलपुर से क्यूल जंकशन होते हुए नवादा या बखत्यारपुर उतरकर भी यहां पहुंचा जा सकता है। यहां पर एक सुंदर दिगंबर जैन धर्मशाला है।

तीर्थ के रूप में राजगृही की प्रसिद्धि भगवान महावीर के पहले से है। यहां बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनि सुव्रतनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक हुए थे। राजगृही पांच पहाड़ियों का समूह है। इसलिए उसे पंच शैल या पंच पहाड़ी भी कहते हैं। इन पांच पहाड़ियों के नाम हैं : विपुलाचल, रत्नगिरि, उदयगिरि, अरुणगिरि (स्वर्णगिरि) और वैभारगिरि। इन्हीं पांच पहाड़ियों पर अनेक मुनियों ने मुक्ति प्राप्त की है, यथा मुनिराज जीवंधर, श्वेत सुंदार्व, वैशाख, विद्युच्चर, गंधमादन, प्रीतिकर, धनदत्त आदि। इसलिए राजगृही सिद्धक्षेत्र माना जाता है। भगवान महावीर का समवसरण यहां अनेक बार आया और राजा श्रेणिक ने अपनी शंकाओं का निवारण किया।

राजनीतिक दृष्टि से यह नगरी मगध की राजधानी रही है। महाराज श्रेणिक बिबसार और उनके पुत्र कुणीक अजातशत्रु की राजधानी भी यही थी। महाभारत काल में यह जरासंघ की राजधानी थी। उस युग में सामरिक दृष्टि से इसका काफी महत्व था।

गौतम बुद्ध के संघ भी यहां कई बार आए। तत्कालीन श्रमण तीर्थंकरों और चिंतकों की यह क्रीडा-भूमि थी। राजगृही प्राचीनकाल से ही जैनधर्म का प्रमुख केंद्र रहा है। भगवान महावीर का धर्मचक्र प्रवर्तन इसी पवित्र स्थान पर हुआ। यहीं श्रेणिक जैसा शिकारी राजा और काल-सौकरिपुत्र जैसा कसाईपुत्र भगवान की शरण में आए और उनके अनन्य भक्त तथा जैन धर्म के उपासक बने। सोपारा (सूरत के निकट) से एक आर्यिका संघ यहा की वंदना करने ईसा की प्रारंभिक अथवा पूर्व शताब्दियों में आया था। धीवरी पूतिगंधा भी उस संघ में थीं। वह क्षुल्लिका हो गई थीं और यहीं नीलगुफा में उन्होंने समाधिरमण किया था। निस्संदेह यह स्थान पतितोद्धारक है। यहां कई कुंडों में निर्मल गरम जल भरा रहता है जिनमें नहाने के बाद थकान मिट जाती है।

सबसे पहले विपुलाचल पर्वत आता है, जिस पर चार जिनमंदिर हैं। भगवान मुनि सुव्रतनाथ के चार कल्याणकों का स्मारक इसी पर्वत पर है। एक नया मदिर है। उपरांत उदयगिरि पर जाना चाहिए। यह पर्वत बहुत ही उत्तम और मनोहर है। इस पर दो मंदिर हैं। खुदाई में यहां दो प्राचीन दिगंबर मंदिर भी निकले हैं। इनकी मूर्तियां नीचे लाल मंदिर में पहुंचा दी गई हैं। यहां से तलहटी में होकर चौथे पर्वत श्रमणगिरि पर जाना चाहिए। यहां पर तीन मंदिर हैं। पहाड़ से उतरकर पांचवें पहाड़ के रास्ते में सोन भंडार गुफा मिलती है। यहां दीवालों पर प्रतिमाएं बनी हुई हैं। अंतिम पर्वत वैभारगिरि है। जिस पर पांच मंदिर हैं। यहां एक विशाल

प्राचीन मंदिर निकला है जिसमें २४ कमरे हैं। यह लगभग १२०० वर्ष पुराना है। इसमें कई मूर्तियां विराजमान हैं। इन सब मदिरों के दर्शन करके यहा से डेढ़ कि० मी० दूर गणधर भगवान के चरणों की वंदना करने जाना चाहिए। पहाड़ की तलहटी में सम्राट श्रेणिक के महलों के चिह्न मिले हैं। उन्होंने राजगृह अतीव सुंदर निर्माण कराया था।

पावापुरी (पावापुर)

पावापुरी अतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की निर्वाण भूमि है। अत: यह सिद्ध क्षेत्र है। यह स्थान राजगृही से २४ कि० मी० है। इसका प्राचीन नाम अपापापुर (पुण्यभूमि) है। जिस स्थल पर भगवान ने निर्वाण प्राप्त किया वहां पर पद्म सरोवर नामक एक विशाल सरोवर है। यह दो फर्लांग लंबा और लगभग इतना ही चौड़ा है। कहते हैं किसी समय यह सरोवर चौरासी बीघे में फैला हुआ था। किंवदती के अनुसार भगवान के निर्वाण के समय असंख्य देव-देवियां और नर-नारी यहा एकत्र हुए थे। भगवान का निर्वाण होने पर उपस्थित जन-समूह ने भक्तिभाव से विह्वल हो उस स्थान की धूल मस्तक पर धारण की। हरेक ने केवल एक एक चुटकी धूल ली, पर भीड़ इतनी अधिक थी कि एक एक चुटकी धूल लेने से ही यहां सरोवर बन गया।

पद्म सरोवर के मध्य में श्वेत संगमरमर का एक जैन मदिर है। यह जलमदिर कहलाता है। मंदिर तक पहुंचने के लिए पाषाण का पुल बना है। जलमदिर के सामने समवसरण

मंदिर बना हुआ है। सरोवर के तट पर एक भव्य जैन धर्मशाला है। इस क्षेत्र में पहले यहीं एक धर्मशाला और यहीं दो मंदिर थे। दर्शन-पूजन की दृष्टि से इन दोनों मंदिरों पर दिगंबरों एवं श्वेतांबरों का समान अधिकार है। अब यहां जैन समाज ने कई धर्मशालाएं और मंदिरों का निर्माण कराया है।

जलमंदिर में भगवान महावीर के चरण चिह्न विराजमान हैं। बाईं ओर एक वेदी पर गणधर गौतम स्वामी के और दाईं ओर एक वेदी पर गणधर सुधर्मा स्वामी के चरणचिह्न हैं। मंदिर में केवल गर्भग्रह ही है।

मंदिर के निकट ही 'पावापुरी सिद्ध क्षेत्र दिगंबर जैन कार्यालय' है। यहां पर सात दिगंबर जैन मंदिर हैं। दो दोमंजिला धर्मशालाएं हैं जहां आवास की उत्तम व्यवस्था है। समीप ही पोस्ट आफिस है। यहां 'श्री महावीर दिगंबर जैन' नामक एक औषधालय भी है।

पावापुरी में कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल एकम तक विशाल मेला लगता है।

गुणावा

पावापुरी के मोड़ से ३ कि० मी० की दूरी पर गुणावा है। यह पवित्र स्थान गणधर इंद्रभूति गौतम का निर्वाण स्थल माना जाता है। यह सिद्ध क्षेत्र है। यहां भी एक सरोवर है जिसके मध्य में एक मंदिर बना है। मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग ६० मीटर लंबा पुल है। मंदिर में गणधर गौतम स्वामी के चरण हैं।

यहां सड़क के किनारे एक जैन धर्मशाला और मंदिर है।

नाथनगर

गुणावा से नवादा (पूर्व रेलवे) केवल दो-ढाई किलोमीटर है। यहां पहुंचकर नाथनगर जाना चाहिए। नाथनगर स्टेशन से १ कि० मी० से कुछ कम दूरी पर धर्मशाला है। वहां आवास की अच्छी व्यवस्था है। धर्मशाला में मंदिर भी हैं, तथा क्षेत्र का कार्यालय भी। खुला चौक पार करने पर पुराना दिगंबर जैन-मंदिर है। दो प्राचीन मानस्तंभ भी बने हैं। नाथनगर ही प्राचीन चंपापुर है। यहां बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य के पांचों कल्याणक हुए थे। केवल यही एक ऐसा क्षेत्र है जहां किन्हीं तीर्थंकर के पांचों कल्याणक हुए हों। यह अतीत में भारत का अति प्रसिद्ध सांस्कृतिक नगर रहा है। भगवान ऋषभदेव द्वारा स्थापित ५२ जनपदों में से अंग जनपद की राजधानी होने का इसे गौरव प्राप्त है। बौद्ध युग में इसकी गणना छः महानगरियों में की जाती थी।

यहीं पर कभी प्रख्यात हरिवंश की स्थापना हुई थी। यह नगर गंगातट पर बसा हुआ था, जहां धर्मघोष मुनि ने समाधिकरण किया था। गंगा नदी के एक नाले पर जिसका नाम चंपा नाला है, एक प्राचीन जिनमंदिर दर्शनीय है। नाथनगर के निकट तीन दिगंबर जैन मंदिर हैं। यह सिद्धक्षेत्र है। यहां से पद्मरथ, अंचल, अशोक आदि अनेक मुनि मुक्त हुए हैं।

इस क्षेत्र की व्यवस्था 'बंगाल, बिहार, उड़ीसा दिगंबर जैन तीर्थ कमेटी' करती है। अभी हाल में एक योजना के अनु-

सार दैनिक पूजनादि के लिए एक ध्रुव कोष निर्मित किया जा रहा है। इसमें ३६५ व्यक्तियों से २५१ रु० प्रति व्यक्ति का अनुदान ग्रहण किया जाएगा।

भागलपुर

नाथनगर से ५ कि० मी० की दूरी पर भागलपुर है। रिक्शा-स्कूटर आदि सवारियां आसानी से मिल जाती हैं।

भागलपुर बिहार प्रदेश का एक प्रमुख नगर है। यहां कोतवाली के पास ही जिनमंदिर और जैन धर्मशाला है। भागलपुर टसरी वस्त्र के लिए प्रसिद्ध है।

मंदारगिरि

मंदारगिरि भागलपुर से ४६ कि० मी० दूर है। यह भगवान वासुपूज्य का तप और मोक्ष कल्याणक स्थान है। भागलपुर से मंदारगिरि को रेल और बस दोनों जाती है।

गांव का नाम बौंसी है। रेलवे स्टेशन के सामने बस स्टेंड से आधे किलोमीटर की दूरी पर दिगंबर जैन धर्मशाला है। क्षेत्र का कार्यालय भी यही है। क्षेत्र कार्यालय से मंदारगिरि पर्वत ३ कि० मी० है। तलहटी से पर्वत की चढ़ाई डेढ़ कि०मी० से कुछ अधिक है। रास्ते में मंदिर और जलकुंड है। पर्वत शिखर पर दो बड़े मंदिर हैं: 'बड़ा दिगंबर जैन मंदिर' और 'छोटा दिगंबर जैन मंदिर'। पास ही एक गुफा भी है। तीनों जगह भगवान वासुपूज्य के चरणचिह्न अंकित हैं।

हिंदू मान्यता के अनुसार समुद्रमंथन के समय इसी पर्वत

(मंदराचल) को राई बनाया गया था।

नोट : श्री सम्मेदशिखर की ओर से आने वाले यात्रियों के लिए मार्ग यह है : मधुबन से गिरीडीह (२० कि० मी०), गिरीडीह से रेल द्वारा वैद्यनाथ धाम (६६ कि० मी०), वैद्यनाथ धाम से बस द्वारा बौंसी (७० कि० मी०)।

गया (कुलुहापहाड़ और भद्रिकापुरी)

मंदारगिरि से वापस भागलपुर आकर रेल द्वारा गया पहुंचना चाहिए। गया बौद्धों और हिंदुओं का तीर्थ है। यहां बौद्ध-गया में बोधि वृक्ष है जिसके नीचे गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। यहां दो जिनमंदिर भी हैं। स्टेशन से ढाई कि० मी० की दूरी पर जैन भवन (धर्मशाला) है। जैन भवन में आवास की उचित व्यवस्था है।

गया से कुलुहापहाड़ ६७ कि० मी० है। इसे जैनीपहाड़ भी कहते हैं। घंघरी तक पक्की सड़क है (डोभी ३२ कि०मी०, फिर हंटरगंज १५ कि० मी०, फिर घंघरी ८ कि० मी०)। घंघरी से दंतारगांव कच्ची सड़क पर ८ कि० मी० दूर है। दंतारगांव में जैन धर्मशाला है जिसमें १२ कमरे, चैत्यालय और कुआं है। दंतारगांव से डेढ़ कि० मी० चलकर पर्वत की चढ़ाई आरंभ होती है, जो लगभग ३ कि० मी० है। मार्ग पगडंडी का ही है।

कुलुहापहाड़ समुद्र तल से ५०० मीटर ऊंचा है। पहाड़ पर ध्वस्त प्राकार मिलते हैं। एक छोटा जैन मंदिर और विशाल सरोवर भी है।

कुलुहापहाड़ से ८-१० कि० मी० दूर मोंदल गांव है। यही प्राचीन भद्रिकापुरी है। यहां भगवान शीतलनाथ के गर्भ और जन्म कल्याणक हुए थे। उनके दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक कुलुहापहाड़ पर हुए थे। कुलुहापहाड़ पर अनेक दर्शनीय प्राचीन प्रतिमाएं हैं।

श्री सम्मेदशिखर (मधुबन)

कुलुहापहाड़ से गया लौटकर ईसरी जाना चाहिए। रेलवे स्टेशन का नाम पारसनाथ है, वहां उतरना चाहिए। गया से पारसनाथ १५२ कि० मी० है। यहां तेरापंथी और बीसपंथी दो धर्मशालाएं हैं। यहां से सम्मेदशिखर पर्वत दिखाई देता है। बस या टैक्सी द्वारा पहाड़ की तलहटी मधुवन पहुंचना चाहिए। ईसरी से मधुबन २२ कि० मी० है। ईसरी में चार दिगंबर जैन मंदिर हैं।

मधुवन में तेरापंथी और बीसपंथी कोठियों के अधीन कई धर्मशालाएं हैं। दिगंबर जैन मंदिर भी अनेक हैं, जो सुंदर और दर्शनीय हैं। बाजार में सब प्रकार का जरूरी समान मिलता है।

सम्मेदाचल महापवित्र तथा अत्यंत प्राचीन सिद्धक्षेत्र है। यह अनादि तीर्थ माना जाता है। इसकी वंदना करना प्रत्येक जैन अपना अहोभाग्य समझता है। अनंत तीर्थंकर भगवान अपनी अमृतवाणी और दिव्यदर्शन से इस तीर्थ को पवित्र बना चुके हैं। अनंतानंत मुनिगण यहां से मुक्त हुए हैं। इस युग के २० तीर्थंकर भी यहीं से मोक्ष पधारे। मधुकैटभ जैसे दुराचारी प्राणी भी यहां के पवित्र वातावरण में आकर पवित्र हो गए

और स्वर्ग सिधारे। नि:संदेह इस तीर्थराज की महिमा अपार है। इंद्रादिकदेव उसकी वंदना करके ही अपना जीवन सफल हुआ समझते हैं। यदि कोई भव्य जीव इस तीर्थ की यात्रा-वंदना भाव सहित करे तो उसे पूरे पचास भव भी धारण नहीं करने पड़ते। इस क्षेत्र का इतना प्रबल प्रभाव है कि वह ४९ भवों में ही संसार भ्रमण से छूटकर मोक्ष लक्ष्मी का अधिकारी होता है। पं० द्यानतरायजी ने तो यहां तक कहा है :

एक बार वंदे जो कोई। ताको नरक पशुगति नहीं होई॥

इस गिरिराज की वंदना करने से परिणामों में निर्मलता होती है। फलत: कर्मबंध कम होता है—आत्मा में वह पुनीत संस्कार अत्यंत प्रभावशाली हो जाता है कि जिससे पाप पंक में वह गहरा नहीं फंसता है। दिनोंदिन परिणामों की विशुद्धि होने से एक दिन वह प्रबल पौरुष प्रकट होता है, जो उसे आत्म स्वातंत्र्य अर्थात मुक्ति दिलाता है। सम्मेदाचल की वंदना करते समय इस धर्म सिद्धांत का ध्यान रखें और बीस तीर्थंकरों के जीवन-चरित्र और गुणों में अपना मन लगाए रखें।

इस सिद्धाचल पर देवेंद्र ने आकर जिनेंद्र भगवान के निर्वाणस्थल चिह्नित कर दिए थे। उन स्थानों पर 'चरण चिह्न' सहित सुंदर टोंक निर्मित की गई थीं। कहते हैं कि सम्राट श्रेणिक के समय में वे अतीव जीर्ण अवस्था में थीं। यह देखकर उन्होंने स्वयं उनका जीर्णोद्धार कराया और भव्य टोंकें निर्मित करा दीं। कालदोष से वे भी नष्ट हो गईं जिस पर अनेक दान-वीरों ने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग जीर्णोद्धार में लगाकर किया। सन १६७८ में यहां पर दिगंबर जैनों का एक महान जिनबिंब

प्रतिष्ठोत्सव हुआ था। पहले पालगंज के राजा इस तीर्थ की देखभाल करते थे। बाद में दिगंबर जैनों का यहां जोर हुआ, किंतु मुसलमानों के आक्रमण में यहां का मुख्य मंदिर नष्ट हो गया। तब एक स्थानीय जमींदार भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा को अपने घर उठा ले गया। वह यात्रियों से कर वसूल करके उनको दर्शन कराता था। सन १८२० ई० में कर्नल मैकेंजो ने अपनी आंखों से यह दृश्य देखा था। पर्याप्त यात्रियों के एकत्र होने पर वह कर वसूल करके दर्शन कराता था। जो कुछ भेंट चढ़ती थी सब वह ले लेता था। पार्श्वनाथ की टोंकवाले मंदिर में दिगंबर जैन प्रतिमा ही प्राचीनकाल से रही है।

अब दिगंबर और श्वेतांबर दोनों ही संप्रदायों के जैन इस तीर्थ को पूजते हैं और मानते हैं।

उपरली कोठी से ही पर्वत वंदना का मार्ग प्रारंभ होता है। मार्ग में लंगड़े-लूले-अपाहिज मिलते हैं, जिनको देने के लिए पैसे साथ में ले लेना चाहिए। वंदना प्रातः ३ बजे से प्रारंभ करनी चाहिए। ३ कि० मी० चढ़ाई चढ़ने पर गंधर्वनाला पड़ता है। फिर डेढ़ कि० मी० आगे चढ़ने पर दो मार्ग हो जाते हैं। बाईं तरफ का मार्ग पकड़ना चाहिए, क्योंकि वह सीतानाला होकर गौतम स्वामी की टोंक को गया है। दूसरा रास्ता पार्श्वनाथ की टोंक से आता है। सीतानाला में पूजा सामग्री धो लेनी चाहिए। यहां से डेढ़ कि० मी० की चढ़ाई है। पहले गौतम स्वामी की टोंक की वंदना करके बाएं हाथ की तरफ वंदना करने जाना चाहिए। दसवीं श्री चंद्रप्रभजी की टोंक बहुत ऊंची है। श्री अभिनंदननाथजी की टोंक से उतरकर तलहटी में जल-

मंदिर में जाते हैं और फिर गौतम स्वामी की टोंक पर पहुंचकर पश्चिम दिशा की ओर बंदना करते हैं। अंत में भगवान पार्श्व-नाथ की स्वर्णभद्र टोंक पर पहुंचते हैं। यह टोंक सबसे ऊंची है और यहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा सुहावना है। यहां पहुंचते ही यात्री अपनी थकावट भूल जाता है और जिनेंद्र पार्श्व की चरण-वंदना करते ही आत्माह्लाद में निमग्न हो जाता है। यहां विश्राम करके दर्शन-पूजन, सामायिक करके लौट आना चाहिए। रास्ते में बीसपंथी कोठी की ओर से जलपान का प्रबंध होता है। पर्वत समुद्र तल से लगभग १५०० मीटर ऊंचा है। इस पर्वतराज का प्रभाव अचित्य है। कुछ भी थकावट मालूम नहीं होती है। नीचे मधुबन में लौटकर वहीं के मंदिरों के दर्शन करके भोजनादि करना चाहिए। मनुष्य जन्म पाने की सार्थकता तीर्थयात्रा करने में है और सम्मेदाचल की वंदना करके मानव कृतार्थ हो जाता है।

पारसनाथ स्टेशन पर अब एक्सप्रेस गाड़ियां रुकने का प्रबंध हुआ है और दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और पुरी से टिकट आरक्षण की सुविधा भी है।

कलकत्ता

कलकत्ता बंगाल की राजधानी और भारत का सबसे बड़ा शहर है। स्टेशन से डेढ़ कि० मी० की दूरी पर शहर के मध्य बड़े बाजार में श्री दिगंबर जैन भवन (धर्मशाला) है। इसके पास की कलकत्ता का मुख्य बाजार हरिसन रोड है। वहां (१) चावल पट्टी (२) पुरानी वाड़ी (३) लोअर चितरपुर रोड और

(४) बेल गछिया में दर्शनीय दिगंबर जैन मंदिर हैं। चावल पट्टी के मंदिर में विपुल शास्त्र भंडार भी है। श्रावकों को दर्शन-पूजा की सुविधा है। राय बद्रीदासजी के श्वेतांबर मंदिर में भी अच्छी कला के दर्शन होते हैं। कलकत्ता में कार्तिक सुदी १५ को दोनों संप्रदायों का सम्मिलित रथोत्सव होता है। अजायबघर में जैन मूर्तियां दर्शनीय हैं।

कलकत्ता में बहुत से दर्शनीय स्थान हैं जिनमें प्रमुख हैं: महाजाति सदन (नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का स्मारक), मल्लिक कोठी (दुर्लभ मूर्तियों आदि का संग्रह), रवींद्र भारती (महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर का स्मारक), बेलगछिया का पारसनाथ मंदिर (दिगंबर जैन मंदिर), सेठ बद्रीनाथ मुकीम का मंदिर (श्वेतांबर जैन मंदिर—पर्यटक पुस्तकों में भी इसका उल्लेख होता है), बोस इंस्टीट्यूट (श्री जगदीशचंद्र बोस द्वारा संस्थापित वैज्ञानिक संस्थान), शहीद मीनार (५० मीटर ऊंची), म्यूजियम, बिड़ला प्लेनेटोरियम (नक्षत्रगृह), विक्टोरिया मैमोरियल, चिड़ियाघर, नेशनल लाइब्रेरी, हावड़ा पुल, काली मंदिर, बोटेनिकल गार्डन, बेलूर मठ।

कटक

कलकत्ता से कटक ४०८ कि मी० है। कटक उड़ीसा की प्राचीन राजधानी है। यह हावड़ा से पुरी जाने वाले रेल मार्ग पर है। स्टेशन से ५ कि० मी० की दूरी पर चौधरी बाजार में जैन भवन (धर्मशाला) है। यहां ठहरने की उत्तम व्यवस्था है। जैन भवन के पृष्ठ भाग में चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर है जो

अति प्राचीन है। इसमें अनेक प्राचीन मूर्तियां हैं। अनुमान है कि ये मूर्तियां १०वीं शताब्दी की हैं। मंदिर से कुछ ही दूर दिगंबर जैन चैत्यालय है।

भुवनेश्वर

उड़ीसा की वर्तमान राजधानी भुवनेश्वर है। यह कटक से २८ कि० मी० दूर है। कहा जाता है कि भारत में सर्वाधिक मंदिर इसी नगर में हैं। मंदिरों में मुक्तेश्वर, राजारानी और लिंग-राज के मंदिर अति प्रसिद्ध हैं। लिंगराज मंदिर के शिखर की ऊंचाई ४४ मीटर है। भुवनेश्वर में राजकीय संग्रहालय भी प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। इसमें पाषाण और धातु की अनेक जैन मूर्तियां सुरक्षित हैं। इनमें से कुछ मूर्तियां तो आठवीं-दसवीं शताब्दी की बताई जाती है।

खंडगिरि-उदयगिरि

भुवनेश्वर से पश्चिम की ओर ६ कि०मी० की दूरी पर खंडगिरि और उदयगिरि नामक दो पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों का अपना ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व है। इनके मार्ग में घने वृक्षों का जंगल है। इन पहाडियों के बीच में एक तंग घाटी है। यहां पत्थर काटकर बहुत सी गुफाएं और मंदिर बनाए गए हैं। इनमें से कुछ गुफाएं भगवान महावीर के काल की मानी जाती हैं। कुछ का निर्माण ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में सम्राट खारबेल के काल में हुआ बताते हैं। शेष गुफाएं दसवीं शताब्दी तक की बताई जाती हैं। इस प्रकार इन गुफाओं में अधिकांश को बने दो

हजार वर्ष से अधिक व्यतीत हो चुके हैं। उदयगिरि का प्राचीन नाम 'कुमारी पर्वत' है यहां भगवान महावीर का समवसरण आया था। इसलिए यह स्थान अतिशय क्षेत्र माना जाता है।

उदयगिरि पहाड़ी ३५ मीटर ऊंची है। इसके कटिस्थान में पत्थरों को काटकर कई गुफाएं बनाई गई हैं। पहले 'अलकापुरी' गुफा मिलती है। उसके द्वार पर हाथियों के चिह्न बने हैं। फिर 'जयविजय' गुफा है। उसके द्वार पर इंद्र बने हैं। आगे दर्शनीय 'रानी गुफा' है। इस गुफा में नीचे-ऊपर बहुत सी अंतरगुफाएं हैं। आगे चलने पर 'गनेश गुफा' मिलती है, जिसके बाहर पाषाण के दो हाथी बने हुए हैं। यहां से लौटने पर 'स्वर्ग गुफा', 'मध्य गुफा' और 'पाताल गुफा' नामक गुफाएं मिलती हैं। इन गुफाओं में चित्र और तीर्थंकरों की प्रतिमाएं बनी हुई हैं। 'पाताल गुफा' के ऊपर 'हाथी गुफा' लगभग ५ मीटर पश्चिमोत्तर है। यह वही गुफा है जो जैन सम्राट खारवेल के शिलालेख के कारण प्रसिद्ध है और जिसका बड़ा ऐतिहासिक महत्व है। खारवेल कलिंग देश के चक्रवर्ती राजा थे। उन्होंने भारतवर्ष की दिग्विजय की थी और मगध के राजा पुष्यमित्र को परास्त किया था। परिणामतः वह छत्र आदि चीजों के साथ कलिंगजिन ऋषभदेव की उस प्राचीन मूर्ति को वापस कलिंग लाए थे, जिसे सम्राट नंद पाटलिपुत्र ले गए थे। इस प्राचीन मूर्ति को सम्राट खारवेल ने कुमारी पर्वत पर अर्हतप्रासाद बनवाकर विराजमान किया था। स्वयं उन्होंने एवं उनकी रानी ने इस पर्वत पर कई जिनमंदिर, जिनमूर्तियां, गुफा और स्तंभ निर्माण कराए थे और कई धर्मोत्सव किए थे।

यहां की सब मूर्तियां दिगंबर हैं। सम्राट खारवेल के समय से पहले ही यहां निग्रंथ श्रमण संघ विद्यमान था। निग्रंथ (दिगंबर) मुनिगण इन गुफाओं में रहकर तपस्या करते थे। स्वयं सम्राट खारवेल ने इस पर्वत पर रहकर धार्मिक यम-नियमों का पालन किया था। उनके समय में अंग ज्ञान विलुप्त हो चला था। उसके उद्धार के लिए उन्होंने मथुरा, गिरिनार और उज्जैनी आदि जैन केंद्रों के निर्ग्रंथाचार्यों को संघसहित निमंत्रित किया था। निर्ग्रंथ श्रमण संघ यहां एकत्र हुआ और उपलब्ध द्वादशांगवाणी के उद्धार का प्रशंसनीय उद्योग किया गया। इन कारणों से कुमारी पर्वत एक महा पवित्र तीर्थ है।

खंडगिरि पहाड़ी लगभग ४० मीटर ऊंची है। खड़ी सीढ़ियों से ऊपर जाया जाता है। सीढ़ियों के सामने ही खंडगिरि गुफा है, जिसके नीचे-ऊपर पांच गुफाएं और बनी हैं। 'अनंत गुफा' में डेढ़ हाथ की कायोत्सर्ग जिनप्रतिमा विराजमान है। पर्वत के शिखर पर चार दिगंबर जैन मंदिर हैं। बड़े मंदिर को करीब २०० वर्ष पहले कटक के सुप्रसिद्ध दिगंबर जैन श्रावक चौधरी मंजूलाल परवार ने बनवाया था। मंदिर के पीछे की ओर सैकड़ों भग्नावशेष पड़े हैं जिनमें चार प्रतिमाएं नंदीश्वर की बताई जाती हैं। इस स्थान को 'देव सभा' कहते हैं। यहां 'आकाश गंगा' नामक जलकुंड भी है। इसमें मुनियों के ध्यान के लिए गुफाएं हैं। आगे 'गुप्तगंगा', 'श्याम कुंड' और 'राधा-कुंड' नामक जलकुंड हैं। फिर 'राजा इंद्र केशरी' गुफा है। इसमें आठ दिगंबर जैन खड्गासन प्रतिमाएं अंकित हैं। उपरांत २४ तीर्थंकरों की दिगंबर जैन प्रतिमाओं वाली 'आदिनाथ गुफा'

है । अंततः 'बारह भुजी' गुफा है । यहां १३ जिन प्रतिमाएं यक्षिणी मूर्तियों सहित हैं ।

इन पहाड़ियों पर कुल ११७ गुफाएं हैं । इनमें से केवल १८ गुफाएं ही उदयगिरि पहाड़ी पर हैं ।

यहां दिगंबर जैन धर्मशाला है जहां ठहरने की सुंदर व्यवस्था है ।

पुरी

इन गुफाओं के दर्शन करने के बाद पुनः भुवनेश्वर लौटकर पुरी जाना चाहिए । समुद्रतट पर स्थित पुरी भुवनेश्वर से ६२ कि० मी० दूर है । यहां ठहरने के लिए राजकीय अतिथि गृह और कई सुंदर धर्मशालाएं है ।

पुरी प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ है । यह चारों धामों में से एक है । इक्यावन शक्तिपीठों में भी इसकी गणना की जाती है । पुरी का मंदिर अति विशाल है । इसके चारों ओर दो परकोटे हैं ; चारों ओर चार विशाल द्वार हैं । इसका शिखर लगभग ६८ मीटर ऊंचा है । मुख्य मंदिर 'निजमंदिर' कहलाता है । इसके दक्षिण द्वार के बाहर ही दीवार में भगवान ऋषभदेव की मूर्ति विराजमान है, जिसके ऊपर शीशे का फ्रेम लगा है ।

'निजमंदिर' की वेदी में जगन्नाथजी (श्रीकृष्ण), बलराम और सुभद्रा के सुंदर विग्रह विराजमान हैं । ये तीनों लकड़ी के बने हैं । ये तीनों ही विग्रह अपूर्ण हैं । इनके हाथ पूरे नहीं बने हैं, मुखमंडल भी संपूर्ण नहीं है । वर्ष में एक बार जगन्नाथ जी का विग्रह बदला जाता है । लकड़ी की मूर्ति के अंदर हृदय

स्थान पर एक मूर्ति है। उसे निकालकर लकड़ी के नए कलेवर में रखा जाता है। जो पंडा यह संस्कार करता है। उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है। एक किवदंती के अनुसार विग्रह परिवर्तन नहीं देखना चाहिए; अन्यथा देखने वाले का परिवार नष्ट हो जाता है।

सम्राट खारवेल जिस 'कलिंगजिन' प्रतिमा को मगध से लाये थे, वह कहां है—इसका सप्रमाण विवरण उपलब्ध नहीं है। लोगों का विश्वास है कि जगन्नाथ जी की मूर्ति ही 'कलिंग-जिन' है और पुरी का प्रसिद्ध मंदिर ही खारवेल द्वारा निर्मित जिनालय है।

पुरी में जगन्नाथजी की यों तो बारह यात्राएं होती हैं, लेकिन सबसे प्रसिद्ध यात्रा आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को होती है। इस दिन तीन रथों में बलराम, सुभद्रा और जगन्नाथजी विराजमान किए जाते हैं। यह यात्रा गुंडीचा मंदिर जाती है। दूसरे दिन मूर्ति को मंदिर में पहुंचाया जाता है। सात दिन तक मूर्ति को वहां रखा जाता है, दशमी को रथयात्रा वापस होती है। इन नौ दिनों में जगन्नाथजी के जो दर्शन किए जाते हैं, उन्हें 'आड़प दर्शन' कहते हैं। इस यात्रा को देखने के लिए देश के कोने कोने से प्रतिवर्ष लाखों यात्री आते हैं। स्मृतियों में रथ-यात्रा दिवस को 'कल्याणक दिवस' कहा गया है।

रथयात्रा से पूर्व तीनों मूर्तियों को स्नान-मंडप में लाकर १०८ घड़ों के जल से स्नान कराया जाता है। यह स्नान ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को कराया जाता है।

कोणार्क

पुरी से सड़क मार्ग पर ८५ कि० मी० की दूरी पर कोणार्क है। यह स्थान सूर्यमंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यद्यपि यह विशालकाय मंदिर अब टूटा हुआ है, फिर भी यहां अत्युत्तम कला के दर्शन होते हैं।

दक्षिण भारत

तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र

दक्षिण भारत में जैन धर्म की प्राचीनता के अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं। समय समय पर उत्खनन में प्राप्त मूर्तियों, शिलालेखों आदि से यह तथ्य सुप्रमाणित हैं। तमिल के पांच महाकाव्यों में से तीन के रचयिता जैन आचार्य थे।

मैसूर के निकट श्रवणबेलगोल की पहाड़ी पर स्थित भगवान बाहुबली की दिगंबर प्रतिमा एकल पाषाण से निर्मित संसार की सबसे ऊंची प्रतिमा है। इसकी ऊंचाई लगभग १८ मीटर (५७ फीट) है। इस मूर्ति की स्थापना एक हजारवें वर्ष के अवसर पर, २२ फरवरी, १९८१ को मूर्ति का महामस्ताभिषेक हो रहा है।

कर्नाटक राज्य में कई मंदिरों में हीरे-पन्ने-माणिक आदि बहुमूल्य रत्नों की अनेक प्रतिमाएं विराजमान हैं।

तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र के अतिरिक्त केरल में भी दर्शनीय जैन मंदिर हैं।

मद्रास

मद्रास वाणिज्य, व्यापार और शिक्षा का प्रमुख केंद्र है। यह एक बड़ा बंदरगाह भी है। इसका समुद्रतट लगभग १६ कि० मी० लंबा है। यह संसार का दूसरे नंबर का सबसे लंबा समुद्र तट है।

मद्रास में एक दिगंबर जैन मंदिर और चैत्यालय है। अब तो दिगंबर जैन धर्मशाला भी बन गई है। यहां के अजायबघर में अनेक दर्शनीय प्रतिमाएं हैं। विक्टोरिया पब्लिक हाल में काले पाषाण की श्री गोम्मट स्वामी की कायोत्सर्ग प्रतिमा अति मनोज्ञ है। मद्रास के आस-पास जैनों के अनेक प्राचीन स्थान हैं। प्राचीन मैलापुर समुद्र में डूब गया था। उसमें विराजमान श्री नेमिनाथ की प्राचीन प्रतिमा इस समय चितंबूर में विराजमान है। यहां नेमिनाथ स्वामी का प्राचीन मंदिर था, जिसमें भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा और आचार्य कुंदकुंद के चरण विराजमान थे। यह मंदिर नयनार मंदिर कहलाता था। नयनार का अर्थ जैन होता है। इस पर इस समय शैवों का अधिकार है। यही वह स्थान है जहां तमिल के प्रसिद्ध नीतिग्रंथ 'श्री तिरुकुरल' के रचयिता रहते थे। उक्त ग्रंथ में मैलापुर की चर्चा है। इस मंदिर से अब चरण भी हटा लिए गए हैं।

मद्रास से लगभग २४ कि० मी० की दूरी पर पुलहल (पुजाल) किसी समय जैनों का गढ़ था। कुरंब जाति के एक मनुष्य को एक जैनाचार्य ने जैन धर्म में दीक्षित किया था और वह अपना राज्य स्थापित करने में सफल हुए थे। कुरुंबाधिराज की राजधानी पुलहल ही थी। वहां पर एक मनोहर ऊंचा जिन-मंदिर बना हुआ था। कुछ समय से श्वेतांबर विद्वान स्वामी ऋषभदास ने इस स्थान के पुनरुद्धार के प्रयास किए हैं। उन्होंने उपलब्ध प्राचीन स्तंभों आदि को लेकर एक भव्य जिनमंदिर का निर्माण कराया है। साथ में पाठशाला-धर्मशाला का भी प्रबंध है।

मद्रास से लगभग १६ कि० मी० की दूरी पर श्री क्षेत्र 'पुम्फुल मायावर' के मंदिर दर्शनीय हैं। पोन्नेरी ग्राम में एक पर्णकुटी है। इसमें श्री वर्द्धमान स्वामी की काले पत्थर की कायोत्सर्ग प्रतिमा विराजमान है। नगर में मिंट स्ट्रीट में एक दिगंबर जैन मंदिर और धर्मशाला है।

निष्कर्षत: मद्रास का क्षेत्र प्राचीनकाल से जैन धर्म का केंद्र रहा है। आज इस नगर में जैन धर्म के महत्व के द्योतक एक पुस्तकालय की बड़ी आवश्यकता है।

कांचीपुरम् (कांजीवरम्, कांची)

यह स्थान मद्रास से ७० कि० मी० दूर है। यह अपने कलात्मक भव्य मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। इसे पल्लवों की राजधानी रहने का गौरव प्राप्त है। पल्लव नरेशों ने जैन धर्म को न केवल सम्मान दिया, अपितु कई पल्लव सम्राटों ने उसे अंगीकार भी

किया था। अत: यह स्थान कई शताब्दियों तक जैनों का प्रमुख केंद्र रहा है। शहर से लगभग ३ कि० मी० की दूरी पर एक छोटी सी बस्ती है। इसे जिनकांची भी कहते हैं क्योंकि यह जैनों का केंद्र था। इस स्थान का नाम तिरुपारुथीकुदरम् है। यहा तीन अति प्राचीन दर्शनीय जैन मंदिर हैं। इनमें सबसे बड़ा त्रैलोक्यनाथ मंदिर है। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान वर्द्धमान की है। कतिपय अन्य कलात्मक प्रतिमाएं भी यहां है। इस स्थान का संबंध समंतभद्र स्वामी से रहा है। यहीं पर भट्ट अकलंक द्वारा प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था।

ममांडूर

तिरुपारुथीकुदरम् से २० कि० मी० पर ममाडूर है। यहा महेंद्रवर्मन के समय का गुफा मदिर है। वेयावती नदी के किनारे स्थित मंदिर की कारीगरी दर्शनीय है।

आनंदमंगलम्

निकटस्थ ही आनंदमंगलम् नामक स्थान है। यहां पहाड़ी की चट्टानों में जैनमूर्तियां उकेरी हुई है।

अर्पकम्

यह स्थान कांजीवरम् से १४ कि० मी० दक्षिण में है। यहां एक प्राचीन छोटा सा मंदिर है। इसकी अनूठी कारीगरी देखते ही बनती है। इसमें आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा विराजमान है।

तिंडिवनम्

रेल द्वारा समीपस्थ तिंडिवनम् पहुंचा जा सकता है। यहां जैनों के पांच घर हैं। यहां जिनमंदिर तो नहीं है पर एक बगीचे में दर्शनीय जिनप्रतिमा है।

पेरुमंडूर

तिंडिवनम् से लगभग ६ कि० मी० की दूरी पर पेरुमंडूर है। यह दिगंबर जैनों की अच्छी बस्ती है। यहां दो जिनमंदिर और सहस्राधिक जिन मूर्तियां हैं। मैलापुर के समुद्र में डूबने के समय वहां की मूर्तियां यहीं लाकर विराजमान की गई थीं। यह स्थान जैनों का विद्यापीठ है। यहां एक दिगंबर जैन धर्मशाला बहुत दिनों से चलती है।

श्री क्षेत्र पोन्नूर

पोन्नूर क्षेत्र तिंडिवनम् से करीब ४० कि० मी० दूर एक पहाड़ की तलहटी में है। यहां पर पहले सकल लोकाचार्य वर्द्धन राजनारायण शंभूवरायर नामक जैन राजा शासन करते थे। शक सं० १२६८ में पहाड़ पर इन्हीं राजा के राज्यकाल में एक विशाल मंदिर बनवाया गया था। उसमें भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान की गई थी। पहाड़ पर श्री एलाचार्य की चरण पादुकाएं हैं। यह 'तिरुकुरल' नामक तमिल ग्रंथ के रचयिता बताए जाते हैं। अतः यह स्थान भगवान कुंदकुंद स्वामी की तपोभूमि है, क्योंकि उनका अपरनाम एलाचार्य था। उनकी स्मृति में प्रति रविवार को पहाड़ पर यात्रा होती है,

जिसमें करीब ५०० आदमी शामिल होते हैं। यहां का प्रबंध पोन्नूर के दिगंबर जैन पंच करते हैं। उन्हें इस मेले में धर्मप्रचार का प्रबंध करना चाहिए। पोन्नूर में एक जैन मंदिर, धर्मशाला और पाठशाला भी है। यहां की जलवायु अच्छी है। यहां से वापस तिंडिवनम् आकर चितंबूर जाना चाहिए।

चितंबूर (श्री क्षेत्र सितामूर)

यह स्थान तिंडिवनम् से लगभग १६ कि० मी० है। यह जैनों का प्राचीन केंद्र है। अब भी वहां दो प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर हैं; उनमें से एक को १५०० वर्ष पुराना बतलाया जाता है। दोनों मंदिर अति मनोज्ञ एवं दर्शनीय हैं। कहते हैं श्री संधि महामुनि और पंडित महामुनि यहां आए थे। उन्होंने ही यह मंदिर तथा एक मठ यहां स्थापित किया था। अब यहां श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक विराजमान हैं। यहां चैत्र मास में रथोत्सव होता है। समीपस्थ विल्कम् ग्राम में दर्शनीय मंदिर हैं।

पुंडी

चितंबूर से वापस तिंडिवनम् पहुंचकर पुंडी जाना चाहिए। यह उत्तर अकार्ट जिले में अर्नी स्टेशन से लगभग ५ कि० मी० की दूरी पर है। यहां पत्थर का एक विशाल प्राचीन मंदिर है। इसमें १६ स्तंभों के मंडप का शिल्प चित्ताकर्षक है। यहां भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान ऋषभदेव की मनोज्ञ प्रतिमाएं विराजमान हैं। इस मंदिर की निर्माण कथा एक ताड़पत्र पर लिखी रखी है। उसके अनुसार यहां दो शिकारियों को जमीन खोदते हुए

भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा मिली थी। वे उसकी पूजा करने लगे। संयोग से एक मुनिराज का उधर आगमन हुआ। उन्होंने उस प्रतिमा के दर्शन किए। उन्होंने वहां की राजकन्या को जैन धर्म में दीक्षित किया और उसी से उक्त मंदिर बनवाया।

जिनपुरम् (तिरुनरुकोंडे)

इसी जिले में एक अन्य प्रसिद्ध स्थान है—जिनपुरम् (तिरुनरु-कोंडे)। यहां प्रतिवर्ष सम्यक्दर्शन व्रतियों का एक सम्मेलन होता है। व्रती लोग ४८ अथवा २४ अथवा १२ दिन का सम्यक्-दर्शन व्रत धारण करते है। उस अवधि में वे यहां भगवान पार्श्वनाथ के सान्निध्य में नियमित रूप से भजन, पूजन, स्वाध्याय आदि करते हैं। पिछली बार १९८० में २ फरवरी को यह सम्मेलन हुआ था। उसमें हजारों जैन-अजैन बंधुओं ने भाग लिया था।

साहित्य के क्षेत्र में जैन विद्वानों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। तमिल के पांच महाकाव्यों में से तीन के रचयिता जैन विद्वान थे और पांच अल्प काव्यो के रचयिता जैन ही थे।

पांच महाकाव्यों में 'शिलापथिकरण' अति प्रसिद्ध है। जिसमें प्राचीन काल के जीवनादि का सजीव वर्णन है। इसके रचयिता तपस्वी श्री इलन्गोआदिगल थे। वह चेर वंश के राजकुमार थे और अनंतर जैन साधु हो गए थे। इनका समय ईसा की दूसरी शताब्दी माना जाता है।

पूंपुहार (पुराना नाम कावेरीपट्टनम्)

समुद्रतट पर स्थित है। यह नगर चोल वंश की राजधानी था। अब इस नगर में तमिलनाडु सरकार ने सात खंड की एक इमारत में इस महाकाव्य पर आधारित कला कक्ष (आर्ट गैलरी) का निर्माण कराया है। यहां उक्त महाकाव्य की कथा के आधार पर पाषाण मूर्तियां पटों पर उत्कीर्ण कराकर दीवारों में लगाई गई हैं। इस योजना में तमिलनाडु के भूतपूर्व मुख्यमंत्री डा०कलयगर करुणानिधि द्वारा विशेष प्रोत्साहन मिला था।

पूंपुहार सिरकाजी रेलवे स्टेशन (चिदांबरम् और म्यूरम के बीच में स्थित) से २१ कि० मी० और म्यूरम से २६ कि० मी० है। मद्रास से सिरकाजी २६१ कि० मी० है।

पोन्नूर-तिरुमलय

पोन्नूर में जैन अवशेषों को देखकर अनुमान होता है कि किसी समय यह जैन धर्म का बड़ा केंद्र था। कनकगिरि नामक टीले पर भगवान आदिनाथ का मंदिर है जहां नित्य पूजन होता है।

पोन्नूर गांव से ६-१० कि० मी० पर तिरुमलय नामक पर्वत है। वह ३३५ मीटर ऊंचा है। सीढ़ियों से ६५ मीटर चढ़ने पर चार मंदिर मिलते हैं जिनके आगे एक गुफा है। गुफा में भी दो दर्शनीय बड़ी बड़ी जिनप्रतिमाएं हैं। भगवान आदिनाथ को समर्पित मंदिर बड़ा है। यहां नित्य पूजा होती है। यहां भगवान आदिनाथ के मुख्य गणधर ऋषभसेन की चरणपादुका भी है। गुफा में चित्रकला भी दर्शनीय है। गुफा के पर्वत की चोटी पर तीन मंदिर और हैं। इस पहाड़ी पर आचार्य कुंदकुंद तपस्या

किया करते थे। चंपा के एक पेड़ के नीचे चरण बने हुए हैं जो आचार्य कुंदकुंद के बताए जाते हैं। यहां के शिलालेखों से प्रकट है कि बड़े बड़े राजा-महाराजाओं ने यहां जिनमंदिर बनवाए थे और ऋषिगण यहां तपस्या किया करते थे। यहां के 'कुंदवई' जिनालय को सूर्यवंशी राजराज महाराज की बड़ी बहन ने अपने नाम पर बनवाया था। उन्होंने ढाढापुरम् और तीरुमझापड़ी में भी मंदिर बनवाए थे। श्री परवादिमल के शिष्य अरिष्टनेमि आचार्य ने एक यक्षिणी की मूर्ति निर्माण कराई थी।

पुडुकोट्टई-सीत्तानवासल

पुडुकोट्टई के इलाके के बहुत से स्थानों में जैन मतावलंबी बड़ी संख्या में रहते थे तथा वहां अनेक जैन साधु भी थे। पहाड़ों की गुफाओं में कई जगह शय्याएं, शिलालेख, मूर्तियां मिलती हैं। पुडुकोट्टई, सीत्तानवासल, तेनीमलाई, नृत्तामलई, मईलापट्टी और अलुरट्टीमलई ऐसे स्थान हैं।

इनमें सीत्तानवासल का विशेष महत्व है। लगभग ६१ मीटर ऊंची पहाड़ी पर जैन संन्यासियों का वास रहा है जिसका उल्लेख शिलालेखों और भजनों में मिलता है। ईसा की सातवीं शताब्दी में पल्लव सम्राट महेंद्रवर्मन प्रथम ने गुफामंदिर बनवाया था। यह तमिल क्षेत्र में अपने प्रकार का एकमात्र मंदिर है। इसमें दीवारों पर तीर्थंकर मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। बाहर की छत पर सुंदर रंगों में एक कमल सरोवर चित्रित है। यह 'समवसरण' का प्रतीक है। कला की दृष्टि से इसकी तुलना अजंता और श्रीलंका की सीगीरिया के भित्ति चित्रों से की गई है। यह तिरुचीरापल्ली-

बिरालीमलई मार्ग पर पुडुकोट्टई से १३ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

श्री मनारगुडी क्षेत्र

श्रीमनारगुडी क्षेत्र तंजौर जिले में है। यह निडमंगलम् दक्षिण रेलवे स्टेशन से लगभग १४ कि० मी० दूर है। यह स्थान श्री जीवंधर स्वामी का जन्मस्थान बताया जाता है। कहते हैं लगभग दो सौ वर्ष पूर्व यहां एक मुनि पर्ण कुटी में तपस्या किया करते थे। उन्होंने ही यहां भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान की थी। जब इसका पता कुंभकोनम के जैनों को चला तो उन्होंने यहां आकर मंदिर का निर्माण कराया। तब से अद्यतन यहां वैशाख मास में १० दिन तक यात्रोत्सव संपन्न होता है। मंदिर में श्री मल्लिनाथ स्वामी की भव्य प्रतिमा विराजमान है।

मदुरई

मदुरई नगर पांड्या वंश की राजधानी रहा है। यह तमिल संस्कृति-साहित्य का प्रमुख केंद्र रहा है। मदुरई के आसपास की प्राय: सभी पहाड़ियों पर जैन साधुओं के वास के लक्षण—शैय्याएं, शिलालेख आदि अब भी हैं। आवेमलई, तीरुपरनकुंद्रम्, कोंकरपुलिनकुलम्, मुथुपती, विक्रममंगलम्, अन्नामलई, करुणकलनगुडी, कीज्हाकुडी, मेत्तुपत्ती आदि अनेक स्थानों में ऐसे लक्षण हैं। कई स्थानों पर तीर्थंकर मूर्तियां भी हैं।

मदुरई एक प्रसिद्ध धार्मिक और पर्यटन स्थल है। शिला-

लेखों आदि से प्रतीत होता है कि कभी इस क्षेत्र में बहुत महत्व का जैन मठ रहा होगा। इस क्षेत्र का संबंध जैन आचार्यों से रहा है। अरिष्टनेमि, माघनंदि, गुणसेन, वर्धमान, कनकनंदी आदि आचार्यों का उल्लेख मिलता है। महान आचार्य अज्जनंदी (आर्यनंदी) द्वारा जैन धर्म के उन्नयन के प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं।

तिरुनेलवेली-कजहगुमलैय

तिरुनेलवेली जिले में कोविलपट्टी तालुक में कलगुमलैय (कजहगुमलैय) ग्राम के पास पहाड़ी गुफाएं हैं। चट्टानों पर ६० से अधिक तीर्थंकर मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, कला की दृष्टि से भी यह स्थान महत्वपूर्ण और दर्शनीय है। यहां कई शिलालेख और मूर्तियां भी हैं। इतना ही नहीं, यहां की प्राकृतिक रम्यता और नैसर्गिक छटा अत्यंत हृदयहारी है।

कोईल (कन्याकुमारी क्षेत्र)

कन्याकुमारी से कुछ कि० मी० पर कोईल नामक समृद्ध नगर है। यहां पर नागराज स्वामी मंदिर है। स्तंभों पर बनी भगवान पार्श्वनाथ, पद्मावती और भगवान महावीर की मूर्तियों और शिलालेखों से प्रतीत होता है कि यह पहले जैन मंदिर था। शिलालेखों से ज्ञात होता है कि कन्याकुमारी में कोट्टार, कुरंडी, तीरुचरणाथु मलैय (श्री चारणों की पहाड़ी) आदि स्थानों में समृद्ध जैन बस्तियां थीं। वहां बहुत से जैन विद्वानों के होने का भी उल्लेख मिलता है।

विजयमंगलम्-मेत्तपुथूर

ऐरोडे के निकट, विजयमंगलम् रेलवे स्टेशन से ५ कि० मी० पर मेत्तपुथूर नामक समृद्ध गांव में एक महत्वपूर्ण मंदिर है। यह स्थान कोयंबटूर से मद्रास जाने वाली सड़क पर कोयंबटूर से ६७ कि० मी० है।

कोयंबटूर-एरोडे का क्षेत्र, जो कभी कोंगुनडू (कोंगु क्षेत्र) कहलाता था, जैनों का प्रभावशाली स्थान रहा है। अनेक प्रख्यात जैन कवियों और संतों की यह जन्मभूमि रहा है। इनमें कोंगुवेलिर, कारमेख पुलावार, मुनिवर भावनंदी, अतीयरकुन्नालर, विल्लीपुथुर, महा मुनिवर गुणवीर के नाम उल्लेखनीय हैं।

परंपरानुसार कोंगु क्षेत्र में ७५ जैन मंदिर थे जिनमें विजयमंगलम् बड़ा मंदिर कहलाता था। कालगति में प्रायः सभी नष्ट हो गए।

कल्लिल-सुल्तानबेटरी (केरल)

ईसा को प्रारंभिक शताब्दियों में केरल क्षेत्र में जैन धर्म मानने वालों की अच्छी संख्या थी। कुछ जैन मंदिर इस क्षेत्र में हैं पर अधिकांश में हिंदू रीति से पूजनादि होता है और मूलनायक भी हिंदू देवताओं में परिवर्तित हो गए हैं। उदाहरणार्थ कल्लिल के मंदिर का रूप और पूजाविधि हिंदू है पर सुल्तान बेटरी और मुंडूर के क्षेत्र में अब भी जैन विधि प्रचलित है। चितराल और नगरकोईल जैनों के अच्छे केंद्र थे।

कल्लिल में एक प्राकृतिक गुफा में भगवान महावीर,

भगवान पार्श्वनाथ और पद्मावती के प्रतिबिंब हैं। अन्य अनेक स्थानों पर भी जैन अवशेष मिले हैं। वर्तमान में पालघाट और सुल्तानबेटरी के आसपास जैनों का वास है। सुल्तानबेटरी के निकट मनियान टोडी में वहां के जैन जमींदारों ने एक बहुत बड़ा गेस्ट हाउस बनवाया है। यह सब सुविधाओं से संपन्न है और यहां यात्री ठहर सकते हैं।

स्तवनिधि (तावंदी)

कोल्हापुर से बस द्वारा (बस गढ़हिंगलज, आजरा, बेलगांव, गोकाक या संकेश्वर जाने वाली हो) ४० कि०मी० पर निपानी नामक कस्बा है जहां पर २०० घर जैनों के हैं और २ मंदिर हैं। और वहां से तावंदी ५ कि० मी० है। बस स्टैंड से कोई १०० मीटर पर ही पार्श्वनाथ जैन गुरुकुल है। वहीं पर ठहरने को जगह मिल जाती है। गुरुकुल में जैन मंदिर है जिसमें भगवान पार्श्वनाथ की पौने दो मीटर ऊंची मनोज्ञ प्रतिमा है।

गुरुकुल से सवा कि० मी० पर स्तवनिधि क्षेत्र है। वहां पर एक धर्मशाला और चार मंदिर हैं। ब्रह्मदेव की एक विशाल मूर्ति है। इसकी काफी मान्यता है। स्तवनिधि नामक व्यापक नहीं है। अतः पूछताछ तावंदी नाम से करनी चाहिए।

बेलगांव

तावंदी से ६६ कि० मी० पर बेलगांव है। इस नगर में ९ जिन-मंदिर हैं। कर्नाटक क्षेत्र में मंदिर को बसदि और धर्मशाला को

बोर्डिंग या बोर्डिंग हाउस, छोटे को चिक और बड़े को दोड़ कहते हैं।

यहां नौ मंदिर हैं। (१) किले के अंदर बाग में कमलबसदि, (२) रोही गली में, (३) दोड़ बस्ती में नेमिनाथ मंदिर, (४) शोरी गली में चंद्रप्रभ मंदिर, (५) चिक बसदि, (६) हसूर में, (७) शाहपुर में, (८) तड़कबाडी में और (९) गोमट्ट-नगर में। मंदिरों पर शिखर नहीं है। ठहरने की व्यवस्था धर्म-शाला के रूप में नहीं है।

धारवाड़

बेलगांव से ८० कि०मी० पर धारवाड़ है। यह एक साफ-सुथरा शहर है।

हुबली

धारवाड़ से २० कि० मी० पर हुबली है। बस स्टेशन से लग-भग एक कि० मी० पर जैन बोर्डिंग है। उसमें एक छोटा सा जैन मंदिर भी है। बोगार गली में तीन जैन मंदिर हैं : चंद्रनाथ स्वामी, शांतिनाथ स्वामी और आदिनाथ स्वामी। वहां से कोई डेढ कि० मी० दूर अनंतनाथ और पार्श्वनाथ के दो और मंदिर हैं।

गोआ

बेलगांव से गोआ भी जा सकते हैं। गोआ समुद्रतट पर विख्यात पर्यटन स्थल है। यहां बहुत से होटल हैं। समुद्रतट आदि दर्श-

नीय हैं। कोई जैन धर्मशाला नहीं है। कुछ समय हुआ एक प्राचीन जैन मंदिर और कुछ जैन अवशेष यहां मिले थे। अब एक मंदिर बनवाया गया है।

आरसीकेरे

हुबली से ३०० कि० मी० पर आरसीकेरे है। इस नगर से ७० कि० मी० पर श्रवणबेलगोल, १६६ कि० मी० पर मैसूर, १७० कि० मी० पर बंगलौर और ११० कि० मी० पर शिमोगा हैं।

आरसीकेरे प्राचीन जैन केंद्र है। होयसल राजाओं के समय में यहां कई सुंदर जिनमंदिर बने थे जिनमें से सहस्रकूट जिनालय टूटी-फूटी हालत में है। इसमें संगतराशी का काम अति मनोहर है। जैन मंदिर में गोम्मट स्वामी की एक धातुमयी प्रतिमा महामनोज्ञ एवं प्रभायुक्त है।

बंगलौर

बंगलौर में बहुत छोटी सी दिगंबर जैन धर्मशाला है। चिकपेट में आनंद भवन नामक प्रसिद्ध होटल है। उसके ठीक सामने वाली गली में जावें, उसमें दूसरा चौराहा (क्राम नं० २) पर दाहिने हाथ मुड़ें। वहां पर दिगंबर जैन मंदिर और धर्मशाला है। मंदिर तक रिक्शा जाते हैं। श्वेतांबर धर्मशाला में भोजन की व्यवस्था है। न्यू रोड पर भ० सीमंधर स्वामी का दिगंबर जैन मंदिर व स्वाध्याय मंदिर है।

बंगलौर कर्नाटक की राजधानी है। साफ-सुथरा शहर है।

यहां कई दर्शनीय स्थल हैं : लालबाग, विधान सभा, विश्वेश्वरैया इंडस्ट्रियल म्यूजियम, कब्बन पार्क, कई विशाल गिरजाघर, गवर्नमेंट आर्ट्स ऐंड क्रैफ्ट्स एंपोरियम आदि। बंगलौर रेशम की साड़ियों का एक बड़ा केंद्र है।

मैसूर

बंगलौर से मैसूर १३९ कि० मी० है। क्लाक टावर के पास चंद्रगुप्त रोड पर दिगंबर जैन बोर्डिंग है। इसी में मंदिर भी है। इस स्थान पर छात्र भी रहते हैं। नगरपालिका के कार्यालय के पास एक और जिनमंदिर है।

मैसूर पुराना शहर है यहां की जलवायु बहुत अच्छी है। शहर सुंदर है। फल और सब्जी के बाजार सुंदर और सुप्रबंधित हैं। यह भारत का अगरबत्ती और चंदन के सामान का सबसे बड़ा केंद्र है। यहां के दर्शनीय स्थल हैं : गिरजाघर (दक्षिण एशिया में सबसे बड़ा), गवर्नमेंट आर्ट्स ऐंड क्रैफ्ट्स एंपोरियम, टेक्निकल इंस्टीट्यूट, जगमोहन पैलेस (आर्ट्स गैलरी), चिड़ियाघर, चामुंडी हिल और मंदिर, बड़ा नंदी, दौलतबाग (टीपू सुलतान का समर पैलेस), कावेरी संगम, रंगनाथ स्वामी का मंदिर, वृंदावन गार्डन, महाराज का महल आदि।

श्रीरंगपत्तन

कावेरी संगम पर बसा हुआ मैसूर-बंगलौर मार्ग पर मैसूर से १६ कि० मी० दूर है। यहां पर टीपू सुलतान ने अंग्रेजों से युद्ध किया था। यहां पर किला, श्रीरंगनाथ मंदिर (जिसे शिला-

लेखानुसार नाग मंडल के गवर्नर हुब्बर ने १०१ जिनमंदिरों को नष्ट करके बनवाया था), दरिया दौलत (टीपू का समर पैलेस), हैदर अली और टीपू के मकबरे, तहखाने आदि दर्शनीय स्थल है। यहां भगवान आदिनाथ का एक मंदिर भी है।

कृष्णराजसागर बांध और बृंदावन गार्डस

मैसूर से १६ कि० मी० (श्रीरंगपत्तन से ३-४ कि० मी०) यह विशाल बांध है। इससे बनी झील ५६ वर्गमील में फैली है। बांध पर बहुत सुंदर बृंदावन गार्डस है। रात को रंग-बिरंगी रोशनी होती है।

शिवसमुद्रम् जल प्रपात

यह एक सुंदर जल प्रपात है। यह मैसूर से ८० कि० मी० है। इसे देखने के लिए अनेक देशी-विदेशी पर्यटक पहुंचते हैं।

सोमनाथपुर

यह मैसूर से ३५ कि० मी० दूर है। यहां का दर्शनीय मंदिर केशव मंदिर है। यह कारीगरी का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

गोमट्टगिरि

यह मैसूर से १६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। एक बहुत छोटी पहाड़ी पर भगवान बाहुबली की साढ़े पांच मीटर ऊंची मनोज्ञ मूर्ति है। भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव के समय यहां पर एक धर्मशाला बनवाई गई है। पानी की भी

सुविधा हो गई है। रसोईघर आदि भी है। यदि कोई संघ चाहे तो एकाध दिन ठहरकर एकांतवास और भगवान बाहुबली के दर्शन-पूजा का सुयोग प्राप्त कर सकता है।

श्रवणबेलगोल (जैनबद्री)

श्रवणबेलगोल जैनों का अति प्राचीन और परमपावन तीर्थ है। जैन इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है। उत्तरवासी इसे 'जैनबद्री' कहते हैं। यह 'जैन काशी' और 'गोमट्टतीर्थ' नामों से भी प्रसिद्ध रहा है। यह कर्नाटक राज्य के हासन जिले में स्थित है और बंगलौर से १४० कि० मी०, हासन से ५२ कि० मी० तथा मैसूर से ८३ कि० मी० है। यहां पर श्री बाहुबली स्वामी की लगभग १८ मीटर (५७ फीट) ऊंची अद्वितीय एवं अतिशयसंपन्न विशाल प्रतिमा है। ऐसी प्रतिमा संसार में अन्यत्र नहीं है। लगभग १५-१६ कि० मी० दूर से ही यह दिव्य मूर्ति दृष्टिगोचर होने लगती है। मूर्ति पर दृष्टि पड़ते ही यात्री अपूर्व शांति का अनुभव करने लगता है। धन्य है वह व्यक्ति जिसे भगवान बाहुबली की इस भव्य प्रतिमा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है। और धन्य हैं वह महाभाग चामुंडरायजी जिन्होंने एक सहस्र वर्ष पूर्व इस मनोज्ञ मूर्ति का निर्माण कराया था।

चामुंडरायजी कर्नाटक राज्य के सम्राट गंगराज श्री रच्चमल के महामात्य थे। अपने गुणों एवं पराक्रम के कारण वह महाबलाधिपति, समरधुरंधर, सत्य युधिष्ठिर आदि उपाधियों से अलंकृत थे। उन्होंने इस युग के प्रथम मोक्षगामी भगवान

बाहुबली की उपर्युक्त प्रतिमा बनवाकर इंद्रगिरि पर्वत पर प्रतिष्ठित कराई थी। यह उत्सव सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य नेमिचंद्र के सान्निध्य में संपन्न हुआ था।

दिगंबर जैन साधुओं को 'श्रमण' कहते हैं। कन्नड़ में 'बेल' का अर्थ 'श्वेत' है और 'गोल' तालाब को कहते हैं। इसलिए श्रवणबेलगोल का अर्थ होता है : जैन साधुओं का श्वेत सरोवर। यह दिगंबर जैन साधुओं की तपोभूमि रही है। राम-रावण काल के बने हुए जिनमदिर यहां पर एक समय मौजूद थे। अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी बारह वर्ष के दुष्काल से जैन संघ की रक्षा करने के लिए दक्षिण भारत आए थे। यहीं पर उन्होंने संघ सहित तपश्चरण किया था। श्रवलबेलगोल के चंद्रगिरि पर्वत पर 'भद्रबाहु गुफा' में भगवान भद्रबाहु के चरण-चिह्न विद्यमान है। वहीं उन्होंने समाधिमरण किया था। वहीं रहकर सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने, जो दिगंबर मुनि होकर उनके साथ आए थे, उनकी वैयावृत्ति की थी। सम्राट चंद्रगुप्त की स्मृति में यहां जिनमदिर और चित्रावली बनी हुई है। उनके अनुयायी मुनिजनों का एक 'गण' भी बहुत दिनों तक यहां रहा था। निस्संदेह श्रवणबेलगोल महा पवित्र तपोभूमि है। यहां की जैनाचार्य परंपरा दिग्दिगांतरों में प्रख्यात थी। यहां के आचार्यों ने बड़े बड़े राजा, महाराजाओं से सम्मान प्राप्त किया था और उन्हें जैन धर्म की दीक्षा दी थी। श्रवणबेलगोल पर राजा, महाराजा, रानी, राजकुमार बड़े बडे सेनापति, राज-मंत्री और सब ही वर्ग के मनुष्यों ने आकर धर्माराधना की है। उन्होंने अपने आत्मबल को प्रकट करने के लिए यहां सल्लेखना-

व्रत धारण किया। भद्रबाहु स्वामी द्वारा स्थापित आदर्श को जैन समाज ने खूब निभाया। श्रवणबेलगोल इस बात का प्रत्यक्ष साक्षी है कि जैनों का साम्राज्य देश के लिए कितना हितकर था। उनके सम्राट किस तरह धर्म साम्राज्य स्थापित करने के लिए लालायित थे। श्रवणबेलगोल का महत्व प्रत्येक जैन को आत्मवीरता का संदेश देने में गर्भित है। यहां लगभग ५०० शिलालेख जैनों की गौरवगाथा का उल्लेख करते हैं।

श्रवणबेलगोल गांव के दोनों ओर दो मनोहर पर्वत विंध्य-गिरि (इंद्रगिरि) और चंद्रगिरि है। गांव के बीच में कल्याणी सरोवर है। इसलिए यहां की प्राकृतिक छटा चित्ताकर्षक है। इंद्रगिरि को यहां के लोग दोड्ड-बेट्ट (बड़ा पहाड़) कहते हैं। इस पर चढ़ने के लिए पांच सौ सीढ़ियां बनी हुई हैं। इस पर्वत पर चढ़ते ही पहले ब्रह्मदेव मंदिर पड़ता है जिसकी अटारी में पार्श्वनाथ स्वामी की एक मूर्ति है। पर्वत की चोटी पर पत्थर की प्राचीन दीवार का घेरा है जिसके अंदर बहुत से प्राचीन जिनमंदिर हैं। घुसते ही 'चौबीस तीर्थंकर वसदि' एक छोटा-सा मंदिर है। इसमें चौबीसी पट्ट विराजमान हैं। इसकी स्थापना सन १६४८ में हुई थी। इस मंदिर के उत्तर-पश्चिम में एक कुंड है। उसके पास 'चेन्नण्ण बसदि' नामक एक दूसरा मंदिर है। इसमें भगवान चंद्रप्रभ की पूजा होती है। मंदिर के सामने एक मानस्तंभ है। यह मंदिर लगभग १६७३ ई० में चेन्नगण ने बनवाया था।

इसके आगे चबूतरे पर बना हुआ 'ओदेगल बसदि' नामक मंदिर है। यह कड़े कंकड़ का बना हुआ है और होयसल

काल का है। इस मंदिर की छत के मध्य भाग में एक बहुत ही सुंदर कमल लटका हुआ है। श्री आदिनाथ भगवान की जिन-प्रतिमा दर्शनीय है। श्री शांतिनाथ और नेमिनाथ की भी सुंदर प्रतिमाएं हैं।

इस विंध्यगिरि पर्वत पर ही एक छोटे घेरे में श्री बाहुबली (गोम्मट) स्वामी की विशालकाय मूर्ति विराजमान है। इस घेरे के बाहर भव्य संगतराशी का त्यागद् 'ब्रह्मदेव स्तंभ' नामक सुंदर स्तंभ छत से अधर लटका हुआ है। इसे गंगवंश के राज-मंत्री सेनापति चामुंडराय ने बनवाया था; जो 'गोम्मटसार' के रचयिता श्री नेमिचंद्राचार्य के शिष्य थे। गुरु और शिष्य की मूर्तियां भी उस पर अंकित हैं। इस स्तंभ के सामने ही गोम्मटेश की मूर्ति के प्राकार में घुसने का अखंड द्वार है। वह एक शिला का बना हुआ है। इस द्वार के दाहिनी ओर बाहुबलीजी का छोटा सा मंदिर और बाईं ओर उनके बड़े भाई भरत भगवान का मंदिर है। पास वाली चट्टान पर सिद्ध भगवान की मूर्तियां हैं। वहीं 'सिद्धर बसदि' है। पास ही दो सुंदर स्तंभ हैं। वहीं पर 'ब्रह्मदेव स्तंभ' है और गुल्लकायिजी की मूर्ति है। गुल्लकायिजी चामुंडराय के समय में ही हुई थीं। वह बड़ी धर्मवत्सला महिला थीं। लोकश्रुति है कि चामुंडराय ने बड़े सजधज से गोम्मट स्वामी के अभिषेक की तैयारी की थी। परंतु अभिषिक्त दूध जांघों के नीचे नहीं उतरा। कारण यह था कि चामुंडराय जी को थोड़ा सा अभिमान हो गया था। एक वृद्धा भक्तिन गुल्लकायि नारियल में दूध भरकर लाई। उसने भक्तिपूर्वक अभिषेक किया तो वह सर्वांग संपन्न हुआ। चामुंडरायजी ने

गुल्लकायिजी की मूर्ति बनवाकर उनकी भक्ति को चिरस्थायी बना दिया।

श्री बाहुबलीजी श्री तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र और भरतजी चक्रवर्ती के भाई थे। राज्य के लिए दोनों भाइयों में युद्ध हुआ था। बाहुबली की विजय हुई। परंतु उन्होंने राज्य अपने बड़े भाई को दे दिया और स्वयं तप कर सिद्ध परमात्मा हुए। भरतजी ने पोदनपुर में उनकी बृहत्काय मूर्ति स्थापित की। कालांतर में उसके चहुं ओर इतने कुक्कट-सर्प हो गए कि दर्शन करने दुर्लभ हो गए। गंगराजा राचमल्ल के सेनापति चामुंडराय अपनी माता की इच्छानुसार उनकी वंदना करने के लिए चले। परंतु उनकी यात्रा अधूरी रही। इसलिए उन्होंने श्रवणबेलगोल में ही एक वैसी ही मूर्ति स्थापित करने का निश्चय किया। उन्होंने चंद्रगिरि पर्वत पर, जिसे अब चामुंडराय शिला कहा जाता है, खड़े होकर एक स्वर्ण तीर मारा। वह इंद्रगिरि पहाड़ की एक चट्टान में जा लगा। उस चट्टान में उनको गोम्मटेश्वर के दर्शन हुए। चामुंडरायजी ने श्री नेमिचंद्राचार्य की देख-रेख में महान मूर्ति बनवाई। यह घटना सन ९८३ के लगभग की है। यह मूर्ति उत्तराभिमुख है और हल्के भूरे रंग के महीन कंकरीले पत्थर (ग्रनाइट) को काटकर बनाई गई है। यह विशाल मूर्ति इतनी स्वच्छ और सजीव है मानो शिल्पी अभी ही इसे बनाकर हटा हो। स्थान की सुंदरता और मूर्ति की विशालता के विचार से गोम्मटेश्वर की यह महान मूर्ति मिस्र देश के रमसेस राजाओं की मूर्तियों से भी अधिक सुंदर एवं आश्चर्यजनक सिद्ध होती है। निस्संदेह मूर्ति की शांतिमुद्रा भुवनमोहिनी है।

बाहुबलीजी प्रथम कामदेव थे। 'गोम्मट' शब्द काम का द्योतक है। इसलिए वह गोम्मटेश्वर कहलाते हैं। उनका अभिषेकोत्सव १२ वर्षों में एक बार होता है। इस मूर्ति के चारों ओर प्राकार में छोटी छोटी देवकुलिकाएं हैं। इनमें तीर्थंकर भगवान की मूर्तियां बिराजमान हैं।

चंद्रगिरि पर्वत इंद्रगिरि से छोटा है। इसलिए कन्नड़ में उसे चिक्कबेट्ट कहते हैं। वह आस-पास के मैदान से लगभग ५५ मीटर ऊंचा है। प्राचीन संस्कृत लेखों में इसे 'कटवप्र' कहा जाता है। यहां प्राकार के भीतर कई सुंदर जिन मंदिर हैं। एक देवालय प्राकार के बाहर है। प्राय: सब ही मंदिर द्रविड़-शिल्पकला की शैली के हैं। सबसे प्राचीन मंदिर आठवीं शताब्दी का बताया जाता है। पहले ही पर्वत पर चढ़ते हुए भद्रबाहु स्वामी की गुफा मिलती है जिसमें उनके चरणचिह्न विराजमान हैं। भद्रबाहु गुफा से ऊपर पहाड़ की चोटी पर भी मुनियों के चरणचिह्न हैं। उनकी वंदना करके यात्री दक्षिणद्वार से प्राकार में प्रवेश करते हैं। प्रवेश करते ही एक सुंदरकाय मानस्तंभ मिलता है। इसे 'कूगेब्रह्मदेव स्तंभ' कहते हैं। यह बहुत ऊंचा है और इसके सिरे पर ब्रह्मदेव की मूर्ति है। गंगवंशी राजा मारसिंह द्वितीय का स्मारकरूप लेख भी इस पर खुदा हुआ है। इसी स्तंभ के पास कई प्राचीन शिलालेख चट्टान पर उत्कीर्ण हैं। शिलालेख करीब ६५० ई० में बना था। इसमें स्पष्ट उल्लेख है कि भद्रबाहु और चंद्रगुप्त दो महान मुनि हुए हैं जिनकी कृपादृष्टि से जैनमत उन्नत दशा को प्राप्त हुआ।

मानस्तंभ से पश्चिम की ओर सोलहवें तीर्थंकर श्री शांति-

नाथ का एक छोटा सा मंदिर है। उसमें शांतिनाथ भगवान की साढ़े तीन मीटर ऊंची एक महामनोज्ञ खड्गासन मूर्ति दर्शनीय है। इस मंदिर के खुले स्थान में भरत की अपूर्व मूर्ति खड़ी है। पूर्व दिशा में 'महानवमी मंडप' है जिसके बीस स्तंभ हैं। एक स्तंभ पर मंत्री नागदेव ने सन ११७६ ई०में नयकीर्ति नामक मुनिराज की स्मृति में लेख खुदवाया है। यहां से पूर्व की ओर श्री पार्श्व-नाथ जी का बहुत बड़ा मंदिर है। इसके सामने एक मानस्तंभ है। मंदिर उत्कृष्ट शिल्पकला का सुंदर नमूना है। इसी के पास 'कत्तले बसदि' नामक विशाल मंदिर है। इसे विष्णुवर्द्धन के सेनापति गंगराज ने बनवाया था। इसमें आदिनाथ की मूर्ति विराजमान है। यहां एक मंदिर है जिसमें प्रदक्षिणार्थ मार्ग बना हुआ है।

चंद्रगिरि पर्वत पर सबसे छोटा मंदिर चंद्रगुप्त बसदि है। यहां एक पत्थर के सुंदर चौखटे में पांच चित्रपट्टिकाएं अति भव्य हैं। इनमें श्रुतकेवली भद्रबाहु और सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन संबंधी चित्र बने हुए हैं और पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति विराज-मान है। दीवारों पर चित्र बने हुए हैं। श्री भद्रबाहु और चंद्रगुप्त का यह सुंदर स्मारक है।

फिर 'शासन बसदि' है जिसमें एक शिलालेख दूर से दिखाई पड़ता है। यहां आदिनाथ की मूर्ति विराजमान है। इस मंदिर को सन ११५७ में सेनापति गंगराज ने बनवाया था। उन्होंने इसका नाम 'इंद्रकुलगृह' रखा था।

यहीं 'मज्जिगण बसदि' नामक एक छोटा सा मंदिर है। इसमें चौदहवें तीर्थंकर श्री अनंतनाथ की पाषाणमूर्ति विराजमान

है। दीवारों पर सुंदर फूल चित्रित हैं।

'चंद्रप्रभ बसदि' के खुले गर्भगृह में आठवें तीर्थंकर श्री चंद्रप्रभ की मनोज्ञ मूर्ति विद्यमान है। इसे गंगवंशी राजा शिवमार ने बनवाया था। 'सुपार्श्वनाथ बसदि' में भगवान सुपार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। 'चामुंडराय बसदि' पहाड़ के सबसे बड़े मंदिरों में से है। इसमें २२वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथजी की दर्शनीय प्रतिमा है।

इस सुंदर मदिर को सेनापति चामुंडराय ने ६८२ ई० में बनवाया था। बाहरी दीवारों में खंभे खुदे हुए हैं जिनमें मनोहर चित्रपट्टिकाएं बनी हैं। छत की मुंडेरों और शिखरों का मनोहर शिल्प देखते ही बनता है। ऊपर छत पर चामुंडरायजी के सुपुत्र जिनदेव ने एक अट्टालिका बनवाकर उसमें पार्श्वनाथ जी का प्रतिबिंब विराजमान कराया था। नीचे गांव में निकट ही आदिनाथ देवालय है, जिसे 'एरडुकट्टे बसदि' कहते हैं। इसे होयसल सेनापति गंगराज की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी ने १११८ ई० बनवाया था।

'सवतिगंधवारण बसदि' भी काफी बड़ा मदिर है। इसे होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन की रानी शांतलदेवी ने बनवाया था। इसमें भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा विराजमान है। इस मूर्ति का प्रभामंडल अतीव सुंदर है।

'बाहुबली बसदि' रथाकार होने के कारण 'तेरिन' बसदि कहलाती है। कन्नड़ में रथ को तेरु कहते हैं। इसमें श्री बाहुबली जी की मूर्ति विराजमान है।

'शांतीश्वर बसदि' मंदिर भी होयसल काल का है। 'इरुवे-

ब्रह्मदेव मंदिर' में केवल ब्रह्मदेव की मूर्ति है। यहां दो कुंड भी हैं।

इस पर्वत के उत्तर द्वार से उतरने पर जिननाथपुर का पूर्ण दृश्य दिखाई पड़ता है। जिननाथपुर को होयसल सेनापति गंगराज ने ११९७ ई० में बसाया था। सेनापति रेचिमय्या ने यहां पर 'शांतिनाथ बसदि' नामक एक अति सुंदर मंदिर बनवाया था। यह मंदिर होयसल शिल्पकारी का अद्वितीय नमूना है। इसके नक्काशीदार स्तंभों में मणियों की पच्चीकारी का काम दर्शनीय है। स्तंभ भी कसौटी के पत्थर के हैं।

इसी गांव में दूसरे छोर पर तालाब के किनारे 'ओगल बसदि' नामक मंदिर है। इसकी प्राचीन प्रतिमा खंडित हो गई थी। इसलिए उसे तालाब में विसर्जित कर दिया गया। मंदिर में नई प्रतिमा विराजमान की गई है।

इसके अतिरिक्त श्रवणबेलगोल गांव में भी कई दर्शनीय जिनमंदिर हैं। इनमें 'भंडारी बसदि' नामक मंदिर सबसे बड़ा है। इसके कई गर्भगृहों में एक लंबे अलंकृत पादपीठ पर चौबीस तीर्थंकरों की खड्गासन प्रतिमाएं विराजमान हैं। इसके द्वार सुंदर हैं। फर्श बड़ी लंबी लंबी शिलाओं का बना हुआ है। मंदिर के सामने एक अखंड शिला का बड़ा सा मानस्तंभ खड़ा है। होयसल नरेश नरसिंह प्रथम के भंडारी ने यह मंदिर बनवाया था। राजा नरसिंह ने इस मंदिर को सवणेरु गांव भेंट किया था और इसका नाम 'भव्यचूड़ामणि' रखा था।

'अक्कन बसदि' नामक मंदिर श्रवणबेलगोल में होयसल शिल्प शैली का एक ही मंदिर है। इसमें सप्तफण मंडित भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है। इसके स्तंभ, छत और

दीवारें शिल्प कला के अपूर्व नमूने हैं। इस मंदिर को ब्राह्मण सचिव चन्द्रमौलि की पत्नी अचियक्क देवी ने ११८१ में बनवाया था। वह स्वयं जैन धर्म परायणा थी। उनका अंतर्जातीय विवाह हुआ था।

इस मंदिर के प्राकार के पश्चिमी भाग में 'सिद्धांत बसदि' नामक मदिर है, जिसमें सिद्धांत ग्रंथ रखे गए थे। बाहर द्वार के पास 'दानशाले बसदि' है, जिसमें पंचपरमेष्ठी की पूर्ति विराजमान है।

'नगर जिनालय' बहुत छोटा मंदिर है। इसे ११९५ ई० में मंत्री नागदेव ने बनवाया था।

'मंगाई बसदि' शांतिनाथ स्वामी का मंदिर है। चारुकीर्ति पंडिताचार्य की शिष्या, राजमंदिर की नर्तकी चूड़ामणि और बेलुगुलु की रहने वाली मंगाई देवी ने १३२५ ई० में इसे बनवाया था। धन्य था वह समय जब जैन धर्म राजनर्तकियों के जीवन को पवित्र बना देता था।

'जैनमठ' श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी का निवास स्थान है। इसके द्वार मंडप के स्तंभों पर कौशलपूर्ण खुदाई का काम है। मंदिर में तीन गर्भगृह हैं जिनमें अनेक जिनबिंब विराजमान हैं। इसमें 'नवदेवता' की मूर्ति अनूठी है। पंचपरमेष्ठियों के अतिरिक्त इसमें जैन धर्म को एक वृक्ष के द्वारा सूचित किया गया है। व्यास पीठ (चौकी) जिनवाणी का प्रतीक है। चैत्य एक जिनमूर्ति द्वारा और जिनमंदिर एक देवमडप द्वारा दर्शाए गए हैं। सबकी दीवारों पर सुंदर चित्र बने हुए हैं। पास ही बालक-बालिकाओं के लिए अलग अलग जैन पाठशालाएं हैं। इस तीर्थ

की मान्यता मैसूर के विगत शासनाधिकारी राजवंश में पुरातन काल से है। जैनधर्म का गौरव श्रवणबेलगोल के प्रत्येक कीर्ति-स्थान से प्रकट होता है। प्रत्येक जैनबंधु को यहां के दर्शनार्थ आना चाहिए।

जिननाथपुर

श्रवणबेलगोल के समीपस्थ ही कुछ अन्य मंदिर हैं जो दर्शनीय हैं। जिननाथपुर श्रवणबेलगोल से लगभग डेढ़ किलोमीटर उत्तर में है। यहां का 'शांतिनाथ बसदि' होयसल शिल्प का बेजोड़ नमूना है। इसमें भगवान शांतिनाथ की लगभग डेढ़ मीटर ऊंची प्रतिमा है।

अरेगल्लु बसदि

यह मंदिर 'शांतिनाथ बसदि' से भी पुराना है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ की सप्तफणी प्रभामंडल युक्त डेढ़ मीटर ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। अरेगल्लु का अर्थ चट्टान होता है। एक चट्टान पर बने होने के कारण यह मंदिर 'अरेगल्लु बसदि' कहलाता है। यहां चतुर्विंशति तीर्थंकर, पंच परमेष्ठी, नवदेवता, नंदीश्वर आदि की धातु मूर्तियां भी हैं। ग्राम में शिलाकूट नामक समाधि मंडप भी है।

हलेबेल्गोल

यह ग्राम श्रवणबेलगोल से सात किलोमीटर उत्तर में है। यहां एक ध्वस्त जैनमंदिर है जो होयसल शिल्प का नमूना है। गर्भ-

गृह में लगभग पौन मीटर ऊंची खड्गासन प्रतिमा है। कुछ खंडित प्रतिमाएं भी हैं।

साणेहिल्ल

यह गांव श्रवणबेलगोल से ५ कि० मी० के फासले पर है। यहां एक ध्वस्त मंदिर है। इसे गंगराज की भावज जक्किमब्बे ने निर्मित कराया था।

हासन

यह श्रवणबेलगोल से ५३ कि० मी०, मैसूर से १२० कि० मी० और बंगलौर से १६० कि० मी० है। यहां कोई १०० जैन घर हैं। दो मंदिर हैं। धर्मशाला नहीं है। इक्का-दुक्का यात्री मंदिर के हाल में ही ठहर जाते हैं।

हलबेडू (द्वारसमुद्रम्)

यह हासन से ३४ कि० मी० पर है। यहां सबसे बड़ा मंदिर होयसालेश्वर महादेव का है। उससे लगा हुआ शांतलेश्वर भगवान का मंदिर है, जिसको महाराज विष्णुवर्द्धन की महारानी शांतलादेवी ने प्रारंभ कराया था। पर इसे वह पूरा न करा सकी थीं। इसका शिल्प बहुत उच्च कोटि का है। मंदिर के प्राकार में अजायबघर है जिसमें बड़ी संख्या में कलात्मक मूर्तियां हैं। इस नगर में यत्र-तत्र अनेक छोटे छोटे मंदिरों के अवशेष मिलते हैं।

निकट ही बस्थल्ली गांव में जो कभी द्वारसमुद्रम् का ही

भाग था, जैन मंदिर है। कहा जाता है कि इस नगर में जैन मंदिर बड़ी संख्या में थे जिन्हें नष्ट कर दिया गया। यहां के मंदिर भगवान पार्श्वनाथ, भगवान आदिनाथ और भगवान शांतिनाथ को समर्पित हैं। मुख्य मंदिर में कसौटी पत्थर के खंभे हैं।

बेलूर

हलबेडू से १६ कि० मी०, हासन से ३६ कि० मी० की दूरी पर बेलूर स्थित है। यहां होयसल काल का चन्नाकेशव मंदिर है। यह बहुत विशाल है। मंदिर की कारीगरी उत्तम है। इसे महाराजा विष्णुवर्द्धन ने १११६ ई० में निर्मित कराया था। यहां कई और मंदिर भी हैं।

धर्मस्थल

धर्मस्थल बेलूर से १०५ कि० मी०, हासन से ७० कि० मी० है। मंगलौर से चारमाडी जाने वाली सड़क पर ६४ कि० मी० पर उजरे पड़ता है। वहां से ६ कि०मी० पर धर्मस्थल है। उजरे से २ कि०मी० की दूरी पर नेत्रवती नदी है। यात्री इस नदी में स्नान करके धर्मस्थल को जाते हैं। यहां पर मंजुनाथ स्वामी (शिव का एक रूप) का मुख्य मंदिर है और जैनों का चंद्रनाथ स्वामी (भगवान चन्द्रप्रभ) का मंदिर है। बड़ी संख्या में हिंदू, जैन, मुसलमान और ईसाई इस स्थान पर आते हैं और धर्म का लाभ प्राप्त करते हैं। इस स्थान की बड़ी मान्यता है। क्षेत्र की ओर से विशाल धर्मशालाएं, भोजनशाला है। आस-पास में

क्षेत्र की ओर से कई कालिज, स्कूल, गुरुकुल चल रहे हैं।

यहां के हेग्गाड़े जैन हैं। आजकल इस गद्दी पर श्री वीरेन्द्र हेग्गाड़े हैं। यह क्षेत्र धार्मिक सद्भाव का स्थान है। इस सारे क्षेत्र में श्री हेग्गाड़े का विशेष मान है।

यहां भगवान बाहुबली की १२ मीटर ऊंची प्रतिमा एक पहाड़ी पर विराजमान की गई है। इसका निर्माण कारकल में हुआ था।

मंगलौर

मंगलौर एक बड़ा शहर है। अब यहां पर एक बड़ा बंदरगाह भी हो गया है। कुछ औद्योगिक संस्थाएं भी हैं। यहां के गिरजाघर देखने योग्य हैं। संट एलोसियस का गिरजा तो बहुत बड़ा और सुंदर है। छत और दीवारों पर इटली के कुशल कारीगरों द्वारा बनाए उत्कृष्ट भित्ति चित्र हैं।

वेणूर

मंगलौर से ५३ कि० मी० और धर्मस्थल से ३६ कि० मी० की दूरी पर वेणूर है। यह जैनों का प्राचीन केंद्र है। यहां एक जैन धर्मशाला और कई जैन मंदिर हैं। यहां के राजा वीर निम्मराज ने सन १६०४ में भगवान बाहुबली की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी और शांतिनाथ मंदिर का निर्माण कराया था। यहां बड़ी संख्या में सुंदर मूर्तियां हैं।

मूडबिद्री

यह मंगलौर से ३४ कि० मी० और वेणूर से २० कि० मी० दूर है। वेणूर से कारकल जाने वाली बसें जैन धर्मशाला के सामने से गुजरती हैं। इसलिए बस स्टेंड पर न उतरकर धर्मशाला के सामने ही उतर जाना चाहिए। होयसल काल में मूडबिद्री जैनों का प्रमुख केंद्र था। कई राजा जैन धर्म के अनुयायी थे। यहां जैन व्यापारियों आदि का वास था। इस कस्बे में १८ जैन मंदिर हैं। जिनमें त्रिभुवन तिलक चूड़ामणि, जो भगवान चंद्रनाथ (चंद्रप्रभ) को समर्पित है, सबसे बड़ा है। यह सन १४२९-३० में निर्मित हुआ था। सन १४४२ में यहां प्रसिद्ध यात्री अब्दुल रज्जाक का आगमन हुआ था। उसने इसे संसार का सबसे शानदार मंदिर लिखा है। यह मंदिर तीन मंजिला है। नीचे की मंजिल में मूलनायक की पंचधातु की प्रतिमा लगभग पौने तीन मीटर ऊंची है। कतिपय अन्य मूर्तियां भी इस मंदिर में हैं जो अति मनोज्ञ हैं। सामने साढ़े बारह मीटर ऊंचा मानस्तंभ है। यहां छोटे-बड़े तथा उत्कीर्ण कुल मिलाकर १००० खंभे हैं।

गुरु बसदि में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की विशाल मूर्ति है। सिद्धांत बसदि में 'षटखंडागम' आदि की ताड़पत्र पर प्रतियां हैं तथा ३५ मूर्तियां हीरा-पन्ना आदि रत्नों की हैं। इनके दर्शनों के लिए पहले कहना पड़ता है और एक भेंट भी देनी होती है। अन्य मंदिरों में भी मनोज्ञ प्रतिमाएं हैं। संध्या को आरती के समय चित्ताकर्षक रोशनी की जाती है।

मूडबिद्री में भट्टारक गद्दी भी है। वर्तमान भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी महाराज क्षेत्र की उन्नति की ओर ध्यान दे

रहे हैं। यहां साहू शान्ति प्रसाद जैन द्वारा स्थापित श्री रमा रानी जैन रिसर्च इंस्टीट्यूट भी है। इस संस्था द्वारा साहित्यिक शोध कार्य को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। पांडुलिपियों का एक विशाल भंडार है।

कारकल

मंगलौर से ५३ कि० मी० और मूडबिद्री से १६ कि० मी० दूर कारकल अतिशय क्षेत्र है। यहां भट्टारक जी का मठ है। उसी में धर्मशाला है जो बस स्टैंड से एक किलोमीटर के फासले पर है। सामने श्राविकाश्रम है। पानी का कुंआ है। थोड़ी दूर पहाड़ी पर बाहुबली स्वामी की १३ मीटर ऊंची प्रतिमा है। इस मूर्ति का निर्माण सन १४३२ में कारकल नरेश वीर पांडव ने कराया था। यहां के भैरव ओड़िया वंश के राजा जैन थे। सन १३३४ में कुमुदचंद्र भट्टारक के द्वारा बनवाए शांतिनाथ मंदिर को महाराजाधिराज लोकनाथ रस की बहनों ने दान दिया था। शक सं १५८८ में इम्मडिभैरवराज ने 'चतुर्मुख बसदि' नामक विशाल मंदिर बनवाया था। इस मंदिर में चारों ओर द्वार हैं। यहां लगभग साढे छः मीटर ऊंची १२ प्रतिमाएं विराजमान हैं।

कारकल में कुल मिलाकर २३ जैन मंदिर हैं।

वारांग

वारांग कारकल से २५ कि० मी० दूर है। यह छोटा सा कस्बा है। इस क्षेत्र का प्रबंध हुमचा के भट्टारक जी के हाथ में है।

बस स्टैंड से थोड़ी दूर पर जैन मठ और धर्मशाला है। धर्मशाला में केवल एक दालान है। यहां तीन मंदिर हैं। एक मंदिर एक तालाब में है जो जल मंदिर कहलाता है। इसमें लगभग एक मीटर ऊंची चौमुखी प्रतिमा है। इस मंदिर तक छोटी नाव द्वारा जाते हैं।

कुंदकुंदबेट्ट (कुंद्राद्रि पर्वत)

परंपरानुसार यहीं से भगवान कुंदकुंदाचार्य विदेह क्षेत्र में गए थे और वहां पर ८ दिन तक भगवान सीमंधर के समवसरण में धर्म का साक्षात श्रवण किया था। वारांग से १६ कि० मी० पर सोमेश्वर नामक स्थान है। वहां से २४ कि० मी० लंबी ओगंबे घाटी शुरू होती है। इस घाटी में छोटी बसें (१४ सवारी वाली) ही जाती हैं। १० कि० मी० जाने पर ओगंबे पहुंचते हैं जहां से बड़ी बसें चलती हैं। शिमोगा वाली सड़क पर १० कि० मी० जाने पर गुडडकेरी गांव पड़ता है (शिमोगा से आने वाले गुडडकेरी आते हैं)। यहां पर ठहरने का कोई स्थान नहीं है।

गुडडकेरी से जंगल के रास्ते १० कि० मी० (६ कि० मी० समतल और फिर ४ कि० मी० पहाड़ी) पैदल। कोई सवारी या मजदूर नहीं मिलते। कुंदकुंद स्वामी के चरण बने हैं। यहां दो गुफाएं भी हैं। एक तालाब है। जिसका जल पीने के काम भी आता है। बिजली लगी है। धर्मशाला है, पर न होने के बराबर है।

रास्ते में कई मोड़ आते हैं। सारा रास्ता निर्जन है। कभी-कभी आदिवासी लोग हंसिया आदि लिए हुए इधर-उधर आते-

जाते दिखाई दे जाते हैं।

हुमचा (हुंबुज पद्मावती)

गुड्डकेरी से तीर्थ हल्ली २२ कि० मी० है। वहां से सागर जाने वाली सड़क पर ८० कि० मी० पर हुमचा (हुंबुज पद्मावती) क्षेत्र है। यहां पर भट्टारक गद्दी है। वर्तमान भट्टारक स्वस्ति श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज नवयुवक विद्वान हैं।

शिमोगा से यह स्थान कोई ६० कि० मी० पड़ता है। बस से यात्रा करने वालों को ध्यान रखना चाहिए कि जहां पर बस रुकती है वहां ऐसा भास नहीं होता कि यही क्षेत्र है।

यहां का मठ प्राचीन है। वारांग आदि कई स्थान इसी मठ से निर्देश प्राप्त करते हैं। यहां के मठाधिपति कुंदकुंदान्वय के नंदी संघ से संबंध रखते हैं। इस मठ का संबंध कई महान आचार्यों से रहा है। जिनमें आचार्य समंतभद्र, विद्यानंदि, विशालकीर्ति, मुनि नेमिचंद्र प्रमुख हैं।

जैन मठ में रहने की उत्तम व्यवस्था है। यहां पर मुख्य मंदिर पद्मावती का है। इस इलाके में पद्मावती जी की बड़ी मान्यता है। बहुत से लोग उनका आशीर्वाद लेने यहां आते हैं।

पहाड़ी के ऊपर बाहुबली मंदिर है तथा कई मंदिर और भी हैं। हुमचा अतिशययुक्त क्षेत्र माना जाता है। यहां के अतिशय हैं: (१) लक्की का वृक्ष जो सदा हरा रहता है, (२) मुतीन केरे तालाब, (जिसमें सदा जल रहता है), (३) कुमुदवती नदी, जो तुंगभद्रा में मिलती है, यहीं से निकलती है। पहाड़ी में एक छेद से जल निकलता है और गरमी के मौसम में भी पानी बहता है।

इस क्षेत्र द्वारा कई संस्थाएं संचालित हैं।

सागर

हुमचा से ५० कि० मी० सागर है। सह स्थान चंदन के काम के लिए विख्यात है।

जोग (गरसप्पा) जल प्रपात

यह सागर से ३२ कि० मी० दूर है। शरवती नामक नदी लगभग २७५ मीटर की ऊंचाई से गिरती है। इसमें चार प्रपात हो गए हैं—राजा, रोरर, राकेट और रानी। यहां का दृश्य बहुत सुंदर है।

हुबली

सागर से १६० कि० मी० की दूरी पर हुबली है। यहां ठहरने का उचित प्रबंध नहीं है। इसलिए अधिकांश लोग बागलकोट (बादामी से ४१ कि० मी०) में ठहरते हैं। इस इलाके में तीन स्थान—बादामी, ऐहोले और पट्टदकल—प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान हैं।

बादामी

बादामी हुबली से १२८ कि० मी० है। हुबली-शोलापुर लाइन पर बादामी का स्टेशन है जो बादामी शहर से ५ कि० मी० है। यह चालुक्य वंश की राजधानी रहा है। रेलवे स्टेशन से ५ कि० मी० पर बादामी का किला है। चारदीवारी के अंदर कई

मंदिर हैं। किले के सामने पहाड़ी पर गुफाएं हैं। चौथी गुफा जैन गुफा है इसमें भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर और गौतम स्वामी की मूर्तियां है। बादामी, बीजापुर से १६३ कि० मी० है और बस सेवा उपलब्ध है।

ऐहोले

यह बागलकोट (हुबली-शोलापुर रेललाइन पर स्टेशन) से ४६ कि० मी०, बादामी से ४७ कि० मी० और बीजापुर से १२१ कि० मी० है। यहा बहुत प्राचीन मंदिर हैं। लाड खां मंदिर, दुर्गा मंदिर और मेगुती मंदिर प्रमुख है। रविकीर्ति द्वारा रचित पुलकेसिन द्वितीय (निधन वर्ष ६३४ ई०) का प्रसिद्ध शिलालेख मेगुती मदिर में सुरक्षित है।

पट्टकदल

पट्टकदल चालुक्य काल में धर्म, कला और संस्कृति का प्रमुख केंद्र था। यहा कई प्राचीन मदिर है जो कलात्मक हैं। इनमें वीरुपाक्ष मुख्य है। जैन मदिर द्रविड़ कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। पट्टदकल बागलकोट से ६५ कि० मी०, बादामी से २६ कि० मी०, ऐहोले से ७६ कि० मी० तथा बीजापुर से १३० कि० मी० दूर है।

बीजापुर

यहां राम गली में श्रीराम मंदिर के सामने दिगंबर जैन मंदिर है। यहां कोई धर्मशाला नही है। मंदिर में वेदी के सामने एक

खुला बरामदा है। उसी में यात्री स्थान प्राप्त कर लेते हैं। बीजापुर आदिलशाही वंश की राजधानी रहा है। (१५६५ में बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और बीदर ने मिलकर विजय-नगर को परास्त किया था)। यहां कई दर्शनीय स्थल हैं। सबसे प्रमुख 'गोल गुंबज' है जो विश्व में अपना एकमात्र उदाहरण है। इस गुंबज का क्षेत्रफल १८,३७७ वर्ग फुट है और यह ४० मीटर ऊंचा (अंदर का नाप) है। इसमें एक ऐसा भाग है जहां आवाज गूंजती है।

यहां इब्राहीम रोजा, जामा मस्जिद, असर महल आदि यहां के दर्शनीय स्थल हैं।

बाबानगर (सहस्रफणी या चिंतामणि पार्श्वनाथ)

बीजापुर जेल (मंदिर से ढाई कि० मी०) से एक कि० मी० पर दरगाह के पास बाबानगर का जैन मंदिर है। यह पुराना मंदिर है। यह पहले भूगर्भ में था। यहां भगवान पार्श्वनाथ की साति-शय मूर्ति है जिस पर १०८ फण बने हुए हैं।

बीजापुर में मुल्लगशी वेश नामक फाटक के अंदर भी दो जैन मंदिर हैं।

होसपेट-हंपी

उपर्युक्त मार्ग से थोड़ा हटकर होसपेट है। इसके निकट तुंगभद्रा का बांध है। और १३ कि० मी० पर हंपी है। यह गांव है जो पंपापती मंदिर के चारों ओर बस गया है। इसके आस-पास के क्षेत्र में विजयनगर के खंडहर बिखरे पड़े हैं। खंडहरों में कई

दर्शनीय स्थल हैं। ७ मीटर ऊंची नरसिंह की मूर्ति, हजाराराम मंदिर, पट्टभिराम मंदिर, गनि गित्ती (जैन मंदिर) पंपापती (वीरुपाक्ष) मंदिर आदि।

होसपेट, बीजापुर से १४६ कि० मी० तथा हरिहर से ११ कि० मी० दूर है।

कुलपाक

यह अतिशय क्षेत्र हैदराबाद-काजीपेट रेल मार्ग पर है। हैदराबाद से ७९ कि० मी० पर आलेर स्टेशन है। वहां से लगभग ६ कि० मी० पर प्राचीन क्षेत्र है। यहां भगवान आदिनाथ की अतिशयसंपन्न मूर्ति विराजमान थी जो 'माणिक स्वामी' के नाम से विख्यात थी। इस प्रतिमा की चोरी हो गई। अब यहां हरे रंग की एक प्रतिमा विराजमान है। इस समय इस क्षेत्र पर श्वेतांबरों का अधिकार है।

वारंगल

हैदराबाद से १५२ कि० मी० काजीपेट से ११ कि० मी० और विजयवाड़ा से १११ कि० मी० की दूरी पर वारंगल है। स्टेशन से ८ कि० मी० पर वारंगल का विशाल दुर्ग है। दुर्ग में चार जैन मंदिर एवं कतिपय कलापूर्ण वस्तुएं हैं। ऐसा लगता है कि राजधानी बनने से पहले वारंगल बड़ी जैन बस्ती थी।

हानमकोंडा

पद्माक्षी मंदिर में एक तीर्थंकर मूलनायक मूर्ति है। यह ज्ञात नहीं

होता कि मूर्ति किनकी है।

दानवुलापाडू

यह नगर मिट्टी में दब गया था। श्री जे० रमैया पंटूलू ने इसको खोजा और खुदाई कराई। यहां बहुत सी पुरातत्व सामग्री मिली जिनमें दो जैन मंदिर, भगवान पार्श्वनाथ की तीन तीन मीटर ऊंची दो चौमुख मूर्तियां और एक मूर्ति पद्मावती की मिली।

वेमुलावाडा

यहां बने हुए राजेश्वरालय के प्राकार में कई जैन तीर्थंकर मूर्तियां हैं।

बडमनी (वर्धमानपुर)

यहां कई जिनालयों के निर्माण का उल्लेख मिलता है। एक मूर्ति का सिर मिला है। एक पार्श्वनाथ की मूर्ति भूगर्भ से मिली थी।

अडोनी

यहां चट्टानों में जिनमूर्तियां हैं।

गोलकुंडा

किले में कई खंडित जैन मूर्तियां हैं। आस-पास अनेक स्थानों पर अवशेष मिलते हैं।

आंध्र प्रदेश में कई स्थान और हिंदू मंदिर दर्शनीय हैं :

हैदराबाद

यह आंध्र प्रदेश की राजधानी है। चारमीनार, गोलकुंडा, सालारजंग अजायबघर, जवाहर बालभवन आदि दर्शनीय स्थल है। हुसेन सागर, उस्मान सागर और हिमायत सागर विशाल झीलें भी दर्शनीय हैं।

नागार्जुन सागर बांध

यह हैदराबाद से १५० कि० मी० है।

नागार्जुन कोंड

बांध से २४ कि०मी० पर एक टापू पर नागार्जुन कोंड के अवशेष रखे गए हैं।

तिरूपति (बालाजी)

मद्रास से उत्तर-पश्चिम दिशा में १६० कि० मी० पर प्रसिद्ध हिंदू तीर्थस्थान हैं। यहां मनौती मनाने वालों की भीड़ लगी रहती है। प्रति वर्ष करोड़ों रुपए के मूल्य का चढ़ावा आता है।

लेपाक्षी

हैदराबाद (काचीगुडा) बंगलौर रेलमार्ग पर हिंदूपुर स्टेशन है। हिंदूपुर से १६ कि०मी० दूरी लेपाक्षी है। यहां कलात्मक मंदिर हैं

कालाहस्ती, श्रीशैलम्, भद्राचलम्, सिंहाचलम्

इन स्थानों पर भी प्रसिद्ध मंदिर हैं।

महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान

महाराष्ट्र में तीर्थंकरों का विहार निरंतर होता रहा। यहां कई निर्वाण क्षेत्र भी है : गजपंथा, मांगी-तुंगी, कुंथलगिरि आदि। इस प्रदेश में अनेक अतिशय क्षेत्र हैं। एलोरा और धाराशिव की प्रसिद्ध गुफाएं भी इमी प्रदेश में है।

गुजरान म बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के गिरनार में दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणक मनाए गए। गिरनार के अतिरिक्त यहां तारंगा, शत्रुंजय और पावागढ़ सिद्धक्षेत्र भी हैं। चार अतिशय क्षेत्र भी यहां है।

राजस्थान मे अनेक अतिशय क्षेत्र हैं। श्री महावीरजी का क्षेत्र संसार-प्रमिद्ध है। कला-क्षेत्रों में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। आबू पहाड़ पर विश्वप्रसिद्ध देलवाड़ा के मंदिर, रणकपुर का मंदिर उत्कृष्ट कला के उदाहरण हैं। अचलगढ़ में स्वर्ण की तीर्थंकर प्रतिमा है।

नागपुर

नागपुर महाराष्ट्र का अत्यंत प्रमुख एवं भारत का प्रसिद्ध नगर है। यह देश के केंद्र में स्थित है। महाराष्ट्र के पृथक राज्य बनने से पूर्व यह मध्य प्रदेश की राजधानी था।

यहां इतवारा में दिगंबर जैन धर्मशाला है जहां ठहरने की सुंदर व्यवस्था है। नागपुर में कुल १२ दिगंबर जैन मदिर हैं। अन्य दर्शनीय स्थानों में अजायबघर, चिड़ियाघर आदि उल्लेखनीय हैं।

रामटेक

नागपुर से रामटेक बस या रेल द्वारा पहुंचा जा सकता है। यह नागपुर से ४८ कि० मी० दूर है।

बस स्टैंड से लगभग २ कि० मी० की दूरी पर श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र है। यहां एक अहाते में १५ जिनालय बने हैं। मुख्य मंदिर भगवान शांतिनाथ का है। इसमें भगवान शांतिनाथ की पीले पाषाण की लगभग ४ मीटर ऊंची खड्गासन प्रतिमा है। यह प्रतिमा अत्यंत मनोज्ञ है। चरण चौकी जमीन के अंदर है।

कहते हैं कि श्री अप्पा साहब भोसला के राजमंत्री वर्धमान

सावजी श्रावक थे। एक दिन राजा अप्पा साहब रामटेक आए। मंत्रीजी उनके साथ थे। राजा ने श्री रामचंद्र के दर्शन कर भोजन कर लिया परंतु मंत्री वर्धमान ने भोजन नहीं किया। कारण यह था कि उन्होंने देवदर्शन नहीं किए थे। इस पर राजा ने जैन मंदिर का पता लगवाया। काफी खोजबीन के बाद जंगल में झाड़ियों से ढकी हुई एक तीर्थंकर मूर्ति का पता चला। मंत्री उसके दर्शन कर अति आनंदित हुए। फिर उन्होंने वहां कई मंदिर बनवाए।

कहते हैं इस स्थान पर श्री रामचंद्रजी का आगमन हुआ था। एक किंवदंती के अनुसार यह वही स्थान है जिसके सुरम्य वनों का वर्णन महाकवि कालिदास ने अपने 'मेघदूत' में किया है। शासन ने यहां पर्वत पर कालिदास स्मारक बनवाया है।

भातकुली

रामटेक से बस द्वारा कामठी, अमरावती होते हुए यहां पहुंचना चाहिए। (नागपुर से भी अमरावती बस या रेल द्वारा पहुंचा जा सकता है) अमरावती में १४ मंदिर तथा २२ चैत्यालय हैं। भातकुली यहां से १६ कि० मी० की दूरी पर है। यह अतिशय क्षेत्र है। यहां ३ दिगंबर जैन मंदिर तथा दो चैत्यालय हैं। श्री ऋषभनाथजी की प्रतिमा अति मनोज्ञ है। कहते हैं यह प्रतिमा जमीन से निकली थी। इसकी कहानी भी श्री महावीरजी की कहानी से मिलती-जुलती है। जनश्रुति के अनुसार अभिषेक के दूध में यदि ग्वाला जल मिला देता है तो पशु के थन से खून निकलने लगता है। यहां प्रति वर्ष अनेक लोग

मनौती मनाने आते हैं। यहां एक धर्मशाला भी है।

मुक्तागिरि (मेंढागिरि)

भातकुली से अमरावती लौटकर परतवाड़ा (५२ कि० मी०), फिर खरपी (६ कि० मी०) होते हुए मुक्तागिरि जाना चाहिए। अमरावती से मुक्तागिरि की दूरी ६५ कि० मी० है और बसें सुविधापूर्वक मिलती हैं। खरपी से ६ कि० मी० दूर स्थित क्षेत्र को सड़क जाती है।

यहां तलहटी में एक जैन धर्मशाला और एक मंदिर है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य अपूर्व है। तलहटी से डेढ़ कि० मी० की चढ़ाई है। पहाड़ पर सीढ़ियां बनी हुई हैं। कहते हैं कि इस स्थान पर मेंढ देव ने बहुत से मोतियों की वर्षा की थी, इसलिए इसका नाम मुक्तागिरि पड़ा है। वर्षास्थल ४०वें मंदिर के पास है। अधिक उपयुक्त यह जान पड़ता है कि निर्वाण क्षेत्र होने के कारण यह मुक्तागिरि कहलाया। कहते हैं कि इस पर्वत से साढ़े तीन करोड़ मुनि मुक्त हुए। इसलिए यह सिद्ध क्षेत्र माना जाता है।

पर्वत पर ५२ अति मनोज्ञ मंदिर हैं। अधिकांश मंदिर प्रायः १५वीं शताब्दी के या बाद के बने हुए हैं। अचलपुरी के एक ताम्रपत्र में इस पवित्र स्थान पर सम्राट श्रेणिक बिंबसार द्वारा गुफा मंदिर बनवाने का उल्लेख है। अचलपुर (ऐलिचपुर) यहां से १३ कि० मी० है। यहां दसवें नंबर का मंदिर पर्वत के गर्भ में खुदा हुआ है और बहुत प्राचीन है। यही मंदिर 'मेंढागिरि मंदिर' नाम से प्रसिद्ध है। इसमें नक्काशी का काम बहुत

अच्छा है। स्तंभों और छत की रचना अपूर्व है। भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा दर्शनीय है। इस मंदिर के समीप ६०-६५ मीटर की ऊंचाई से पानी की धारा पड़ती है, जिससे एक रमणीय जलप्रपात बन गया है। मंदिर प्रपात के नाले के दोनों ओर बने हुए हैं। मंदिरों की पंक्ति बहुत ही भव्य लगती है। पार्श्वनाथ भगवान का पहला मंदिर भी प्राचीन शिल्प का नमूना है। प्रतिमा सप्तफणमंडित एवं प्राचीन है। जनश्रुति के अनुसार यहां पर निरंतर केशर की वर्षा होती थी।

कारंजा

मध्य रेलवे के मुर्तिजापुर-यवतमाल लाइन पर कारंजा मुर्तिजापुर से ३२ कि० मी० है। अमरावती यहां से ६२ कि० मी० है। अंतरिक्ष-पार्श्वनाथ यहां से मंगलरूलपीर और मालेगांव होकर ६२ कि० मी० है। अकोला जिले में कारंजा व्यापारिक केंद्र और समृद्ध नगर है।

नगर में तीन प्रसिद्ध मंदिर है। अब तो कोई भट्टारक गद्दी नहीं है। पर पहले यहां पर सेनगण, काष्ठा संघ और बलात्कारगण परंपराओं की गद्दियां थी और तीनों मंदिर उनसे संबद्ध थे।

पहला मंदिर श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन सेनगण मंदिर है। गर्भगृह में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। इस मंदिर में पाषाण की ६२ और धातु की ४६ मूर्तियां है। यहां सेनगण के अंतिम भट्टारक वीरसेन की समाधि भी है।

इस मंदिर में ४६८ वर्ष पुरानी पंचकल्याणक चित्रावली है। यह स्वर्णांकित है, सुंदर और कलापूर्ण है। मंदिर के आगे मानस्तभ है और भट्टारकों के सात चरण बने हैं।

चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को यहां रथयात्रा निकलती है। और पद्मावती देवी का मेला लगता है।

दूसरा मंदिर श्री चंद्रनाथ स्वामी काष्ठ संघ दिगंबर जैन मंदिर है। यह मंदिर चवरे लाइन में है। मंडप में भगवान चंद्र-प्रभ की मूलनायक पद्मासन प्रतिमा है। वेदी पर ६ पाषाण और १० धातु मूर्तियां है। पीछे की वेदी पर २६ धातु और ३१ पाषाण मूर्तियां हैं। दाईं ओर के प्रकोष्ठ में मूल्यवान मूर्तियां सुरक्षित है और बाईं ओर पद्मावती देवी की अतिशय-संपन्न मूर्ति है। इसके चमत्कारों की बड़ी ख्याति है। चैत्र सुदी १५ को इसकी यात्रा होती है।

४२ स्तंभ वाला दारु-मंडप (लकड़ी का बना) है जिसमें कलापूर्ण खुदाई है और तलप्रकोष्ठ में भी प्रतिमाएं हैं।

तीसरा मंदिर श्री मूलसंघ चंद्रनाथ स्वामी बलात्कारगण दिगंबर जैन मंदिर है। गर्भगृह में मंडप के नीचे मूलनायक भगवान चंद्रप्रभ की मूर्ति है। वेदी पर ११ धातु और २ पाषाण मूर्तियां है। पीछे की वेदी में २७ पाषाण और २७ धातु प्रति-माएं हैं। शिखर में भगावन महावीर की पद्मासन प्रतिमा है। पीतल के दो सहस्रकूट जिनालय हैं—एक में १००८ मूर्तियां हैं और दूसरे में १७२८ मूर्तियां हैं।

भट्टारक देवेंद्रकीर्ति की चरण-पादुकाएं हैं, इस मंदिर में हस्तलिखित शास्त्रों का अमूल्य भंडार है। १६८१ ग्रंथों में

२५ ताड़पत्र पर हैं।

क्षुल्लक पार्श्वसागर (वर्तमान में आचार्य समंतभद्रजी) की योजनानुसार यहां पर श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित हुआ (इसकी शाखाएं कई स्थानो में हो गई हैं)। इस आश्रम में महावीर जिनालय है। मूलनायक भगवान महावीर की प्रतिमा के अलावा और भी मूतिया हैं। एक कक्ष में संग्रहालय है जहां पर बाहर से लाई गई मूर्तियां सुरक्षित हैं। कई कलापूर्ण शिलाफलक है। ऊपर एक कमरे में २९ प्राचीन मूर्तियां सुरक्षित हैं।

सरोवर के तट पर लगभग डेढ़ कि० मी० का क्षेत्र हिंदू मंदिरों मे सुशोभित है। विश्वास किया जाता है कि इनके निर्माता यादववंशी देवगिरि के राजा रामचंद थे। नगर के मध्य में एक बावड़ी है जो बहुत पवित्र मानी जाती है।

कारजा नृसिंह सरस्वती का जन्मस्थान है। बीसवीं शताब्दी में विशाल मंदिर उनकी स्मृति में निर्माण हुआ जो तीर्थस्थान माना जाता है।

जैन यात्रियों के ठहरने की सुविधा श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम में है।

बाढोणा रामनाथ

कारंजा से २२ कि० मी० है। बस सेवा उपलब्ध है। मंदिर में सामने वेदी पर मूलनायक भगवान आदिनाथ की लगभग सवा मीटर ऊंची प्रतिमा है (सं० १५४८ में प्रतिष्ठित)। यह प्रतिमा अतिशयसंपन्न है। भक्तजन यहां मनौती मनाने आते हैं।

यहां कुछ और भी मूर्तियां और एक पाषाण फलक में बनी प्राचीन चौबीसी भी है।

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ (सिरपुर)

यह अतिशय क्षेत्र कारंजा से मंलगरूलपीर काले गांव (दूरी ८४ कि० मी०) होते हुए सिरपुर पहुंचना चाहिए। सिरपुर, मालेगांव से ७ कि०मी० है। सिरपुर, अकोला से ७४ कि०मी० तथा अकोला जिले में सिरपुर ग्राम में स्थित है। वाशिम रेलवे स्टेशन (खंडवा-पूर्णा लाइन पर) से ३१ कि० मी० है।

अतिशय क्षेत्र और उसके अधिष्ठाता अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भारत भर में प्रसिद्ध है। क्षेत्र की ख्याति तो इस मूर्नि विशेष के विराजमान होने के पहले से थी। जैन कथा साहित्य के आधार पर रामचंद्रजी के समय में भी यह क्षेत्र था। सिरपुर के पार्श्वनाथ की ख्याति ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों से रही है। एक धारणा के अनुसार यहां के मंदिर का निर्वाण चोलवंशी श्रीपाल नरेश ने कराया था। सिरपुर ग्राम के बाहर वह स्थान है, जहां पर राजा श्रीपाल को कुष्ट रोग से मुक्ति मिली। यहां के चमत्कारों की कई कथाएं हैं। यहां उत्खनन में अनेक मूर्तियां आदि प्राप्त हुई।

यह मंदिर गांव के मध्य में एक गली में है। प्रवेशद्वार छोटा है। उसमें झुककर ही जाया जा सकता है। प्रवेश करने पर प्रांगण है। उसके तीन ओर बरामदे हैं। दिगंबर जैन गद्दी, तिजोड़ी आदि यहीं हैं। इस प्रांगण में ऊपर से ही झरोखे द्वारा अंतरिक्ष पार्श्वनाथ के दर्शन होते हैं।

आगन में से सीढ़ियों द्वारा तलघर का रास्ता है। वहां भगवान पार्श्वनाथ की सातिशय और मनोज्ञ लगभग सवा मीटर ऊंची अर्द्ध पद्मासन मूर्ति है। यह मूर्ति भूमि से कुछ ऊपर अधर में स्थित है। नीचे और पीछे कोई आधार नही है केवल बाई ओर मूर्ति का अंगुल भर भूमि से स्पर्श है। नीचे से रूमाल निकल जाता है पर उस कोने पर आकर अटक जाता है। कुछ कथाओं के अनुसार पहले यह प्रतिमा भूमि से बहुत ऊंचाई पर थी।

यहा पर और भो मूर्तियां है। एक जगह भट्टारक देवेंद्र कीर्ति कारजा की गद्दी है। एक ओर वीर सेन की गुरु गद्दी है। पास में भट्टारक विशाल कीर्ति की गद्दी है।

मडप के पीछे दो दिगबर जन धर्मशालाएं हैं जिनमें कुल ३७ कमरे है। बिजली, गद्दे, चादर और बरतनों की सुविधा है। एक कुआ है जिसमें पप लगा है : स्नानगृह भी है।

पवली का दिगंबर जैन मंदिर : सिरपुर गाव के बाहर पवली का दिगबर जैन मदिर है। यह भी चोल नरेश श्रीपाल द्वारा बनाया गया था। यही पर उसका कुष्ट रोग ठीक हुआ था और यही के कुए से उसको अतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति प्राप्त हुई। कहा जाता है कि इस मदिर के शिखर में जो ईटे लगी है वे पानी में तैरती थीं।

गर्भगृह में भगवान पार्श्वनाथ की सवा मीटर ऊंची प्रतिमा विराजमान है। और भी तीर्थकर मूर्तियां, यक्ष, यक्षिणी प्रतिमाए आदि हैं। मदिर अष्टकोण बना है और इसकी रचना-शैली आकर्षक है।

मंदिर के आगे भट्टारक शांतिसेन, भट्टारक जिनसेन आदि की समाधियां बनी हैं।

सामने एक और जिनालय है जिसमें बहुत-सी मूर्तियां है। इस मदिर के पास एक धर्मशाला है जिसमें पांच कमरे है।

शिरड शहापुर

मिरपुर गांव से मालेगांव (१० कि० मी०) मे वाशिम (२० कि० मी०) होकर चौड़ी (वाशिम मे चौड़ी ११४ कि० मी०) पहुंचना चाहिए। चौड़ी से शिरद शहापुर केवल ८ कि० मी० है। हर स्थान पर वस सुविधापूर्वक मिल जाती है।

शिरद शहापुर गांव सड़क के किनारे ही है। यह अतिशय क्षेत्र गांव में ही है। गाव के वाहर आसना नदी वहती है। इस क्षेत्र में भगवान मल्लिनाथ की श्यामवर्ण पद्मासन प्रतिमा एक वेदी पर विराजमान है। प्रतिमा अतिशयसंपन्न है। क्षेत्र के प्रवेश द्वार मे अदर जाने पर दो सहन मिलते है। पहले सहन में कार्यालय और धर्मशाला (१३ कमरे) हैं। दूसरे सहन में जिनालय है। मूलनायक के अतिरिक्त यहा अन्य मूर्तिया भी हैं। भगवान शातिनाथ की श्वेतवर्ण पद्मासन प्रतिमा भी सातिशय मानी जाती है। यहा मंडप और कई वेदिया है।

नदी के दूसरे तट पर भट्टारक देवद्रकीर्ति की समाधि है। (कारंजा में इन्हीं भट्टारक की चरण पादुकाएं है)।

असेगांव (चिंतामणि पार्श्वनाथ)

असेगांव श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र

माना जाता है। यह शिरड शहापुर से २४ कि० मी० है। बस केवल वसुमत तक जाती है जहां से क्षेत्र ८ कि० मी० है। यह दूरी पैदल या बैलगाड़ी से तय करनी होती है। कहते है यहां भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अति चमत्कारी है।

जिंतूर

शिरडशहापुर से बस द्वारा जिंतूर पहुंचना चाहिए। यह शिरड शहापुर से केवल ४५ कि० मी० है। पहले यह नगर जैनपुर कहलाता था। काचेगुडा-मन्माड रेल लाइन पर परभणी स्टेशन से ४२ कि० मी० पर जिंतूर नगर है।

क्षेत्र, जिंतूर नगर से ४ कि० मी० की दूरी पर सहयाद्रि पर्वत पर है। यह श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। क्षेत्र पर एक अहाते में गुफा मदिर है। यहां कुल ६ गुफाए या तल प्रकोष्ट हैं। भगवान नेमिनाथ की लगभग २ मीटर ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। इनके अतिरिक्त यहाँ भगवान पार्श्वनाथ, भगवान वाहुवली आदि की मूर्तियां भी विराजमान है। भगवान पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा पाषाण के एक जरा से टुकड़े पर टिकी है। इसलिए इसे अतरिक्ष पार्श्वनाथ कहते हैं। शिलालेख से पता चलता है कि इन मूर्तियों के प्रतिष्ठाचार्य आचार्य कुमुदचद्र थे। यहां राजुलमती का प्राचीन मदिर भी है।

हिजरी सन ६३१ में इस नगर पर कादरी नामक अफगान ने हमला किया था। उसी ने इसका नाम जिंतूर रखा। तब यहा अनेक जैन मंदिर थे। कादरी ने उनमें से अनेक को नष्ट-

भ्रष्ट किया और कुछ को मस्जिद बना दिया।

संवत १५३२ में वीर संघवी का यहां आगमन हुआ। उन्होंने मंदिरों का जीर्णोद्धार किया। पहले गांव में १४ जैन मंदिर थे, अब दो हैं—(१) साहू का मंदिर (२) महावीर दिगंबर जैन मंदिर। साहू के मंदिर के बाहर धर्मशाला भी है। दोनों मंदिरों में १०२४ मूर्तियां (१०००+२४) हैं।

नवागढ़ (उखलद अतिशय क्षेत्र)

जितूर से बस द्वारा परभणी (४२ कि० मी०) पहुंचकर रेल द्वारा मीरखेल स्टेशन (१६ कि० मी०) पहुंचना चाहिए। मीरखेल स्टेशन से नवागढ़ ५ कि० मी० है। स्टेशन पर कोई वाहन नहीं मिलता है। क्षेत्र के मैनेजर को पहले से सूचना देने पर बैलगाड़ी का प्रबंध हो जाता है।

यह श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र है जिसे उखलद अतिशय क्षेत्र भी कहा जाता है। पहले यह क्षेत्र पूर्णा नदी के तट पर उखलद में था। पूर्णा नदी नवागढ़ से डेढ़ कि० मी० की दूरी पर बहती है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य अपूर्व है। लगभग ५० वर्ष पूर्व बाढ़ के कारण मंदिर नष्ट हो गया। तब नवागढ़ में मंदिर बनवाकर मूर्तियों को वहां प्रतिष्ठित किया गया। एक विशाल अहाते (लगभग १२०×१०० मी०) में मंदिर, धर्मशाला, रथशाला आदि का निर्माण कराया गया। धर्मशाला में ३५ कमरे हैं। बिजली की व्यवस्था है। एक कुआं भी है। मंदिर में मूलनायक रूप में भगवान नेमिनाथ की लगभग डेढ मीटर (आसन सहित) ऊंची अर्द्ध-पद्मासन प्रतिमा है।

एक अनुश्रुति के अनुसार जब यह मूर्ति उखलद में विराजमान थी, इसके पैर के अंगूठे में पारसमणि लगी हुई थी। तत्कालीन मुसलमान शासक ने जब उसे लेना चाहा तो वह स्वयं छिटक कर नदी में जा पड़ी।

इस अतिशय क्षेत्र पर प्रतिवर्ष माघ सुदी ५ से ७ तक मेला लगता है। इस अवसर पर रथ यात्रा निकलती है। जिसमें लगभग ४-५ हजार व्यक्ति सम्मिलित हो जाते हैं।

औरंगाबाद

मीरखेल स्टेशन से औरगाबाद १९४ कि० मी० है। यह भारत का प्रसिद्ध औद्योगिक एवं ऐतिहासिक नगर है। बबई से यह रेल मार्ग द्वारा ३७६ कि० मी० तथा सड़क द्वारा ४०० कि० मी० है। बंबई औरंगाबाद के बीच वायुसेना की उपलब्ध है।

औरगाबाद नगर में भी कई दर्शनीय स्थल है। समीपस्थ इलाके में अजना गुफाए, एलोरा की गुफाएं, दौलताबाद का किला विख्यात पर्यटक केंद्र है। औरंगाबाद में चार मुख्य जैन मदिर है। (१) सर्राफा बाजार में शान्ति मंदिर (२) सर्राफा बाजार में जैन मदिर जिसमें कई प्राचीन जैन मूर्तियां हैं, (३) किराना बाजार में खंडेलवाल जैन मंदिर और (४) सेतवालों का मदिर। एक सवाई दिगबर जैन मंदिर भी है जिसमें कुल मिलाकर १६६ मूर्तियां और एक पीतल का सहस्त्रकूट जिनालय है।

स्टेशन से ५ कि० मी० दूर शाहगंज बस स्टेशन की बगल में ही चंद्रसागर दिगंबर जैन धर्मशाला है जिसके सामने घंटाघर और सरदार पटेल की मूर्ति है।

औरंगाबाद की गुफाएं : यहां औरंगजेब की बेगम का मकबरा ताजमहल की शैली पर बना बीबी का मकबरा दर्शनीय है। इसके पीछे—शहर से ५ कि० मी० पर गुफाएं हैं। चढ़ाई कठिन है। रास्ते में निपट निरंजन महादेव का मंदिर है जिनके नाम पर इनको 'निपट निरंजन गुफाएं' भी कहते हैं। ये कुल बारह गुफाएं हैं। ये गुफाएं बौद्ध गुफाएं कहलाती हैं। बाईं ओर की प्रथम गुफा में भगवान अरहनाथ की लगभग दो मीटर ऊंची पद्मासन मूर्ति विराजमान है। अंतिम गुफा में बाह्य स्तंभों पर जैन देवियां उत्कीर्ण हैं। पृष्ठ भाग के समूह में एक गुफा में पद्मासन तीर्थंकर मूर्ति है। रोशनी के लिए टार्च और पीने के लिए पानी साथ ले जाना चाहिए।

दौलताबाद (प्राचीन देवगिरि)

मुहम्मद तुगलक ने जब दिल्ली से बदल कर दक्षिण मे राजधानी बनानी चाही तो यह स्थान चुना। उसने देवगिरि का नाम बदलकर दौलताबाद रख दिया। यह स्थान औरंगाबाद से १५ कि०मी० दूर है। यहां का किला अति प्रसिद्ध है। यह बहुत पुराना किला है। कोई १००० वर्ष पुराना यह किला गढ़निर्माण के उत्कृष्ट नमूनों में माना जाता है। यहां पर एक विशाल जैन

मंदिर भी बना था। इस मंदिर को तुगलक के समय में मस्जिद बना दिया गया। बहुत सा भाग ध्वस्त हो चुका है। बचे भाग में अब भारतमाता का मंदिर है। इस मंदिर की अनेक मूर्तियां स्तंभ आदि बिखरे पड़े हैं। १९ जैन मूर्तियां पद्मासन या कायोत्सर्गासन हैं में। किले को एक दीवार में भी एक जैन मूर्ति विराजमान है। यह किला और इसके भिन्न-भिन्न स्थान (शिल्प-संग्रह, हाथी हौज, भारतमाता मंदिर, मीनार, मेढ़ा तोप, खाई आदि) दर्शनीय हैं।

एलोरा

ये जगत विख्यात गुफाएं और गुहा मंदिर औरंगाबाद से ३० कि० मी० है। एलोरा ग्राम (वर्तमान नाम वेरुल) गुफाओं से डेढ़ कि० मी० दूर है। बस कैलाश नामक गुहा मंदिर के सामने रुकती है। यहां पर उप गुफाएं, गुहा मंदिर हैं। जिनमें १२ (नं० १ से १२ तक) बौद्ध धर्म की गुफाएं हैं, १७ (नं० १३ से २९ तक) हिंदू (शैव) धर्म की हैं और ५ (नं० ३० से ३४ तक) जैन धर्म की हैं।

जैन गुहा मंदिरों में तीर्थंकरों की और तरह-तरह की मूर्तियां बनी हुई हैं। कई गुफाएं दो मंजिल हैं। छोटा कैलाश, इंद्रसभा और जगन्नाथ नाम की जैन गुफाओं में उत्कृष्ट कला देखने को मिलती है।

गुफा नं० ३० अधबनी है। इसकी प्रतिमाएं खड्गासन हैं। इसी में से एक फर्लांग चलकर इसी गुफा का दूसरा भाग मिलता है जहां एक स्तंभ में एक विशाल खड्गासन मूर्ति है। दुंदुभि-

वादक पुष्प वर्षा करते हुए देव दिखाई देते हैं। बहुत सी मूर्तियां हैं। एक ढाई मीटर ऊंची अलंकार धारण किए हुए इंद्र की नृत्यमुद्रा में मूर्ति है। इस गुफा को छोटा कैलास कहते हैं।

गुफा नं० ३१ छः स्तंभों पर आधारित मंडप है। यहां दो मीटर की भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा है। देवी-देवताओं, यक्षों आदि की मूर्तियां भी हैं। एक प्रतिमा बाहुबली की है जो लगभग २ मीटर ऊंची है।

गुफा नं० ३२ को इंद्रसभा कहते हैं। यह दो मंजिला है। और यहां की जैन गुफाओं में सबसे बड़ी है। छतों में भी चित्र-कारी है जो अपने वैशिष्ट्य के कारण प्रसिद्ध है। यहां अनेक मूर्तियां आदि हैं। भगवान पार्श्वनाथ की एक साढे तीन मीटर ऊंची प्रतिमा दीवार में है। एक कोष्ठक में साढ़े तीन मीटर ऊंची बाहुबली स्वामी की प्रतिमा है। यह स्थान कलाकृतियों से भरा पड़ा है। ऊपर की मंजिल का मंडप दो स्तंभों पर आधारित है। यहां अनेक मूर्तियां हैं। ढाई मीटर ऊंची अर्द्ध-पद्मासन प्रतिमाएं हैं।

गुफा नं० ३३ और गुफा नं० ३४ कलाकृतियों से भरी हैं। गुफा नं ३३ में भगवान पार्श्वनाथ की साढ़े तीन मीटर ऊंची मूर्ति है। यह गुफा दोमंजिला है। इसी गुफा से गुफा नं० ३४ में जाते हैं।

हिंदू गुफाओं में कैलास सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। शिल्प और वास्तुकला का यह एक उत्कृष्ट नमूना है। शायद इस प्रकार का इतना बड़ा गुहामंदिर कहीं और नहीं है।

सारी गुफाएं ३ कि० मी० के क्षेत्र में हैं।

पार्श्वनाथ मंदिर : गुफा नं० ३ से एक चौड़ा कच्चा मार्ग पहाड़ी से ऊपर गया है। उस आधा कि० मी० पर पार्श्वनाथ मंदिर है। मेन रोड पर घृष्णेश्वर मंदिर की बगल से भी एक कच्चा मार्ग इस मंदिर को जाता है। मंदिर आधुनिक है, प्राचीन मंदिर के स्थान पर बनाया गया है। पांच मीटर ऊंची भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति है। यह मंदिर गुफाओं से अलग एकान्त में बना है। इस पर्वत को चारणाद्रि या कनकाद्रि कहते हैं।

दर्शन के बाद लगभग ८ सीढ़ियां उतरकर एक गुफा है जिसमें यक्ष-यक्षियों की मूर्तियां हैं। फिर एक खाली गुफा मिलती है। इसके आगे एक छोटी गुफा मिलती है जिसमें जलकुंड बना हुआ है। इसके दाएं-बाएं तीर्थंकर मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। फिर जल से भरी एक गुफा मिलती है।

फिर एलोरा (वेरुल) ग्राम है। यह क्षेत्र कहलाता है। यहां पर श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल है जिसे १९६२ में आचार्य समंतभद्रजी की प्रेरणा से मुनिवर्य आर्य नंदिजी के तत्वावधान में स्थापित किया गया था। छात्रावास, विद्यालय-भवन, अतिथि-गृह एवं निर्माणाधीन जिनालय आदि हैं। गुरुकुल कारंजा के आश्रम की शाखा के रूप में कार्य कर रहा है।

अजंता

औरंगाबाद से एक दूसरी दिशा में १०३ कि० मी० की दूरी पर जगतप्रसिद्ध अजंता की गुफाएं हैं। जलगांव से यह स्थान

५६ कि० मी० है। (जलगांव मनमांड से १६० कि० मी० और बम्बई से ४२० कि० मी० है।)

अर्द्ध-चंद्राकार पहाड़ी पर ३० गुफाएं हैं (कुछ अधबनी हैं)। इनमें से ५ (नं० ६, १०, १६, २६ और २६ को चैत्य की संज्ञा दी जाती है और बाकी को विहार की)। यों तो सभी में कुछ न कुछ विशेषता है पर गुफा नं० १, २,६, १०, १६, १७, १६ और २६ औरों से अधिक महत्वपूर्ण है। गुफा न० १, २, १६, १७ और १६ में प्रसिद्ध चित्र हैं।

यहां गाइड मिल जाते हैं। भित्तिचित्र देखने के लिए बिजली की रोशनी कराई जा सकती है जिसका शुल्क देना होता है।

पैठण

औरंगाबाद से दक्षिण की ओर ५१ कि० मी० पर पैठण (प्राचीन नाम प्रतिष्ठान) है। यह भगवान मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र है। क्षेत्र पर पहुंचकर मुख्य द्वार के बाद दाईं ओर विशाल मंदिर है। मूलनायक भगवान मुनिसुव्रत नाथ के नाम पर ही मंदिर का नामकरण हुआ है। क्षेत्र गोदावरी नदी के निकट ऊंचाई पर है। मदिर दो मंजिला है और संपूर्ण मदिर का जीर्णोद्धार हो चुका है। यहीं मूलनायक के अतिरिक्त ५० मूर्तियां हैं।

यहां भगवान मुनिसुव्रत की बड़ी मान्यता है। जैन और जैनेतर भाई बड़ी संख्या में कल्याण लाभ के लिए यहां आते हैं।

क्षेत्र पर चार धर्मशालाएं हैं जिनमें ३० कमरे हैं। बिजली

नल, बरतन और थोड़े से बिछौनों का भी प्रबंध है।

आष्टा

आष्टा नाम के कई गांव हैं। यह 'कासार आष्टा' के नाम से जाना जाना है। प्राचीन काल में यहां कसार जैनों के बहुत से घर थे। यह अनिशय क्षेत्र है। इसका पूरा नाम 'श्री दिगंबर जैन विघ्नहर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कासार आष्टा' है।

यहां के लिए औरंगाबाद से जल दुर्ग होते हुए बस सेवा है। यह. उस्मानाबाद से ५१ कि० मी० और शोलापुर से ६४ कि० मी० है। शोलापुर से एक बस शाम को ५ बजे चलती है। और वही बस आष्टा से सुबह ८ बजे शोलापुर जाती है। यह क्षेत्र शोलापुर-हैदराबाद नेशनल हाईवे पर स्थित ओसगा-गांव से ५ कि० मी० है।

अतिशय के कारण यहां बहुत से भक्त आते हैं। यहां धर्म-शाला नहीं है। मंदिर के प्रांगण में दो बरामदे हैं जिनमें यात्री ठहर जाते हैं। दो कमरे हैं जो रसोई आदि के काम आते हैं। बिजली है, कुआ है। बरतन भी मिल जाते हैं।

शोलापुर

शोलापुर महाराष्ट्र का प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक नगर है। यहां जैनों की अच्छी आबादी है। यहां से नेमचंद हीराचंद की एक विशाल धर्मशाला है। यह दिगंबर जैन श्राविकाश्रम के सामने है। इसके अतिरिक्त एक धर्मशाला शुक्रवार पेठ में है

तथा एक धर्मशाला कासारि (चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर) में है। शोलापुर में कुल ८ दिगंबर जैन मंदिर हैं। इनमें से दो शुक्रवार पेठ में, एक कासगी में, एक श्राविकाश्रम में, एक भुसारि में तथा एक उसके सामने (सेठ सखारामजी का मंदिर) है। यहां अनेक दिगंबर जैन संस्थाएं हैं।

सावरगांव

शोलापुर से सूरतगढ़ (२५ कि० मी०) होते हुए सावरगांव पहुंचा जा सकता है। शोलापुर से सूरतगढ़ के लिए काफी बसें चलती हैं। सूरतगढ़ से सावरगांव (५ कि० मी०) के लिए बैलगाड़ी से यात्रा की जा सकती है। रोज शाम को ५ बजे शोलापुर से एक बस सावरगांव जाती है। जो अगले दिन सुबह को वापस आती है।

सावरगांव के मध्य में श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र है। मंदिर में तीन वेदियां, खेलामंडप, और दो मरणस्तंभ हैं। भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति अतिशयसंपन्न है। मंदिर के अहाते में कमरे बने हैं। इनमें यात्री ठहरते हैं। बिजली की व्यवस्था है तथा एक कुंआ भी है।

उस्मानाबाद (धाराशिव की गुफाएं)

शोलापुर से उस्मानाबाद ६५ कि० मी० है। सीधी बस सर्विस है। यहां दो दिगंबर जैन मंदिर हैं। सेठ नेमचंद वालचंद गांधी मंदिर में धर्मशाला भी है। इसमें ५ कमरे हैं। जल-बिजली की व्यवस्था है।

उस्मानाबाद से ५ कि० मी० की दूरी पर प्रसिद्ध धाराशिव की गुफाएं हैं। ये लक्षण कहलाती है। ये गुफाएं पर्वत में हैं। गुफाओं की संख्या ८ है। इनमें चार उत्तराभिमुख है और चार दक्षिणाभिमुख। दोनों गुफा वर्गों के मध्य में शिवगुरु का मंदिर है। गुफा मंदिर पर्वत को काटकर बनाए गए हैं। उत्तराभिमुख गुफाओं और उनकी मूर्तियों की दशा अपेक्षाकृत अच्छी है। गुफाओं में कोठरियां बनी है। और जल टपकता रहता है।

कहते हैं तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के संघ में चंपा के राजा करकुंड यहां दर्शनार्थ आए थे। उन्होंने उस पुरातन गुफामंदिर का जीर्णोद्धार किया था जिनका निर्माण नील-महानील नामक विद्याधर राजाओं ने कराया था। करकुंड ने एक-दो नए गुफा मंदिर भी बनवाए थे। पुरातत्त्व वेता इन गुफामंदिरों का निर्माणकाल ५वीं से ८वीं शताब्दी मानते हैं। ये गुफाएं अत्यंत कलात्मक हैं। यहां लगभग दो मीटर अवगाहना वाली भगवान पार्श्वनाथ की अर्द्धपद्मासन प्रतिमाएं हैं। साथ ही अन्य प्रतिमाए हैं। दक्षिणाभिमुख गुफाओं में मूर्तियां नहीं हैं, केवल पार्श्वनाथ की एक जीर्ण मूर्ति है।

तेर

उस्मानाबाद से १९ कि० मी० की दूरी पर श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र तेर है। यह वार्शी टाउन से ४९ कि० मी० है। यह क्षेत्र तेर गांव से बाहर वाटर वर्क्स के सामने है। गांव में दिगंबर जैनों का एक भी घर नहीं है। पुजारी गांव में रहता है। दर्शन के लिए उससे चाबी लानी पड़ती है। यहां के अतिशय

की अनेक कहानियां हैं। यह भी कहा जाता है कि यहां के मंदिर में जिन ईंटों को प्रयोग में लाया गया है वे पानी में तैर जाती हैं।

यहां एक अहाते के अंदर दूसरा अहाता है। उसमें प्रवेश करने पर एक ओर हेमाड़पंथी महावीर मंदिर है, दूसरी ओर हेमाड़पंथी पार्श्वनाथ का मंदिर है। पहले मंदिर में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की लगभग पौने दो मीटर ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। दोनों ही मंदिरों की दशा खराब है। कहते हैं कि यहां भगवान महावीर का समवसरण आया था।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार यहां नल और नील का आगमन हुआ था। राजा करकुंड भी यहां आया था।

यहां धर्मशाला नहीं है। इसलिए उस्मानाबाद में ही ठहरना चाहिए।

कुंथलगिरि

कुंथलगिरि उस्मानाबाद से सड़क मार्ग द्वारा ५२ कि० मी० है। यहां येडशी या वार्शी टाऊन से भी पहुंचा जा सकता है। येडशी से यह ४० कि० मी० तथा वार्शी टाऊन से ५८ कि० मी० पड़ता है। भूम नामक स्थान को जाने वाली बसें कुंथलगिरि की धर्मशाला के सामने रुकती हैं। जो भूम होकर नहीं जाती वे सरमगुंडी (कुंथलगिरि फाटा) रुकती हैं। यहां से कुंथलगिरि ३ कि० मी० रह जाता है। यहां से भी बस मिलती है।

कुंथलगिरि सिद्ध क्षेत्र है। यहां से कुलभूषण एवं देवभूषण मुनि मुक्त हुए थे। यहां एक पहाड़ी पर सात मंदिर हैं—

(१) कुलभूषण-देशभूषण का मंदिर, (२) शांतिनाथ मंदिर, (३) बाहुबली मंदिर (लगभग साढ़े पांच मीटर ऊंची खड्गासन प्रतिमा), (४) आदिनाथ मंदिर, (५) अजितनाथ मंदिर, (६) चैत्य, (७) नंदीश्वर जिनालय। शांतिनाथ मंदिर के पास ही आचार्य शांतिसागर जी के चरणचिह्न स्थापित हैं। यहीं उनका समाधिमरण हुआ था।

तलहटी में चार मंदिर हैं—(१) नेमिनाथ मंदिर, (२) महावीर मंदिर, (३) रत्नत्रय मंदिर, (४) समवसरण मंदिर।

यहां दो धर्मशालाएं हैं जिनमें ५२ कमरे है। बिजली-बर्तनों आदि की सुविधा उपलब्ध है। इस क्षेत्र में एक गुरुकुल भी है।

पंढरपुर

मीरज-कुर्डवाड़ी रेल मार्ग पर पंढरपुर स्टेशन पड़ता है। यह मीरज से १४७ कि० मी० तथा कुर्डवाडी से ५३ कि० मी० है। यह हिंदुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां श्री विठोबाजी का मंदिर है।

कोल्हापुर

कोल्हापुर महाराष्ट्र का प्रमुख व्यापार केंद्र है। यह बंबई, पूना आदि से रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा है। कुथलगिरि से येडशी (४० कि० मी०) या कुर्डवाड़ी (५८ कि० मी०) होते हुए, वहां से मीरज होकर कोल्हापुर पहुंचा जा सकता है। मीरज से यह ४८ कि० मी० है। यहां अनेक दर्शनीय जैन मंदिर हैं, यथा :

शाहीपुरी का जैन मंदिर, गंगावेश हुआर्ड का मंदिर, पार्श्वनाथ मान स्तंभ जैन मंदिर, नेमिनाथ दिगंबर जैन मंदिर एवं मंगलवार पेठ के मंदिर। यहां पर भट्टारक लक्ष्मीसेन और भट्टारक जिनसेन के भट्टारक पीठ भी हैं।

लक्ष्मीसेन मठ शुक्रवार पेठ में है। यहां ६ मीटर ऊंची भगवान आदिनाथ की प्रतिमा है। जिनालय भी है। यहां से 'रत्नत्रय' नामक मराठी पत्र प्रकाशित होता है और लक्ष्मीसेन दिगंबर जैन ग्रंथमाला की पुस्तकें भी। नेमिनाथ का मंदिर, जो मंगलवार पेठ में है, के बारे में अनुश्रुति है कि षटखंडागम का अंतिम भाग यहीं पर लिखा गया था। इसी परिसर में एक जैन त्रिकुट चैत्यालय था। यह अब हिंदुओं के अधिकार में है और रंक भैरव कहलाता है। गंगावेश मंदिर में एक सहस्र वर्ष प्राचीन शिलाहारवंशीय दो शिलालेख हैं।

महालक्ष्मी और ज्योतिमंबा के मंदिर, महाराजा के महल और रंकाला झील आदि कोल्हापुर के अन्य दर्शनीय स्थल हैं।

बाहुबली (कुंभोज)

यह दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र है। यह दक्षिण मध्य रेलवे की मीरज-कोल्हापुर लाइन पर हातकलगणे स्टेशन से ६ कि० मी० है। क्षेत्र का नाम बाहुबली है। (वहां से २ कि० मी० पर कुंभोज नामक नगर है)। मीरज से सड़क द्वारा भी जा सकते में। कोल्हापुर से यह २७ कि० मी० पड़ता है।

अनुश्रुति है कि कई शताब्दी पूर्व मुनि बाहुबली विहार करते हुए यहां पधारे और एकांत देखकर एक गुफा में तपस्या

के लिए ठहर गए। कई-कई दिन के बाद वे आहार के लिए उठते थे। इस इलाके में जैन कृषक काफी संख्या में थे और उनकी स्त्रियां उनका भोजन लेकर खेत पर जाती; वे ही मुनिवर को आहार दे देती थीं। उनके नग्न रूप को देखकर कुछ शरारती युवक मुनिवर को परेशान करने लगे। मुनिराज पहाड़ी पर लौट गए। एक व्याघ्र आकर चुपचाप उनके सामने बैठ गया। शरारती युवक जब वहां पहुंचे तो समझ गए कि वह तो 'पहुंचे हुए संत हैं।

मुनिराज बाहुबली के चमत्कारों की और भी कथाएं हैं। उनकी स्मृति स्वरूप उनके चरणचिह्न यहां अंकित हैं।

प्रवेशद्वार में घुसने पर एक ओर दो धर्मशालाएं, यांत्रिक विद्यालय, अतिथि निवास और विद्यापीठ के गुरुजनों के निवास है। और दूसरी ओर प्रतीक्षागृह, छात्रावास, विद्यालय भवन और क्रीड़ा क्षेत्र है। ५० सीढ़ियों के बाद मार्बल का चबूतरा है जहां भगवान बाहुबली की ९ मीटर ऊंची श्वेत संगमरमर की भव्य प्रतिमा है (इसकी प्रतिष्ठा सन् १९६३ में हुई थी)। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रतिमाएं एवं मंदिर भी हैं।

यहां पर आचार्य समन्तभद्रजी विराजमान हैं। उनके आशीर्वाद से क्षेत्र पर इतना विकास हुआ और हो रहा है।

मंदिरों के पास से पहाड़ी पर रास्ता जाता है। ३८६ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंचते हैं। क्षुल्लिका पार्श्वमती, अम्मा मुनि वर्धमान सागर और एक अन्य मुनि के चरण बने हुए हैं। एक धर्मशाला भी है।

यहां पहले चार दिगंबर जैन मंदिर थे। वे गिरा दिए गए

हैं और उनके स्थान पर नए मंदिरों का निर्माण हो रहा है। इन मंदिरों के उत्तर की ओर श्वेतांबर मंदिर बना हुआ है। इस क्षेत्र पर बाहुबली स्वामी की ढाई मीटर ऊंची खंडित प्रतिमा है। तलहटी के मंदिरों से पौना कि० मी० दूर प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर है। जिसमें भगवान आदिनाथ, नेमिनाथ और महावीर की अत्यंत मनोज्ञ प्रतिमाएं हैं। एक मुनि गुफा भी है जहा आचार्य शांतिसागर और अन्य मुनियों ने तपस्या की थी।

यहां श्री बाहुबली ब्रह्मचर्याश्रम चल रहा है (यह करजा ब्रह्मचर्याश्रम के बाद स्थापित हुआ है)। यह क्षुल्लक समंतभद्र (अब आचार्य समंतभद्रजी) की लगन का श्रीफल है। उनकी प्रेरणा से एलोरा, खुरई, शोलापुर, कुथलगिरि, बागेवाडी, तेरडाल और कारकल में भी ऐसे आश्रम चल रहे है (उनके द्वारा स्थापित ११ गुरुकुल और ४ हाई स्कूल भी चल रहे हैं)। बाहुबली आश्रम मे लगभग ७०० विद्यार्थी है। कला, विज्ञान और वाणिज्य विषयों की शिक्षण व्यवस्था है। एक टेक्निकल स्कूल भी है जहां लगभग बारह सौ विद्यार्थी है। ट्रस्ट की ओर से कन्नड़ और मराठी भाषा में 'सन्मति' नामक पत्र निकलता है।

लोनावला—कारला

बंबई से पूना मार्ग पर बंबई से १२८ कि० मी० पर लोनावला पहाड़ी क्षेत्र है। सुदर है। यहां से पूना की ओर ८ कि० मी० पर कारला की गुफाए हैं। ये गुफाए एक पहाड़ी पर है और इनका संबंध बौद्ध धर्म से है। मुख्य गुफा चैत्य है जो भारत का

सबसे बड़ा चैत्य है। यह ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का बताया जाता है। इसका ४० मीटर लंबा, १४ मीटर चौड़ा और १५ मीटर ऊंचा हाल है। इसकी छतें लकड़ी के खंभों पर आधारित हैं। यह एक दर्शनीय स्थल है।

पूना

बंबई से लोनावला, कारला होते हुए पूना (पुणे) १९२ कि० मी० है। यह बड़ा शहर और प्रमुख औद्योगिक केंद्र है। यहां पर कई दर्शनीय स्थल हैं। पुणे से १०२ कि० मी० पर पंचगनी नामक पर्वतीय पर्यटक स्थल है। पंचगनी में बहुत से स्कूल हैं। पंचगनी से १० कि० मी० पर महाबलेश्वर नामक प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल है जो समुद्रतल से १४०० मीटर की ऊंचाई पर है। यहां जून से अक्तूबर तक आवागमन नहीं होता।

कुंडल (कलिकुंड पार्श्वनाथ)

यह पूना-सतारा-मीरज रेल मार्ग पर किरलोस्कर वाड़ी से ५ कि० मी० दूर है। सडक मार्ग से सांगली से ५१ कि० मी०, कराड से २० कि० मी० और तास गांव से २९ कि० मी० है। किरलोस्कर वाडी से तांगे आदि सवारी भी मिलती हैं।

इस स्थान का प्राचीन नाम कौंडिन्यपुर था। कहते हैं कि यहां के राजा को असाध्य रोग हो गया था। उनकी रानी ने भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति तैयार कराकर पूजा की। इस पर उनका रोग दूर हो गया। तब से यह मूर्ति अतिशययुक्त मानी जाती है। इस मूर्ति के अभिषेक के लिए जिस गांव से दही आता

था उसका नाम दह्यारी पड़ा। जिस गांव से दूध आता था उसका दुधारी, जिस गांव से कुंभ (नारियल) आता था कुंभार और जिस गांव से फल आते थे, उसका फलस। ये गांव अब भी इस क्षेत्र के निकट हैं।

यहां पर बहुत से विद्वानों का वास रहा है। बहुत से विद्वानों का यहां निरंतर आना-जाना होता रहा है। आचार्य समंतभद्र भी यहां पधारे थे।

कुछ वर्ष पूर्व घर की खुदाई में दसलाद नामक सज्जन को तीन ताम्रशासन पत्र प्राप्त हुए थे। एक राजपूत नरेश गोविंद द्वितीय द्वारा दान से संबंधित है। दूसरे में पुलकेसिन विजयादित्य द्वारा दिए गए दान का उल्लेख है। तीसरे में कदंबवंशी मयूरवर्मन द्वारा दिए गए दान का जिक्र है। इस ताम्रपत्र में यापनीय संघ के उत्पत्ति के सबंध में विस्तृत जानकारो मिलती है।

इस नगर में कलिकुंड पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ की लगभग डेढ मीटर ऊंची प्रतिमा है। इसके अतिरिक्त अन्य मूर्तियां भी हैं। सेठ शिवलाल भाई प्रेमचंद लेंगरेकर (बारामती) ने अपना मकान क्षत्र को दान कर दिया है। इस मकान को धर्मशाला वना दिया गया है। इसमें कई कमरे हैं और तीन ओर खुले बरामदे है। बाथरूम, नल, बिजली आदि की व्यवस्था है।

झरी पार्श्वनाथ

कुंडल गांव से २ कि० मी० पहाड़ी पर प्राकृतिक गुफा है जिसमें

भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति है। और भी कई मूर्तियां हैं। यहां जलकुंड भी है। कुछ ऊपर चढ़कर एक ओर गुफा है। उसमें एक हाल और छोटी गुफा है जिसमें राम, सीता, हनुमान की मूर्तिया है। पहाड़ के सामने ४० कि० मी० पर कृष्णा नदी बहती है।

गिरि पार्श्वनाथ

झरी पार्श्वनाथ के पहाड़ से ४ कि० मी० पहाड़ पर चलने पर दूसरा पहाड़ आता है। वहां सपाट स्थान में चरण चिह्न बने हैं। इसमें सप्तफणी पार्श्वनाथ विराजमान है। अनुश्रुति है कि भगवान महावीर का समवसरण यहां आया था। उसी की स्मृति स्वरूप चरणचिह्न बने हैं। थोड़ा आगे भगवान पार्श्वनाथ का एक छोटा मंदिर है।

दहीगांव

यह दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र नातेपुत्ते और बालचंद नगर के मध्य अवस्थित है। यह नातेपुत्ते से ६ कि० मी० और बालचंद नगर से १३ कि० मी०, बारामती रेलवे स्टेशन से ३५ कि० मी० और लोणंद से ६५ कि० मी० है। पंढरपुर-नीरा से भी ६५ कि० मी० है। इस नाम के कई स्थान हैं। इसलिए यह याद रखना जरूरी है कि तीर्थ दहीगाव वही है जो नातेपुत्ते बालचंद नगर मार्ग पर है।

लगभग १२५ वर्ष पूर्व यहां महतीसागर पधारे थे। उन्हीं की प्रेरणा पर यहां जिनमंदिर का निर्माण हुआ। इससे पूर्व यहां

कोई मंदिर नहीं था। फिर ब्र० जी० की समाधि निर्माण के बाद उनकी चरण-पादुका विराजमान कराई गई लोक विश्वास है कि इनके दर्शन से मनोकामना पूर्ण हो जाती है। इस मान्यता के आधार पर यह क्षेत्र कालांतर में अतिशय क्षेत्र बन गया।

मंदिर की मुख्य वेदी में पौने दो मीटर ऊंची भगवान महावीर की पद्मासन प्रतिमा मूलनायक प्रतिमा के रूप में विराजमान है। इसकी प्रतिष्ठा संवत १९१० में हुई थी। इस वेदी पर धातु की ५० मूर्तियां भी विराजमान हैं।

गर्भग्रह, कमरों, प्रकोष्ठों और तलघर में बहुत सी प्रतिमाएं हैं। सभामंडप के अतिरिक्त यहां शास्त्रभंडार भी है। एक गुरुकुल भी चल रहा है।

यहां २ धर्मशालाएं हैं जिनमें ५० कमरे हैं। भोजन, नल, बिजली और बिस्तरों की सुविधा है।

मांगी-तुंगी

यह एक प्रमुख पावन सिद्धक्षेत्र है। यहां से रामचंद्रजी, हनुमान, सुग्रीव, नील, महानील और असंख्य मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया। जैन मान्यतानुसार नारायण श्रीकृष्ण का अंतिम-संस्कार उनके बड़े भाई बलराम जी ने यहीं पर किया था। तदनंतर संन्यास लेकर यहीं पर उन्होंने तप किया। भीषण दुर्भिक्ष की आशंका से संघ सहित दक्षिण की ओर जाते समय आचार्य भद्रबाहु यहां पधारे थे। इस घटना की स्मृति में एक गुफा में यहां पर उनकी ध्यानस्थ मूर्ति विराजमान है।

एक पहाड़ के दो शिखर हैं : एक मांगी और दूसरा तुंगी।

क्षेत्र तारावाद से १० कि० मी० की दूर है। यहां केवल बैल-गाड़ी से पहुंचा जा सकता है । सड़क ४ कि० मी० पक्की है, फिर कच्ची। बंबई की ओर से आने वाले नासिक से सटाणा (८० कि० मी०) और वहां से तारावाद (८० कि० मी०) या धूलिया से पीपलनेर होते हुए तारावाद (८० कि० मी०) पहुंचते हैं।

क्षेत्र की तलहटी में धर्मशाला है जिसमें ३५ कमरे हैं। पानी, बिजली की व्यवस्था है। वर्तन, गद्दे, आदि भी मिल जाते हैं। वहीं पर तीन मंदिर हैं—दो के मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ हैं और एक के भगवान आदिनाथ । इस स्थान से ३ कि० मी० पर मुल्हेड़ है। किसी समय यह एक बड़ा नगर था जिसमें जैनों के ८०० घर थे। उस समय पहाड़ी पर चढ़ना बहुत कठिन था। इसलिए बहुत से यात्री मुल्हेड़ की धर्मशाला में ठहरकर वहीं पर पूजनादि करके संतोष प्राप्त कर लेते थे। अब मूल्हेड़ साधारण कस्बा रह गया है ।

तलहटी के मंदिरों के पीछे एक किलोमीटर कच्चे मार्ग से चलकर सीढ़ियां शुरू होती हैं। दोनों शिखरों पर जाने के लिए २९६० सीढ़ियां हैं। कुछ सीढ़ियां चढ़ने पर दो गुफाएं मिलती हैं जो शुद्ध-बुद्ध जी की गुफाएं कहलाती हैं। इन दोनों में तीर्थंकर प्रतिमाएं विराजमान हैं। कई प्रतिमाएं दीवार में भी उत्कीर्ण हैं।

आगे बढ़कर पाषाण द्वार है। दाई और का समतल मार्ग तुंगी को जाता है और बाईं ओर का सीढ़ियों का मार्ग मांगी को। यात्री पहले मांगी के दर्शन करते हैं।

मांगी शिखर पर दो तथा तुंगी शिखर पर एक गुफा हैं। इनको पलस्तर कराकर या टाइल लगवाकर मंदिरों का रूप दे दिया गया है। इन दीवारों में मुनियों, महंतों एवं तीर्थंकरों की ६०० मूर्तियां हैं। तलहटी में तीन मंदिर हैं। मंदिरों के चारों ओर धर्मशालाएं हैं। कुछ आदिवासियों की सूचना के अनुसार मांगी-तुंगी शिखरों के पीछे जंगल में अनेक जैन मूर्तियां बिखरी पड़ी हैं।

चांदवड़ (गुफा मंदिर)

मांगी-तुंगी से मनमाड़ जाते हुए रास्ते में चांदवड़ पड़ता है। मध्य रेलवे के मनमाड़ और लासलगांव स्टेशनों से बस चांदवड़ जाती है। मांगी-तुंगी मार्ग पर सताणा पड़ता है। वहां से चांद-वड़ ४० कि० मी० है। बस सेवा उपलब्ध है।

ग्राम से पूर्व की ओर थोड़ी दूर पर पहाडी के मध्य में श्री चंद्रनाथ दिगंबर जैन गुफा के नाम से एक गुफा है। यहां मूल-नायक प्रतिमा भगवान चंद्रनाथ (चंद्रप्रभ) की है। कई तीर्थंकर मूर्तियां भी हैं। शिलाफलकों पर भी तीर्थंकर प्रतिमाएं, चौवीसी आदि हैं।

ग्राम में नवनिर्मित दिगंबर जैन मंदिर है, जिसमें मूल-नायक प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की है। बाजार में एक विशाल दिगंबर जैन धर्मशाला है।

ग्राम में श्वेतांबरों के भी दो मंदिर हैं।

गजपंथा

चांदवड़ से सताणा पहुंचकर गजपंथा पहुंचा जा सकता है।

गजपंथा क्षेत्र नासिक-डिंडोरी रोड पर महसरूल नामक गांव ही है।

गजपंथा सिद्ध क्षेत्र है। यहां से सात बलभद्र और असंख्य यादव मुक्त हुए। नासिक से महसरूल गांव ६ कि० मी० है। नासिक रोड रेल स्टेशन से यह १६ कि० मी० है। महसरूल गाव में उत्तर की तरफ धर्मशाला है और जैन मंदिर भी हैं। परकोटे में कार्यालय आदि हैं। धर्मशाला में ६५ कमरे हैं। बिजली, पानी, स्नानगृह, शौचालय हैं। गद्दे आदि मिलते हैं। दूकान से आवश्यक सामान भी मिल जाता है और गांव भी निकट ही है।

मंदिर के पास से ही पर्वत पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां हैं। सीढ़ियां प्राय: ६० सें० मी० ऊंची और खड़ी हैं। पर्वत पर चढ़कर एक फाटक आता है। उसमें घुसते ही बलभद्रों के चरणों के दर्शन होते हैं। एक नवनिर्मित जिनालय है जिसमें भगवान पार्श्वनाथ की तीन मीटर ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। और पार्श्वनाथ गुफा है। गुफाएं, मंदिर, पेनल, मूर्तियां हैं। इसके निकटस्थ लगभग २०-२५ कि० मी० क्षेत्र में जैन पुरातत्त्व की सामग्री बड़ी मात्रा में है।

गुफाओं को इस क्षेत्र में लेनी कहते हैं। यह क्षेत्र इसलिए वहां पर 'चाम्मार लेनी' के नाम से प्रसिद्ध है। प्राइमरी स्कूल की पुस्तकों में भी यही नाम आता है।

पांडवलेनी

गजपथा से १६ कि० मी० पर पांडवलेनी (गुफाएं) हैं। यह

स्थान भी रमणीक है। गुफा नं० १० सबसे बड़ी है। गुफा नं० ११ में भगवान महावीर की एक मीटर ऊंची मूर्ति है।

अंजनेरी

गंजपंथा से त्र्यंबक रोड पर १६ कि० मी० दूर अंजनेरी क्षेत्र है। पर्वत पर दो गुफाएं हैं। मूर्तियां हैं। पर्वत के नीचे गांव में पहले बहुत से जैन मंदिर थे। उनके भग्नावशेष बिखरे पड़े हैं। यहां की मूर्तियों को लोग उठाते गए। अब यहां एक शेड के नीचे लगभग डेढ़ मीटर ऊंची पद्मासन तीर्थंकर प्रतिमा रखी है। यह शेड सड़क के किनारे ही है। एक मंदिर में १२वीं शताब्दी का शिलालेख भी है।

नासिक

अंजनेरी क्षेत्र से नासिक पहुंचकर वहां के दर्शनीय स्थलों को देखना चाहिए। नासिक हिंदुओं का परम पावन तीर्थ है। यह गोदावरी के तट पर है। बनवास की अवधि में रामचंद्रजी, लक्ष्मणजी और सीताजी ने यहां वास किया था। यहां पर लगभग १०० धर्मशालाएं, होटल, डाक बंगला आदि है। हर बारह साल बाद जब बृहस्पति कुंभराशि में होते है, यहां पर कुंभ का मेला लगता है। बालाजी का मंदिर, गोदावरी तट, पंचवटी, पांडव लेनी (८ कि० मी०), त्र्यंबक (३० कि० मी०) रामचंद्रजी का मंदिर (८ कि० मी०) आदि दर्शनीय स्थान हैं।

बंबई

नासिक से बंबई पहुंचना चाहिए। बंबई महाराष्ट्र की राजधानी तथा भारत का प्रमुख नगर है। सी० पी० टोंक पर हीराबाग दिगंबर जैन धर्मशाला है। उसके निकट ही कालबादेवी में सुखानंद दिगंबर जैन धर्मशाला है। हीराबाग धर्मशाला में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी का कार्यालय है। भूलेश्वर, कालबादेवी रोड, गुलाल बाड़ी, बोरीवली में दिगंबर जैन मंदिर है। चौपाटी पर सेठ घासीराम पूनमचंद का कांच का चैत्यालय तथा हीराचंद गुमानजी का चैत्यालय दर्शनीय हैं।

बंबई में बहुत-से दर्शनीय स्थान हैं।गेट वे ऑफ इंडिया, (और समुद्र का दृश्य), ताज होटल, प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, जहांगीर आर्ट गेलरी, राजाबाई टावर, तारपोरवाला मछली-घर (चर्नी रोड स्टेशन के पास), चौपाटी, हैंगिंग गार्डन, चिड़ियाघर, जूहूबीच (समुद्रतट), कन्हेरी गुफाएं (बोरीवली स्टेशन से लगभग १ कि० मी० दूर १०० गुफाओं का समूह), एलीफेंटा की गुफाएं (बंबई से समुद्र द्वारा ११ कि० मी०), आदि।

पोदनपुर (बोरीवली)

यह बंबई का उपनगर है। यह बंबई सेंट्रल रेल स्टेशन से लोकल ट्रेन द्वारा ३० कि० मी० है। स्टेशन से नेशनल पार्क २ कि० मी० है। उसी पार्क में गांधी स्मारक से कुछ आगे चलकर भगवान आदिनाथ बाहुबली दिगंबर जैन मंदिर, पोदनपुर है।

इसे स्थानीय बोलचाल में तीनमूर्ति मंदिर भी कहा जाता है। यहां भगवान आदिनाथ की मूर्ति १० मीटर ऊंची और उसके दोनों तरफ भरत चक्रवर्ती और भगवान बाहुबली की मूर्तियां ५-५ मीटर ऊंची मूर्तियां हैं।

इन मूर्तियों के पृष्ठ भाग में २४ वेदियों में २४ तीर्थंकरों के दर्शन मिलते हैं। कई आचार्यों के चरण भी विराजमान हैं। अपनी भव्यता के कारण यह स्थान एक क्षेत्र ही हो गया है।

सूरत

यह पश्चिम रेलवे का प्रमुख स्टेशन है और बंबई से २६३ कि० मी० दूर है। ताप्ती नदी के एक ओर सूरत और दूसरी ओर रांदेर है। पहले सूरत एक प्रसिद्ध बंदरगाह था। अब यह प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्र है।

सूरत में सात दिगंबर जैन मंदिर हैं। नवपुरा में चार, गोपीपुरा में एक (जिसमें भट्टारकों की गद्दी है), चंदावाड़ी के पास दो और रांदेर में एक (जो सूरत के दंडिया मंदिर की शाखा है)। दंडिया मंदिर नवपुरा में है। इसके अतिरिक्त नवपुरा में तीन मंदिर ये हैं—गुजरातियों का मंदिर, मेवाड़ा मंदिर और चौपड़ा मंदिर।

सूरत और रांदेर में कभी जैनियों की काफी संख्या थी और काफी मंदिर थे। मुसलमानों द्वारा यहां के मदिरों को काफी क्षति पहुंचाई गई। कई के स्थान पर मस्जिद भी बना ली गई।

विद्यानंदि क्षेत्र

यह अत्यंत रमणीय स्थान है। यह सूरत से ३ कि० मी० दूर है। यहां पृथक वेदियों पर ८२ भट्टारकों और मुनियों के चरण-चिह्न विराजमान हैं। चरण चिह्नों के मध्य में आचार्य शांति-सागर और भट्टारक विद्यानंद की मूर्तियां विराजमान हैं। यहां एक मानस्तंभ भी है, जिसमें ऊपर जाने के लिए २७ सीढ़ियां हैं। शीर्ष वेदिका में चारों ओर मुंह किए चार तीर्थंकर मूर्तियां हैं। क्षेत्र पर पांच कमरों वाली एक धर्मशाला है जिसमें बिजली-पानी की सुविधा है। यहां चैत्र, वैशाख और कार्तिक में पूर्णिमा को मेले लगते हैं। एक मेला मार्गशीर्ष कृष्णा १० (भट्टारक विद्यानंद का समाधिमरण दिवस) को भी लगता है।

महुआ (विघ्नहर पार्श्वनाथ)

यह अतिशय क्षेत्र है। सूरत जिले से बारडोली स्टेशन से १५ कि० मी० दूर यह पूर्णा नदी के तट पर स्थित है। बाडरोली, नवसारी और सूरत से बस सेवाएं हैं। यह सूरत से ४४ कि० मी० दूर है। गर्भगृह में भगवान पार्श्वनाथ की अतिशय-संपन्न प्रतिमा है। यहां पर हिंदू भी बड़ी संख्या में मनौती मनाने आते है तथा गाजे-बाजे के साथ नारियल आदि चढ़ाते हैं।

इस क्षेत्र को तीन बार भीषण आग और बाढ़ का सामना करना पड़ा। यहां दो मंदिर (चंद्रप्रभ और पार्श्वनाथ) थे

जिनमें लकड़ी पर सुंदर नक्काशी का काम था। यह तो अधिकांश नष्ट हो गया, कुशल है कि किसी मूर्ति को क्षति नहीं पहुंची।

मंदिर के नवनिर्माण का काम चल रहा है। विघ्नहर पार्श्वनाथ की मूर्ति भंवरे में ही विराजमान है। चंद्रप्रभ मंदिर की मूर्तियां एक कमरे में विराजमान हैं। आशा है निर्माण-कार्य पूरा होने पर यह एक भव्य एवं विशाल तथा सुरक्षित मंदिर होगा।

मंदिर के निकट धर्मशाला है। इसमें अधिकांश मंदिरों का सामान रखा है जिसमें कुछ लेखांकित लकड़ी के खंड भी हैं। धर्मशाला में बिजली है, कुआं है और निकट ही पूर्णा नदी है।

अमीझरो पार्श्वनाथ

अमीझरो पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र है। अहमदाबाद-खेडब्रह्मा रेल मार्ग पर वडाली स्टेशन है। वडाली ग्राम में दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र अमीझरो पार्श्वनाथ है।

वडाली ग्राम में एक प्राचीन मंदिर है। इसमें अमीझरो पार्श्वनाथ की लगभग १ मीटर अवगाहना की मूलनायक प्रतिमा है। मंदिर के भीतर बावड़ी और धर्मशाला है।

वड़ाली हिम्मतनगर से ४८ कि० मी० और ईडर से १४ कि० मी० है। ईडर के आस-पास कई अतिशय क्षेत्र अथवा मंदिर उपेक्षित दशा में हैं। ईडर से ५ कि० मी० पर मुडेठी ग्राम में प्राचीन शिखरबद जिनालय है जिसमें चिंतामणि पार्श्व-नाथ की बड़ी मनोज्ञ प्रतिमा है। टाकाटूू और वोईडा के बीच

जंगल में नदी के किनारे आदीश्वर भगवान का शिखरबंद प्राचीन मंदिर है।

अंकलेश्वर

सूरत और बड़ौदा (बड़ोदरा) के बीच में अंकलेश्वर स्टेशन है। स्टेशन से अंकलेश्वर ग्राम १ कि० मी० है। बड़ौदा से अंकलेश्वर ७६ कि० मी० है।

नगर में चार दिगंबर जैन मंदिर हैं। यहां भोंयरे में भगवान पार्श्वनाथ की अतिशयसंपन्न मूर्ति है। यह चिंतामणि पार्श्वनाथ के नाम से विख्यात है। आम धारणा है कि इनके दर्शन से समस्त चिंताएं दूर हो जाती हैं। यहां पर जैन और जैनेतर बंधु भारी संख्या में मनौती मनाने जाते हैं।

पारगामी आचार्य धरसेन ने अंगश्रुत का विच्छेद हो जाने की आशंका से उस ज्ञान को सुपात्र विद्वानों को देना चाहा। पुष्पदंत और भूतबलि ने उनसे ज्ञान प्राप्त किया। तत्पश्चात इन दो साधूओं ने पहला चातुर्मास अंकलेश्वर में किया। वहीं पर इन दोनों मुनियों ने श्रुत के प्रचार की योजना बनाई। इस प्रकार अंकलेश्वर पुष्पदंत और भूतबलि की चरण-रज से पवित्र हुआ था।

अंकलेश्वर एक अच्छा नगर है। यहां चार दिगंबर जैन मंदिर हैं। चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर (जिसके भोंयरे में भगवान पार्श्वनाथ की अतिशयसंपन्न प्रतिमा है), नेमिनाथ मंदिर, आदिनाथ मंदिर और महावीर मंदिर। महावीर मंदिर बड़ा मंदिर कहलाता है।

नगर में एक दिगंबर जैन धर्मशाला है। आवास, नल, बिजली की सुविधा है।

सजोद

अंकलेश्वर से ८ कि० मी० पश्चिम की ओर है। यहां प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर है। इसके भोंयरे में भगवान शीतलनाथ की अतिशययुक्त प्रतिमा विराजमान है। गांव में माघ कृष्ण १४ को महादेव का मेला होता है। इसी अवसर पर इस मंदिर पर भी ध्वाजारोहण होता है। मंदिर में जैनों के अतिरिक्त हिंदू, भील आदि भी दर्शनार्थ आते हैं। अंकलेश्वर के चिंतामणि पार्श्वनाथ की ओर से यहां की व्यवस्था होती है।

यहां कोई धर्मशाला नहीं है। मंदिर के कुएं का जल भी खारा है। प्राय: यात्री यहां दर्शन कर अंकलेश्वर लौट जाते हैं।

पावागढ़ (पावागिरि)

अंकलेश्वर से बड़ौदा पहुंचकर बस द्वारा पावागढ़ पहुंचा जा सकता है। पश्चिम रेलवे के वड़ौदा-रतलाम मार्ग पर स्थित चांपानेर स्टेशन से पावागढ़ के लिए छोटी लाइन भी जाती है। पावागढ़ सिद्धक्षेत्र माना जाता है। यहां से रामचंद्रजी के दो पुत्र (लव और कुश) और असंख्य तापसों ने मुक्ति प्राप्त की थी। यहां एक दिगंबर जैन धर्मशाला है जो स्टेशन और बस स्टैंड दोनों जगहों से बराबर फासले (एक कि० मी०) पर है। एक मंदिर और मानस्तंभ धर्मशाला के अंदर है। धर्मशाला के बाहर भी एक मंदिर है।

प्राचीन काल में पावागढ़ (तत्कालीन नाम पावागिरि) अति प्रसिद्ध तीर्थ था। तलहटी में चांपानेर नगर बसाया गया था। पहाड़ पर दुर्ग था। सूचनापट्ट के अनुसार यह १२ कोस लंबा शहर था। नगर के चारों ओर कोट बना था जिसका कुछ भाग अब भी है। काल विशेष में इस नगर के राजा ने ५२ जिनालय बनवाए थे। पर्वत पर भी कुछ जैन मंदिर और भवन बनवाए गए थे।

प्राचीन काल में यहां १७ गढ़ थे, जिनके भग्न द्वार अब भी विद्यमान हैं। पर्वत पर ४ कि० मी० तक पक्की सड़क है। इतनी दूरी तक टैक्सी आदि जाती हैं। लाज, रेस्तरां, गेस्ट-हाउस आदि भी हैं। काली देवी के मंदिर के कारण यहां हिंदू यात्री भी भारी सख्या में आते हैं। नगाड़खाना पार कर एक कि० मी० की दूरी पर पहाड़ के शिखर पर एक विशाल ताल है। कुछ आगे तीन जैन मदिर हैं, जिनमें बहुत सी प्रतिमाएं हैं, निकट ही चौथा मदरि (चंद्रप्रभ मंदिर) है। इस मंदिर के सामने तेलिया तालाब के किनारे एक भग्न मंदिर है। इसकी बाह्य भित्तियों पर तीर्थंकर मूर्तियां अंकित हैं। आस-पास कई जिनालयों के खंडहर है।

एक कच्चा मार्ग तीन प्राचीन मंदिरों के लिए जाता है, जिनमें अनेक प्रतिमाएं हैं।

क्षेत्र पर तीन धर्मशालाएं (६८ कमरे) हैं। पास ही पोस्ट आफिस और बाजार है। यहां का प्राकृतिक दृश्य बहुत रमणीय है। जलप्रपात और नदी के दृश्य अति मनोरम लगते हैं।

अहमदाबाद

पावागढ़ से बड़ौदा होते हुए अहमदाबाद पहुंचा जा सकता है।

अहमदाबाद गुजरात राज्य का मुख्य नगर है। यह अत्यंत समृद्ध नगर है। वस्त्र उद्योग का प्रमुख केंद्र है। स्टेशन के समीप रेवाबाई धर्मशाला में सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। एक नई धर्मशाला चोखावाज़ार में प्याऊ के पास बन गई है। यहां कई दर्शनीय स्थान हैं—फोर्ट सिद्दी सय्यद की जाली, एम० जे० लाइब्रेरी, हरिजन आश्रम, हठीसिंह का मंदिर (श्वेतांबर मंदिर इसमें पत्थर की कटाई बड़ी कलापूर्ण है), सारंगपुर में सिद्दी बशीर मस्जिद की हिलती मीनारें, गांधी स्मारक आदि भी दर्शनीय हैं।

मोढेरा

यहां पर सूर्यमंदिर है। इसकी वास्तुकला और शिल्पकला उच्चकोटि की है। यह अहमदाबाद से १०० कि० मी० उत्तर-पश्चिम में है।

घोघा

अहमदाबाद से भावनगर पहुंचकर घोघा जाना चाहिए। यह भावनगर से लगभग १४ कि० मी० है। अब तो घोघा साधारण नगर है पर खंडहरों से इसकी समृद्धि का अनुमान सहज हो जाता है। यह खंबात की खाड़ी के तट पर है।

इस नगर में दिगंबर समाज के दो जिनालय हैं। दोनों दो

खंड वाले हैं। नगर के मध्य में भगवान आदिनाथ मंदिर है। इसमें प्रवेश करते ही सामने पीतल के सहस्त्रकूट जिनालय (ऊंचाई लगभग एक मीटर) के दर्शन होते है। कई और मूर्तियां भी हैं। पाषाण की मूर्तियों पर समुद्र की क्षारयुक्त वायु का दुष्प्रभाव पड़ता है। उसी कंपाउंड में भगवान आदिनाथ का दूसरा मंदिर है। नगर में तीन श्वेतांबर मंदिर भी हैं।

मंदिर के निकट एक धर्मशाला है जिसमें क्षेत्र का कार्यालय है। यात्री यहां के दर्शन करके प्रायः भावनगर लौट जाते हैं।

पालीताणा-शत्रुंजय

पालीताणा भावनगर से २६ कि० मी० है। बस सेवाओं का जाल सा फैला हुआ है। सेवाएं सुविधाजनक हैं। रेल द्वारा सीहोर पहुंच कर सीहोर-पालीताणा ब्रांच लाइन से भी पालीताणा पहुंचते हैं। यहां शत्रुंजय गिरि निर्वाण क्षेत्र है। यहां से तीन पांडव (युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन) तथा असंख्य राजादि मुक्त हुए थे।

नगर में दिगंबर जैन मंदिर हैं। भैरवपुरा मुहल्ले में दिगंबर जैन धर्मशाला है। इसमें ४० कमरे हैं। नल, बिजली है। अल्प संख्या में गद्दा, रजाई भी मिल जाती हैं। बरतन आदि भी उपलब्ध हैं। बाजार निकट ही है।

नगर से शत्रुंजय पहाड़ी की तलहटी डेढ़ कि० मी० है। फिर पर्वत की चढ़ाई लगभग ४ कि० मी० है। पक्की सड़क और सीढ़ियां हैं।

श्वेतांबर आमनाय में शत्रुंजय की मान्यता अन्य सभी

तीर्थों से अधिक है। यह पहाड़ एक प्रकार से जैन मंदिरों का गढ़ है। श्वेतांबर समाज के लगभग ३५०० मंदिर और मंदरियां हैं। कई मंदिरों का शिल्प और स्थापत्य अनूठा है।

इस पर्वत पर दो मुख्य टोंक हैं। प्रथम टोंक पर कोई दिगंबर मंदिर नहीं है। दूसरी टोंक पर श्वेतांबर मंदिरों के केंद्र में परकोटे के भीतर एक प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर है। इसमें नौ बेदियां हैं।

पर्वत पर श्वेतांबर मंदिरों में आदीश्वर, कुमारपाल, विमलशाह, संप्रति नरेश के मंदिर विशेष उल्लेखनीय हैं।

सोनगढ़

सोनगढ़ आध्यात्मिक संत श्री कानजी स्वामी के कारण एक महत्वपूर्ण स्थान और तीर्थ क्षेत्र जैसा श्रद्धा तीर्थ बन गया है। यहां बड़ी संख्या में भक्तजनों का आगमन होता रहता है। सोनगढ़ पालीताणा से २२ कि० मी०, भावनगर से २८ कि० मी० और सीहोर से १६ कि० मी० है। सड़क पक्की है। रेलवे स्टेशन से सोनगढ़ डेढ़ कि० मी० है।

गिरिनार से आने वालों को जूनागढ़ (जूनागढ़ से २५ कि० मी०) जैतलसर, ढसा होकर धौला (जेतलसर से १०३ कि० मी०) उतर कर २१ कि० मी० सड़क यात्रा ठीक रहती है। कुल १४६ कि० मी० पड़ता है। अहमदाबाद की ओर से बोटाड होते हुए धौला (२१८ कि० मी०) पहुंच सकते हैं। अहमदाबाद सड़क द्वारा भावनगर पहुंच सकते हैं। रास्ते में भावनगर से पहले सीहोर से सोनगढ़ जा सकते हैं।

यहां का श्री महावीर कुंदकुंद दिगंबर जैन परमागम मंदिर दर्शनीय है। भगवद् कुंदकुंदाचार्य के समयसार, नियमसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय और अष्टपाहुड ग्रंथों को सवा मीटर लंबी और लगभग पौन मीटर चौड़ी ४८८ पाटियों पर उत्कीर्ण कराकर लगाया गया है। यहां सीमंधर स्वामी दिगंबर जैन मंदिर, समवसरण मंदिर, स्वाध्याय मंदिर और विशाल मान-स्तंभ भी दर्शनीय हैं।

दो धर्मशालाएं और गेस्ट हाउस हैं। धर्मशालाओं में ४६ कमरे हैं। बिजली है। २५० व्यक्तियों के लिए गद्दे आदि का भी प्रबंध है। भोजन की उत्तम व्यवस्था है।

गिरनार

गिरनार बहुत महत्व का तीर्थ क्षेत्र है। आचार्य वीरसेन ने धवला टीका में इसे मंगल-क्षेत्र माना है। इस क्षेत्र में बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के तीन कल्याणक—दीक्षा, केवल-ज्ञान और निर्वाण हुए हैं।

सोनगढ़ से जूनागढ़ के लिए सीधी बस सेवा है। गिरनार, जूनागढ़ से केवल ५ कि० मी० है। जूनागढ़ में बंडीलाल दिगंबर जैन कारखाना नाम से क्षेत्र का कार्यालय है। इसी में मंदिर और मानस्तंभ भी है। यहीं बड़ी धर्मशाला है। धर्म-शाला से कुछ दूर चलने पर पहाड़ पर चढ़ने की सीढ़ियां शुरू हो जाती हैं। ४४०० सीढ़ियां चढ़कर पहली टोंक है। यहां पर ४ दिगंबर जैन मंदिर और दिगंबर जैन धर्मशाला (६ कमरे) हैं। निकट ही राजुल गुफा है। कहा जाता है कि

राजुलमती ने यहीं तपस्या की थी। गुफा अंधेरी है और बैठ कर जाना पड़ता है। फिर १०६ सीढ़ी चढ़कर गोमुख कुंड आता है। वहां पर दीवार में २४ चरण बने हुए हैं (यहां से एक रास्ता सहस्राम्र वन को १४६६ सीढ़ियों द्वारा जाता है। आमतौर पर लौटते समय यात्री इस ओर जाते हैं।

गोमुख से आगे खंगार का किला और अनेक श्वेतांबर मंदिर हैं। पहली टोंक से १०० सीढ़ी चढ़कर अनिरुद्ध कुमार की टोंक और निकट में अंबादेवी का मंदिर है (यह मंदिर अब हिंदुओं के अधिकार में है)। फिर ७०० सीढ़ी चढ़कर शंभुकुमार की टोंक और उसके बाद २५०० सीढ़ी चढ़ कर पांचवी टोंक भगवान नेमिनाथ की है। यहां हिंदू साधु बैठे रहते हैं (चौथी टोंक प्रद्युम्नकुमार की है। उसके लिए सीढ़ी नहीं है और चढ़ाई कठिन है। स्त्री, बालक और वृद्धों के लिए जोखिम का रास्ता है)।

इस प्रकार भगवान नेमिनाथ की टोंक तक पहुंचने में ६६६६ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। वापसी में पहली टोंक से १४६६ सीढ़ियों द्वारा सहस्राम्र वन जाते हैं।

यहां डोली मिल जाती है। यात्रा भाड़ा सवारी के बोझ के अनुसार होता है। जूनागढ़ शहर में भी ऊपर कोट के पास दिगंबर जैन धर्मशाला (२५ कमरे) और मंदिर है।

वीरावल-सोमनाथ

वीरावल जूनागढ़ से ८३ कि० मी० है। रेलवे स्टेशन के पास ही रामनिवास धर्मशाला है। यह काफी बड़ी और सुविधा-

संपन्न धर्मशाला हैं। यहां से ४ कि० मी० पर समुद्र के किनारे प्रसिद्ध सोमनाथ का मंदिर है। संग्रहालय में पुराने मंदिर के अवशेष हैं। वर्तमान मंदिर नया बना है। यहां पर कुछ दिगम्बर जैन परिवार भी रहते हैं।

द्वारका

द्वारका भी समुद्र तट पर स्थित है। यह यादवों का प्रसिद्ध स्थान रहा है। यहां का मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध, आकर्षक और दर्शनीय है।

जामनगर

द्वारका से जामनगर १५० कि० मी० है। यहां खंभातिया नाका पर सेठ मूलचंद जेठा धर्मशाला है। यह बहुत बड़ी धर्मशाला है और इसमें सब सुविधाएं उपलब्ध हैं। समीपस्थ ही नवनिर्मित दिगंबर जैन मंदिर है। श्मशान के उद्यान में महापुरुषों की मूर्तियों का संग्रह है। ये मूर्तियां मिट्टी की हैं। यहीं श्रीकृष्ण प्रणाम मंदिर भी है। बाजार में स्थित श्वेतांबर मंदिर भी दर्शनीय है।

राजकोट

जामनगर से राजकोट ८१ कि० मी० है। यहां शास्त्री मैदान के पास ही दिगंबर जैन मंदिर और धर्मशाला है। मंदिर के बाहर मानस्तंभ है जिसमें नीचे श्री कानजी स्वामी की मूर्ति उत्कीर्ण है। मानस्तंभ बिलकुल नए प्रकार का है। इसमें चारों

ओर मूर्तियां उकेरी हुई हैं। इसमें पंचपरमेष्ठी, सीमंधर भगवान, ताड़पत्र पर परमागम लिखते हुए श्री कुंदकुंदाचार्य, भगवान आदिनाथ को आहार-दान, आचार्य पुष्पदंत और भूतबलि द्वारा मुनिराजों का षट्खंडागम का ज्ञान-दान आदि विशेष उल्लेखनीय है।

तारंगा

तारंगा सिद्ध क्षेत्र है। वरदत्त, वरांग, सागरदत्त आदि असंख्य मुनि यहां से मोक्ष गए थे।

राजकोट से महसाना पहुंचना चाहिए। महसाना जंकशन से तारंगा हिल ५७ कि० मी० है। महसाना अहमदाबाद से ७० कि० मी० और आबू रोड से ११७ कि० मी० है। तारंगा रेल स्टेशन के निकट दिगंबर जैन धर्मशाला है जिसमें १४ कमरे हैं। वहां से तारंगा क्षेत्र ६ कि० मी० है। सड़क पक्की है। क्षेत्र तक बस जाती है। राजस्थान स्थित केशरियाजी (श्री ऋषभदेव) से ईडर होते हुए भी तारंगा पहुंचा जा सकता है।

क्षेत्र पर दिगंबर जैन धर्मशाला (५४ कमरे) है। यहां १४ मंदिर हैं। धर्मशाला में गद्दे, रजाई, बर्तन आदि की सुविधा है। यह स्थान पहाड़ की तलहटी में है। यहां पर कोटशिला और सिद्धशिला नामक दो पहाड़ियां हैं। धर्मशाला के पीछे से कोटि-शिला की चढ़ाई है। तालाब, गुफाएं, चरण आदि मिलते हैं। ऊपर लगभग डेढ़ मीटर के शिलाफलक में बनी भगवान नेमिनाथ की खड्गासन प्रतिमा है। शिलालेख के अनुसार इसकी प्रतिष्ठा श्री सिद्ध चक्रवर्ती जयसिंह देव के शासनकाल में हुई थी। प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचंद्र इन्हीं के दरबार में थे।

कोटिशिला से उतरकर धर्मशाला के दूसरी ओर सिद्ध-शिला को जाते है। यहां भी टोंक, चरण आदि हैं। मुख्य टोंक पर लगभग डेढ़ मीटर ऊंची भगवान मल्लिनाथ की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। इस मूर्ति का प्रतिष्ठाकाल सं० ११६२ है। भगवान नेमिनाथ और भगवान मल्लिनाथ दोनों की मूर्तियां शाह लखन द्वारा प्रतिष्ठित हुई हैं।

दिगंबर जैन धर्मशाला के निकट ९ श्वेतांबर जैन मंदिर हैं। इनमें सम्राट कुमारपाल द्वारा निर्मित विशाल मंदिर भी है। इसमें मूलनायक भगवान अजितनाथ की पौने चार मीटर ऊंची मूर्ति विराजमान है।

आबू (विश्वविख्यात जैन मंदिर)

पश्चिम रेलवे की छोटी लाइन के अहमदाबाद-दिल्ली मार्ग पर अहमदाबाद से १८६ कि० मी० पर आबू रोड स्टेशन है। आबू रोड से २९ कि० मी० आबू पहाड़ है। आबू रोड तक सड़क मार्ग से भी जा सकते हैं। अहमदाबाद, जोधपुर, अजमेर, उदय-पुर आदि स्थानों से बस की सर्विस है। यह समुद्र तल से ६०० मीटर ऊंचा है। पर्यटक केंद्र के रूप में सरकार ने इसका पर्याप्त विकास किया है।

माउंट आबू के बस अड्डे से ३ कि० मी० पर दिलवाड़ा है। वहां पर सड़क के एक ओर दिगंबर जैन धर्मशाला (कुछ सीढ़ियां चढ़कर) है। नल, बिजली है। गद्दे बर्तनों की भी सुविधा है।

कुछ ही आगे चलकर श्वेतांबर मंदिरों का समूह है।

विमलवसदि, नेमिनाथ मंदिर, लूणवसदि, खरतरवसदि नाम के मंदिर हैं। इनकी दीवारों, छतों, स्तंभों की कला अद्‌भुत है। इनमें विमलवसदि और लूणवसदि विशेष आकर्षक हैं। विमलवसदि में ५२ और लूणवसदि में ४८ देहरियां हैं। इसके सामने भगवान कुंथुनाथ का दिगंबर जैन मंदिर है।

दिलवाड़ा से ६ कि० मी० पर अचलगढ़ है। महादेव मंदिर तक बस आदि जाती है। अचलगढ़ की चढ़ाई में कुंथुनाथ मंदिर, ऋषभदेव मंदिर और फिर सीढ़ियां चढ़कर आदिनाथ मंदिर आता है। भगवान आदिनाथ की प्रतिमा अष्ट धातु की है और यह ५०० वर्ष पुरानी बताई जाती है। इसका वजन १५४४ मन कूता जाता है।

आबू पहाड़ पर अचलेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर भी है। इसके अतिरिक्त यहां नक्की झील, रघुनाथजी का मंदिर आदि भी दर्शनीय स्थल हैं।

ऋषभदेव (केशरियाजी)

यह उदयपुर से ६५ कि० मी० है। गांव का नाम धुलेव है। पत्र-व्यवहार में स्थान का नाम 'ऋषभदेव' लिखा जाता है। यहां एक कंगूरेदार कोट के भीतर प्राचीन मंदिर और धर्मशालाएं हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की है। यह श्यामवर्ण पाषाण की लगभग एक मीटर ऊंची मनोहर प्रतिमा है। यह अतिशय युक्त है। श्यामवर्ण की होने के कारण भील लोग इसे कालाजी या कारिया बाबा भी कहते हैं यहां केशर चढ़ाने की परंपरा होने के कारण क्षेत्र 'केशरियाजी' के नाम से भी

प्रसिद्ध है।

इस मंदिर के चारों ओर ५२ जिनालय या देवकुलिकाएं बनी हुई हैं। प्रवेश द्वार विशाल है। यहां अद्‌भुत कला के दर्शन होते हैं। यहां के चमत्कारों और अतिशयों की कथाओं के कारण लोग यहां दर्शन करने और मनौती मनाने आते हैं।

यह मंदिर मूलत: दिगंबर है। बहुत काल तक भट्टारक गद्दी भी यहां रही, पर अब नहीं है। वर्तमान में यहां की व्यवस्था राजकीय है। दिगंबर जैन ही नहीं श्वेतांबर जैन, हिंदू, भील आदि भी बड़ी संख्या में दर्शनार्थ आते हैं। यहां दिगंबर जैन, श्वेतांबर जैन और हिंदू तीनों रीतियों से पूजा होती है।

क्षेत्र पर तीन धर्मशालाएं हैं। जल, बिजली की व्यवस्था है। ओढ़ना, बिछौना, बर्तन आदि भी मिल जाते हैं।

नागफणी पार्श्वनाथ

नागफणी पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र है। ऋषभदेव (केशरियाजी) से बीछीवाड़ा ४० कि० मी० है और वहां से १० कि० मी० मेस्वो नदी बहती है। बीछीवाड़ा होती हुई ६ कि० मी० तक बस जाती है। फिर पैदल (रास्ता काफी चढ़ाई, उतराई का है) नदी पर पहुंचकर मोदर गांव से पहले ही नदी के किनारे बाईं ओर लगभग २०० मीटर चलने पर पहाड़ पर मंदिर दिखाई देने लगता है। लगभग ५० सीढ़ी चढ़कर मंदिर आता है। सीढ़ियां चढ़ने से पहले जलकुंड है। इसका जल अभिषेक और पीने के काम आता है। कहते हैं कभी कभी जंगली जानवर भी इधर आ जाते हैं।

मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो काफी प्राचीन है। प्रतिमा के सिर पर सप्तफण-मंडप बना है; इसमें तीन फण खंडित हैं। यहां के अतिशय की बहुत मान्यता है।

मंदिर के दोनों ओर धर्मशाला है। दो हाल और तीन कमरे हैं। गद्दे, रजाई और बरतनों की सुविधा है।

यहां प्रत्येक पूर्णिमा को मेला लगता है। बड़ा मेला आषाढ़ी पूर्णिमा का होता है।

अंदेश्वर पार्श्वनाथ

यह बांसवाड़ा जिले में एक छोटी सी पहाड़ी पर है। चारों ओर सघन वन है। रेलवे स्टेशन उदयगढ से ५० कि० मी० है। दाहोद से उत्तर की ओर ५० कि० मी०, कुशलगढ़ से पश्चिम की ओर १५ कि० मी० और कलिंजरा से पूर्व की ओर ८ कि० मी० है। यहां के कई अतिशयों की मान्यता है।

यहां कोई बस्ती नहीं है। केवल दो दिगंबर जैन मंदिर हैं। दोनों ही पार्श्वनाथ मंदिर कहलाते हैं। एक मंदिर कुशलगढ़ की श्री दिगंबर जैन पंचायत ने बनवाया था जिसकी प्रतिष्ठा सं० १९९२ में हुई थी। इसी में भगवान पार्श्वनाथ की चमत्कार-संपन्न मूर्ति विराजमान है।

क्षेत्र पर दिगंबर जैन धर्मशाला है। प्रकाश के लिए लाल-टेनों की व्यवस्था है। एक तालाब के निकट कुआं है जो जल-पूर्ति का एकमात्र साधन है।

यहां कार्तिक पूर्णिमा को वार्षिक उत्सव होता है।

बमोतर अतिशय क्षेत्र (श्री शांतिनाथ जी)

प्रतापगढ़-छोटी सादडी-चित्तौड़गढ़ रोड पर प्रतापगढ़ से ५ कि० मी० पर बमोतर गांव है। मंदसौर रेल स्टेशन से प्रतापगढ़ ३२ कि० मी० है। क्षेत्र तक पक्की सड़क है। क्षेत्र सड़क से लगभग १०० मीटर के फासले पर है।

यहां सं० १६०२ में भगवान शांतिनाथ की डेढ़ मीटर उत्तंग मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान की गई थी। तब से यह अतिशय क्षेत्र माना जाता है। यहां के अतिशयों की कई किवदंतियां प्रचलित हैं। यहां धर्मशाला (२३ कमरे) है। धर्मशाला में बिजली और कुआं है।

चित्तौड़गढ़

भारतीय इतिहास में चित्तौड़ का नाम अमर है। यह स्वाधीनता की रक्षा के लिए आत्म बलिदान का प्रतीक है।

गढ़निर्माण की वास्तुकला की दृष्टि से चित्तौड़गढ़ एक अनुपम उदाहरण है। समुद्र तल से ६०० मीटर ऊंची पहाड़ी पर यह किला कोई १६ कि० मी० लंबा और एक कि० मी० चौड़ा है। इस गढ़ के सात पाल (फाटक) हैं और इसके अंदर बहुत से दर्शनीय स्थान हैं। ये सब भारत के ऐतिहासिक तीर्थ हैं।

दुर्ग के द्वार, सिसोदिया फत्ता का स्मारक, सतबीस देवरा (श्वेतांबर जैन मंदिर), महाराणा कुंभा के महल, जयमल और फत्ता के भग्न महल, विजयस्तंभ, कीर्तिस्तंभ, दिगंबर जैनमंदिर,

मीराबाई का मंदिर, पद्मिनी का महल, जौहर-स्थल आदि दर्शनीय हैं।

चित्तौड़गढ़ में दिगंबर जैन कीर्ति स्तंभ है। यह लगभग २४ मीटर ऊंचा है। यह सात मंजिला स्तंभ शिल्प कला का अनुपम उदाहरण है। चारों कोनों पर भगवान आदिनाथ की डेढ़ मीटर अवगाहना की दिगंबर मूर्तियां स्थित हैं। इसके निर्माता साहू जीजा बघेरवाल जाति के दिगंबर जैन थे। इस कीर्तिस्तभ के समीपस्थ ही दिगंबर जैन मंदिर है। अब उसकी मरम्मत आदि हो गई है। सन १९७९ में बहुत काल के बाद इसमें पूजनादि किया गया था।

नगर में एक दिगंबर जैन मंदिर और दो चैत्यालय हैं। ठहरने के लिए रेलवे स्टेशन के निकट पर्यटक विश्रामगृह, सरकारी सराय और श्वेतांबर जैन धर्मशाला है। अन्य धर्मशालाएं और लाज भी हैं।

चित्तौड़गढ़ पश्चिमी रेलवे पर अजमेर से १८९ कि० मी०, रतलाम से ३७५ कि० मी०, उदयपुर से ११७ कि० मी० और दिल्ली से ६३० कि० मी० है। सड़क द्वारा भी यह सभी स्थानों से जुड़ा है।

झालरापाटन

झालरापाटन अतिशय क्षेत्र है। यह झालरापाटन रोड स्टेशन से २८ कि० मी० है। पक्की सड़क और बस सेवा है। सड़क मार्ग से अजमेर, जयपुर, कोटा, इंदौर आदि से यह जुड़ा है।

यहां विशाल जिनमंदिर हैं जिसमें पौने तीन मीटर ऊंची

भगवान शांतिनाथ की अति मनोज्ञ मूलनायक प्रतिमा है। प्राचीन काल में भगवान शांतिनाथ का मंदिर सन १०४४ में पापाशाह दूमड ने बनवाया था। इसी मंदिर के स्थान पर वर्तमान मंदिर बना है। द्वार पर दो विशाल श्वेत वर्ण हाथी बने हैं। यहां हस्तलिखित ग्रंथों का विशाल भंडार है तथा अनेक प्रचीन मूर्तियां हैं। मंदिर के तीन ओर १५ वेदियां हैं।

नगर में ४ मंदिर और हैं। इसके अतिरिक्त शांतिनाथ जैन प्राथमिक विद्यालय, जैन औषधालय, शृंगारबाई प्रसूति-गृह आदि कई सार्वजनिक संस्थाएं हैं। श्री ऐलक पन्नालाल दिगंबर जैन सरस्वती भवन उल्लेखनीय है जिसे संवत १९७२ में ऐलक पन्नालालजी ने स्थापित किया था। बाद में एक शाखा ब्यावर में और हाल ही में उज्जैन में खोली गई। तीन स्थानों पर १५००० हस्तलिखित और मुद्रित पुस्तकें हैं।

नगर में लक्ष्मणलाल दिगंबर जैन धर्मशाला है। नल और बिजली की सुविधा है।

चांदखेड़ी

यह अतिशय क्षेत्र है। झालावाड़-बारां सड़क पर स्थित खानपुर से २ कि० मी० के फासले पर चांदखेड़ी स्थित है। इस स्थान से अटरू स्टेशन (बीना-कोटा लाइन पर) ३५ कि० मी० और झालावाड़ रोड स्टेशन (पश्चिमी रेलवे) ६२ कि० मी० है। सभी ओर से खानपुर पहुंचना होता है। इंदौर से जयपुर और कोटा जाने वाले मार्ग से भी झालावाड़ पहुंच सकते हैं।

इस क्षेत्र का निर्माण औरंगजेब के शासनकाल में महाराज

किशोर सिंह (कोटा) के दीवान शाह बिशनदास बघेरवाल ने कराया था। इस स्थान के चमत्कारों का वर्णन मिलता है। मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है। यह लगभग दो मीटर ऊंची और पौने दो मीटर चौड़ी है।

क्षेत्र के प्रवेश द्वार में घुसते ही एक अहाता है जिसमें जिन-मंदिर है। एक नया समवसरण मंदिर निर्माणाधीन है। यहां अनेक प्रतिमाएं हैं। यहां ७० कमरों वाली विशाल धर्मशाला है। कुआं है, पंप है, बिजली है; गद्दे आदि की सुविधा है।

यहां चैत्र कृष्ण ५ से ९ तक मेला लगता है।

केशोराय पाटन

चंबल नदी के तट पर अवस्थित केशोराय पाटन अतिशय क्षेत्र है। इसका पूरा नाम श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र केशवराय पाटन है। यह बूंदी से ४३ कि० मी०, कोटा से १४ कि० मी० और केशवराय पाटन स्टेशन से ३ कि० मी० है। सब स्थानों से बस मिलती हैं। चांदखेड़ी से कोटा पहुंचकर नाव द्वारा चंबल पार कर यहां पहुंचा जा सकता है।

परंपरा के अनुसार प्राचीन काल में (९वीं-१०वीं शताब्दी से पूर्व) भगवान मुनिसुव्रतनाथ की एक मूर्ति थी जिसके चमत्कारों की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। शोध के आधार पर विद्वानों का मत है कि वर्तमान केशोराय पाटन ही वह प्राचीन नगर है। इस स्थान का नाम केशोराय पाटन विष्णु के विग्रह के कारण पड़ा था।

यहां के चमत्कारों की अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं। कहा

जाता है कि मुहम्मद गोरी की आज्ञा से मूर्ति को तोड़ने का प्रयास किया गया, पर कुछ नहीं बिगड़ा। जब टांकी से काटना चाहा तो अंगूठे से दूध की प्रबल धारा निकली। कुछ समय पहले यहां भयंकर रूप से प्लेग फैली थी। तब नगरवासी भयभीत होकर जंगलों में चले गए। कुछ श्रद्धालु दर्शनार्थ आए। वे भगवान के सामने जोत जला गए। जब महामारी शांत हुई और लोग लौटे तो देखा कि ३-४ माह बाद भी जोत जल रही थी।

जिनालय चंबल नदी के तट पर १२ मीटर ऊंची चौकी पर बना है। बाढ़ आदि से सुरक्षा के लिए मजबूत दीवार बनाई गई हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान मुनिसुव्रतनाथ की है। यह कृष्ण वर्ण है और लगभग पौने दो मीटर ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी मूर्तियां हैं। अधिकांश मूर्तियां सातवीं-आठवीं शताब्दी की हैं। मंदिर में ऊपर और भूगर्भ में छः छः वेदियां हैं। यह भी कहा जाता है कि ब्रह्मदेव मुनि ने 'वृहद् द्रव्य संग्रह' की टीका इसी स्थान पर लिखी थी।

बिजौलिया

यह अतिशय क्षेत्र भीलवाडा जिले में है। यह उदयपुर से २२४ कि० मी० पूर्व में, कोटा से ८५ कि० मी० पश्चिम में और चित्तौड़ से ११२ कि० मी० उत्तर-पूर्व में है। कोटा से बूंदी होते हुए ८५ कि० मी० है। यह रास्ता सबसे सुगम है। सड़क पक्की है। बूंदी रोड से १० कि० मी० है। भीलवाड़ा से मांडलगढ़ होते हुए यह ८५ कि० मी० पड़ता है। मांडलगढ़ से ३७ कि०

मी०, नीमच कैंट से सिंगौली होकर लगभग १०० कि० मी० है। सिंगौली से २२ कि० मी० लंबा कच्चा मार्ग है जिस पर केवल ऊंट या घोड़े द्वारा ही जा सकते हैं।

बिजौलिया एक प्राचीन ग्राम है। इसकी चहारदीवारी मे क्षेत्र डेढ़ कि० मी० है। यह नगर से दक्षिण-पूर्व दिशा में है। क्षेत्र सुदृढ़ परकोटे से घिरा है। बीच में पार्श्वनाथ मंदिर है। मदिर पंचायतन है। शिलालेख के अनुसार संवत् १२२६ में मंदिर का निर्माण और प्रतिष्ठा श्रेष्ठी लोलार्क द्वारा संपन्न हुई थी।

यहां के चमत्कारों की अनेक कथाएं हैं। यहां बड़ी संख्या में लोग मनौती मनाने आते हैं। यहां ऐतिहासिक महत्व के कई शिलालेख हैं।

नगर में दो जैन धर्मशाला हैं : जैन भवन और जैन पंचायती नोहरा। इनमें कुल ६ कमरे हैं। नल, कुआं, बिजली है।

चंबलेश्वर पार्श्वनाथ

चंवलेश्वर भीलवाड़ा से ४५ कि० मी० पूर्व में स्थित है। पारोली तक सड़क पक्की है, फिर ६ कि० मी० कच्चा रास्ता है जिस पर बैलगाड़ी जाती है। दूसरा मार्ग विजयनगर होकर है। विजयनगर स्टेशन अजमेर-खंडवा लाइन पर है। यहां से शाहपुर तक ४२ कि० मी० लंबी पक्की सड़क है। बस सर्विस है। शाहपुरा से बैलगाड़ी द्वारा जाना होता है। तीसरे मार्ग से देवली कैंट से जहाजपुर होते हुए पारोली पहुंचते हैं। फिर कच्ची सड़क

है। यह अति सुंदर प्राकृतिक स्थान है। चंबलेश्वर क्षेत्र पहाड़ी पर है।

पहाड़ी पर जाने का मार्ग तीन ओर से है। पूर्व की ओर २५६ सीढ़ियां चढ़ने के बाद लगभग ३७५ मीटर लंबा कच्चा मार्ग तय करना होता है। फिर ११० सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। कच्चे मार्ग पर एक तिवारा और जल कुंड है। अभिषेक के लिए जल यहीं से ले जाते हैं।

मंदिर का शिखर दूर से ही दिखाई पड़ता है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। इसके अतिशय की अनेक कथाएं प्रचलित हैं। मंदिर के निकट ही एक मस्जिद है। उसके पास ही महादेवीजी का मंदिर है।

एक मंदिर पहाड़ की तलहटी में भी है। उसमें भगवान पार्श्वनाथ की विशाल अवगाहना की खंडित प्रतिमा है। यहीं पर नवनिर्मित धर्मशाला भी है। क्षेत्र पर पौष बदी ९ और १० को मेला लगता है।

चमत्कारजी

सवाईमाधोपुर रेलवे स्टेशन से लगभग ५ कि० मी० की दूरी पर चमत्कारजी अतिशय क्षेत्र है। यह सड़क से थोड़ा हटकर है। अनश्रुति के अनुसार विक्रम सं० १८८७ में भाद्रपद कृष्णा २ को नाथ संप्रदाय के एक योगी को स्वप्न हुआ। फलस्वरूप भूगर्भ मे भगवान आदिनाथ की स्फटिक प्रतिमा प्राप्त हुई। वहा पर जैनों ने मंदिर का निर्माण कराया। जिस स्थान पर प्रतिमा निकली थी वहां भगवान के चरण बने हुए हैं।

यहां के चमत्कारों की अनेक कथाएं प्रचलित हैं। इसलिए अनेक जैन और जैनेतर बंधु यहां मनौती मनाने आते हैं। यहां के दर्शन कर सवाईमाधोपुर के श्री नसीरुद्दीन और श्री सफरुद्दीन की मनोकामना पूर्ण हुई थी। उन्होंने यहां छतरियों का निर्माण कराया था। वे छतरियां अब भी विद्यमान हैं।

यहां ४१ कमरों की एक धर्मशाला है। बिजली-पानी की सुविधा है। यहां वर्ष में पांच मेले लगते हैं।

सवाई माधोपुर

यहां से लगभग ५ कि० मी० की दूरी पर सवाई माधोपुर नगर है। इसमें ७ दिगंबर जैन मंदिर हैं। इनमें नौ सौ से अधिक प्रतिमाएं हैं। अकेले दीवानजी के मंदिर में पांच सौ से अधिक प्रतिमाएं हैं।

रणथंभौर

लगभग १० कि० मी० पर रणथंभौर का ऐतिहासिक किला है। इस किले में एक प्राचीन मंदरि है जिसकी प्रतिमा को विक्रम संवत १० का बताया जाता है।

शेरपुर

रणथंभौर से ३-४ कि० मी० की दूरी पर शेरपुर है। यहां जैन मंदिर है। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। यह विक्रम संवत १५ की बताई जाती है। यहां के अतिशयों की अनेक कथाएं प्रचलित हैं।

खंडार

शेरपुर से ८-९ कि० मी० आगे खंडार है। यह भी एक अतिशय क्षेत्र है। पहाड़ पर प्राचीन जिन मंदिर है। यहां चट्टानों पर डेढ़ मीटर अवगाहना की चार प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। ये विक्रम संवत २० से ३० तक की बताई जाती हैं।

महावीरजी (चांदनपुर)

यह अतिशय क्षेत्र है। पश्चिम रेलवे पर भरतपुर और गंगापुर स्टेशनों के बीच 'श्री महावीरजी' स्टेशन है। यहां सभी गाड़ियां रुकती हैं। ग्राम का नाम चांदनपुर है और यहां के मंदिर का क्षेत्र 'महावीरजी' है। स्टेशन से मंदिर तक ७ कि० मी० पक्की सड़क है। स्टेशन से महावीरजी की क्षेत्र की ओर से निःशुल्क बस सेवा है। यह सड़क मार्ग से जयपुर से १७५ कि० मी० और आगरा से १७० कि० मी० है। यहां कई धर्मशालाएं हैं। नल, बिजली, पोस्ट-आफिस, तारघर, टेलीफोन, बैंक सेवा आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं। भोजन की उत्तम व्यवस्था है।

इस क्षेत्र की बड़ी मान्यता है। बड़ी संख्या में यात्री प्रायः वर्ष भर यहां दर्शन को आते हैं। भगवान महावीर की जयंती पर चैत्र शुक्ला १३ से वैशाख कृष्ण २ तक विशाल मेला भरता है। इस अवसर पर प्रायः ढाई-तीन लाख की उपस्थिति हो जाती है। जैनों के अलावा मीणा, गूजर, जाटव आदि बड़ी संख्या में भगवान के दर्शन करने आते हैं। भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव (दीपावली) को भी बड़ी संख्या में दिगंबर जैन यात्री यहां निर्वाण लाडू चढ़ाने आते हैं।

महावीरजी में एक महिला विद्यालय, कृष्णाबाई द्वारा संचालित एक आदर्श महिला विद्यालय (हाईस्कूल तक) तथा राज्य सरकार द्वारा संचालित एक हायर सैकेंड्री स्कूल आदि प्रमुख शिक्षण संस्थाएं हैं। नदी के दूसरी ओर शांतिवीर नगर है जहां भगवान शांतिनाथ की लगभग ६ मीटर ऊंची प्रतिमा और चौबीसों तीर्थंकरों की मूर्तियां हैं। जैन गुरुकुल और कीर्ति आश्रम भी हैं। स्टेशन पर क्षेत्र द्वारा संचालित धर्मशाला भी है। मंदिर के पीछे की ओर भगवान की चरण छत्री है। यहां से भगवान महावीर की वह मूर्ति निकली थी जो इस मंदिर में विराजमान है। इस मूर्ति की भव्यता अन्यत्र नहीं मिलती है।

जयपुर

जयपुर राजस्थान की राजधानी है। यह गुलाबी शहर (पिंकसिटी) के रूप में प्रसिद्ध है क्योंकि इसकी प्राचीन इमारतें गुलाबी पत्थर की हैं। इस नगर का निर्माण महाराज-सवाई जयसिंह ने कराया था। यह नगर सुनियोजित ढंग से निर्मित है। इसकी रचना चौपड़ के अनुरूप है। पहले यह नगर एक परकोटे के अंदर था। अब तो परकोटे के बाहर भी विस्तृत हो चुका है। १९७१ की जनगणना के अनुसार यहां की जैन आबादी २७००० थी।

राजनीतिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक, व्यापारिक सभी दृष्टियों से जयपुर जैनों का प्रमुख केंद्र रहा है।

नगर में १८७ चैत्यालय और मंदिर हैं। इनमें पटौदी का मंदिर चौबीस महाराज का मंदिर, कालडेरा और महावीर मंदिर बड़े मंदिर हैं। सिरमोरियों का मंदिर कलापूर्ण रचना के लिए प्रसिद्ध है। जयपुर बिख्यात विद्वान पं० टोडरमलजी, दौलतरामजी, काशीलाल जी, पं० सदासुखजी, पं० जयचंद छाबड़ा की नगरी रही है।

आदर्श नगर में मुलतान जैन समाज दिगंबर जैन मंदिर है। भारत विभाजन के बाद मुलतान के जैन बंधु अपने साथ बड़ी कठिनाईपूर्वक जैन मूर्तियां लाए थे। इस मंदिर का निर्माण कराकर उन्होंने वे ही मूर्तियां यहां प्रतिष्ठापित की हैं।

जयपुर के निकट आमेर और सागानेर में भी दर्शनीय मंदिर हैं।

चूलगिरि

जयपुर नगर से लगभग ३ कि० मी० दूर खानिया में राणाओं की नशिया के पास पहाड़ पर चूलगिरि पार्श्वनाथ मंदिर है। यह जैनों का तीर्थ और अतिशय क्षेत्र है। मंदिर में अनेक टोंक और वेदियां हैं। मंदिर तक सीढ़ियां बनी हैं। धर्मशाला भी है जिसमें पानी, बिजली आदि की सुविधा है।

पदमपुरा

जयपुर (घाटगेट) से खानिया-गोनेर होते हुए पदमपुरा को बस जाती है। यह दूरी २४ कि० मी० है। शिवदासपुर-पदमपुरा रेल स्टेशन से क्षेत्र ६ कि० मी० है। हर गाड़ी पर क्षेत्र

के लिए बस मिल जाती है।

पदमपुरा (बाड़ा) अतिशय क्षेत्र है। कहा जाता है कि छोटे से गांव बाड़ा में एक व्यक्ति को भैरोंजी की सवारी आती थी। बाड़ा में गंभीर जल संकट था। एक दिन उस व्यक्ति से लोगों ने पूछा कि गांव का जल संकट कब दूर होगा। 'जब भूगर्भ से बाबा की चमत्कारी मूर्ति निकलेगी'—उस व्यक्ति का उत्तर था।

कुछ समय पश्चात मूला जाट नामक व्यक्ति गांव में आकर रहने लगा। वहां उसने मकान बनवाया। जमीन खोदने के समय मूला का फावड़ा एक पत्थर से टकराया जिसकी ध्वनि ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। सावधानीपूर्वक मिट्टी हटाने पर वहां भगवान पदमप्रभ की मूर्ति मिली। तभी से गांव के कष्ट दूर होते चले गए। इस मूर्ति की बड़ी मान्यता है और इसके अतिशय की अनेक कथाएं हैं। विशेषतः भूतबाधा दूर करने के लिए क्षेत्र की बड़ी मान्यता है। यहां का नवनिर्मित मंदिर अनूठे ढंग का है। यह मंदिर गोलाकार है और लगभग ६५×६५ मीटर का है। कटला ३२५×३२५ मीटर का है। और गुंबज जमीन से २६-२७ मीटर ऊंचा है। शिखर पूरा होकर कोई ४० मीटर का होगा।

यहां धर्मशाला भी है जिसके अधिकांश कमरों में बिजली के पंखे हैं। एक धर्मशाला और बन रही है। क्षेत्र की ओर से आयुर्वेदिक औषधालय भी चल रहा है।

वैशाख शुक्ल ५ (जिस दिन मूर्ति निकली थी) तथा फाल्गुन कृष्ण ४ (भगवान पदमप्रभ का मोक्ष कल्याणक दिवस) को मेले

लगते हैं। क्षेत्र का मुख्य वार्षिक मेला दशहरे के अवकाश के दिनों में लगता है।

अजमेर

अजमेर राजस्थान का प्रमुख ऐतिहासिक नगर है। पृथ्वीराज चौहान अजमेर के ही थे। उन्होंने मुहम्मद गोरी से अनेक बार लोहा लिया था। कुतुबुद्दीन के शासन काल में दिल्ली के बहुत से मंदिर (जिनमें अधिकतर जैन मंदिर थे) नष्ट किए गए। अजमेर में भी ढाई दिन का झोंपड़ा नामक जैन मंदिर नष्ट करके उस पर मस्जिद बनाई गई।

यहां का प्रमुख जैन मंदिर सेठजी की नशिया है। इसे सिद्ध-कूट चैत्यालय नशिया कहते हैं। इसमें मूलनायक भगवान आदिनाथ की प्रतिमा है। सन १८६५ में इसका निर्माण सेठ मूलचंद सोनी ने कराया था। इसमें एक कक्ष में जो ८०×४० फुट है आधे भाग में तेरह द्वीप की रचना है। (ढाई द्वीप की रचना विस्तृत है) दूसरे आधे भाग में भगवान आदिनाथ की जन्म-नगरी अयोध्या की भव्य रचना है। यहां चित्रांकन और दीवारों तथा छतों पर पच्चीकारी का काम बहुत कलापूर्ण है और दर्शनीय है। मंदिर का स्वर्णमंडित कलश और सामने बना मानस्तंभ किसी भी ऊंचे भवन से दिखाई देते हैं।

छोटा धड़ा नशिया, बड़ा धड़ा मंदिर और महापूत जिनालय भी दर्शनीय है। कुल मिलाकर अजमेर में २१ जिनालय हैं।

यहां की अन्नासागर झील नगर को अप्रतिम भव्यता प्रदान करती है। यह मुसलमानों का भी तीर्थ है। ख्वाजा

मुईनउद्दीन चिश्ती की दरगाह यहीं पर है ।

अजमेर के पास ही पुष्कर तीर्थ क्षेत्र है। यह हिंदुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' भारतीय शिल्प का विलक्षण नमूना माना जाता है।

बघेरा

बघेरा अतिशय क्षेत्र है। अजमेर से केकड़ी २७ कि० मी० है। केकड़ी से क्षेत्र १७ कि० मी० है। यह एक छोटा सा गांव है। यहां कार या बस द्वारा पहुंचा जा सकता है। वर्षाकाल में रास्ता प्राय: बंद ही रहता है। यहां कला और पुरातत्व की मूल्यवान सामग्री है।

यहां समय समय पर भूगर्भ से प्राचीन मूर्तियां निकाली जाती रही हैं। प्राप्त मूर्तियां ११वीं से १३वीं शताब्दी की हैं जो २०-२२ सें० मी० से लेकर दो-ढाई मीटर तक ऊंची हैं। कुछ प्रतिमाएं धातु की भी मिली हैं।

यहां दो विशाल जैन मंदिर हैं। एक श्री शांतिनाथ मंदिर और दूसरा श्री आदिनाथ मंदिर। भूगर्भ से निकली हुई मूर्तियां इन्हीं मंदिरों में विराजमान की गई हैं। श्री शांतिनाथ मंदिर अतिशय क्षेत्र कहलाता है। यहां बहुत से जैन-जैनेतर बंधु मनौती मनाने आते हैं।

नरैना

नरैना (नरायना) कोई तीर्थ तो नहीं है पर पुरातात्विक सामग्री (जिनमें अनेक भव्य मूर्तियां प्राप्त हुई हैं) के कारण

इसे तीर्थ की संज्ञा दी गई है।

पश्चिम रेलवे के फुलेरा स्टेशन से दक्षिण की ओर ११ कि० मी० पर नरैना स्टेशन है। सड़क के रास्ते दूदू (जो आगरा-अजमेर रोड पर है) से सांभर जाने वाली सड़क पर १४ कि० मी० पर है। यह ११-१२वीं शताब्दी में बहुत समृद्ध व्यापारिक केंद्र था।

यहां पर मिली मूर्तियां स्थानीय दिगंबर जैन मंदिर में विराजमान कर दी गई हैं।

मौजमाबाद

नरैना के पास ही दूदू से ११ कि० मी० दक्षिण-पूर्व में मौजमाबाद भी कला और साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां सन १६०७ में निर्मित दिगंबर जैन मंदिर दर्शनीय है। इसमें भव्य मूर्तियां हैं। प्राचीन पांडुलिपियों का विशाल भंडार है।

तिजारा (देहरा-तिजारा)

तिजारा (देहरा-तिजारा) अतिशय क्षेत्र है। यह अलवर से ५३ कि० मी० उत्तर-पूर्व में तथा मथुरा से ९६ कि० मी० उत्तर-पश्चिम में है। दिल्ली, रिवाड़ी, अलवर, फिरोजपुर-झिरका आदि स्थानों से यह सड़क मार्ग से जुड़ा है। नियमित बस सर्विस है। दिल्ली से प्रतिदिन एक बस यहां के लिए चलती है जो साढ़े चार घंटे में तिजारा पहुंचा देती है।

प्राचीन रिकार्डों में इस स्थान का नाम देहरा लिखा है। पहले यह पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र के रूप में जाना

जाता था। सन १९५६ की खुदाई में यहां भगवान चंद्रप्रभ की श्वेत प्रतिमा प्रकट हुई। तब से इस क्षेत्र की ख्याति बढ़ती गई। यहां अनेक लोग मनौती मनाने आते हैं। जनता का विश्वास है कि यहां आने पर मनोकामना पूर्ण होती है। विशेष रूप से भूत, प्रेत, व्यंतर आदि के कष्ट दूर करने के संदर्भ में इस क्षेत्र की बड़ी प्रसिद्धि है।

क्षेत्र पर विशाल धर्मशाला है। इसमें ५५ कमरे हैं। नल, बिजली, फ्लश आदि सब सुविधाएं हैं। यहां बिस्तर, बर्तन आदि की भी सुविधा है।

राजस्थान में अनेक नगर और स्थान हैं जिनका महत्व कला या पर्यटन या श्वेतांबर मंदिरों के कारण है। इनमें से कुछ हैं :

उदयपुर

उदयपुर झीलों का नगर कहलाता है। यहां १२ दिगंबर जैन मंदिर हैं। धान की मंडी में पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बोर्डिंग (धर्मशाला) है। अन्य धर्मशाला (संभवनाथ धर्मशाला) तेलीवाड़ा में है। उदयपुर में अन्य दर्शनीय स्थल हैं : महाराणा का महल, महाराणा प्रताप का स्मारक, जगदीश मंदिर, सहेलियों की बाड़ी, नेहरू पार्क, पिचोला तथा अन्य झीलें। यहां अनेक होटल और धर्मशालाएं हैं। श्वेतांबर जैन धर्मशाला हाथीपोल के पास है। उदयपुर में और उसके आसपास के क्षेत्र में १६ श्वेतांबर मंदिर हैं।

करोड़ा पार्श्वनाथ

उदयपुर से चित्तौड़गढ़ ११७ कि० मी० है। मार्ग में ५५ कि० मी० पर मुपाल सागर रेलवे स्टेशन से डेढ़ कि० मी० के फासले पर करेड़ा गांव है। यहां पर एक भव्य जैन मंदिर है जो सोलहवीं शताब्दी का बताया जाता है।

नागदा

उदयपुर-एकलिंगजी मार्ग पर नागदा पड़ता है। यह मेवाड़ की प्राचीन राजधानी था। इसका निर्माण छठी शताब्दी में हुआ था। यहां खंडहरों में विष्णु, शिव और जैन मंदिर हैं।

एकलिंगजी

उदयपुर के उत्तर में २२ कि० मी० पर मेवाड़ के महाराणाओं के इष्टदेव का मंदिर है। पास में ही देलवाड़ा में प्राचीन कला-पूर्ण जैन मंदिर हैं।

नाथद्वारा

नाथद्वारा एकलिंगजी से २६ कि० मी० (उदयपुर से ४८ कि० मी०) है। यहां श्री नाथजी (भगवान कृष्ण) का मंदिर है जिसकी वैष्णवों में बड़ी मान्यता है। इस मंदिर की अतुल संपत्ति है। यहां प्रतिदिन ढेरों प्रसाद चढ़ता है।

हल्दीघाटी

उदयपुर से ६६ कि० मी० तथा नाथद्वारा से २४ कि० मी० दूर

है। यहीं अकबर और महाराणा प्रताप का ऐतिहासिक युद्ध हुआ था।

रणकपुर

यह स्थान उदयपुर से ९६ कि० मी० दूर है। यहां का मंदिर अति विशाल एवं भव्य है। यह चौमुख मंदिर है। यह भगवान आदिनाथ को समर्पित है। इसका निर्माण कार्य ६५ वर्ष में पूरा हुआ था। इसमें १४४४ खंभे हैं। यह कलातीर्थ है।

रणकपुर से १० कि० मी० पर सादड़ी, वहां से २० कि० मी० पर मुच्छल महावीर के मंदिर हैं। कुछ ही दूरी पर घणेराव है जहां कई प्राचीन जिनमंदिर है। घणेराव से ५ कि० मी० के फासले पर नरलोई के सुंदर मंदिर है। वहां से ११ कि० मी० के फासले पर नडोल में दस मंदिर हैं। इसमें भगवान पद्मप्रभु का मंदिर उल्लेखनीय है।

वामनवाडजी

आबू रोड से ४३ कि० मी० पर और सिरोही रोड से ८ कि० मी० पर वामनवाड़जी है। श्वेतांबर मान्यता के अनुसार यहां भगवान महावीर का शुभागमन हुआ था और उनके कान में कील ठोंकने और नाखून निकालने की घटना यहीं हुई थी। यहां मंदिर हैं। पहाड़ी पर भगवान महावीर के चरण विराजमान हैं। टोंके भी हैं जो श्री सम्मेदशिखर की प्रतिकृति जान पड़ती है।

जैसलमेर

जैसलमेर के किले में दर्शनीय जैन मंदिर हैं। यहां जिनभद्रसूरी ज्ञानभंडार में लगभग ३५०० पांडुलिपियां हैं। जैसलमेर से १६ कि० मी० की दूरी पर लोधरवा में ध्वस्त जैन मंदिर है जिनका शिल्प उत्कृष्ट है।

जोधपुर

जोधपुर का किला और महाराजा का नया महल दर्शनीय स्थल है। यहां से ६ कि० मी० के फासले पर मांडोर है जहां महा-राजाओं की छतरियां हैं। ५८ कि० मी० की दूरी पर ओसिया है जहां कई जैन मंदिर तथा एक धर्मशाला है।

नकोड़ा पार्श्वनाथ

जोधपुर से बलोतरा होते हुए १२२ कि० मी० की दूरी पर नकोड़ा पार्श्वनाथ का सुंदर मंदिर है। यहां आवास की उत्तम व्यवस्था है।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में छः सिद्ध क्षेत्र हैं : पावागिरि, सिद्धवरकूट, चूलगिरि (बड़वानी), रेशंदीगिरि (नैनागिरि), द्रोणगिरि और सोनागिरि। अतिशय क्षेत्रों के मामले में मध्य प्रदेश अति समृद्ध है; यहां २५ अतिशय क्षेत्र हैं। मध्य प्रदेश में ऐसे भी अनेक स्थान है जो कला, पुरातत्व और इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण तीर्थ माने जाते हैं। इनमें ग्वालियर दुर्ग, खजुराहो, ग्यारसपुर, उदयगिरि, पनिहारबरई आदि प्रमुख हैं।

सिहौनिया

सिहौनिया मुरैना (आगरा-ग्वालियर मार्ग पर) से ३० कि० मी० दूर है। यह एक अतिशय क्षेत्र है। मुरैना से बसें चलती हैं। बसें सिहोनिया गांव के बाहर थाने पर रुकती हैं। थाने से सिहोनिया क्षेत्र लगभग एक कि० मी० है। मार्ग कच्चा है। धर्मशाला है, पर सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं है।

संभवतः मध्ययुग में यह एक समृद्ध नगर था। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व इसे ग्वालियर के संस्थापक राजा सूरजसैन के पूर्वजों ने बसाया था। इसका सिहोनिया नाम काफी बाद में पड़ा। यहां जैनों के अनेक मंदिर थे। दसवीं शताब्दी के बाद आक्रमणों और अव्यवस्था के कारण यह नगर नष्ट हो गया। फिर लगभग ९ शताब्दी तक यह पूर्णरूपेण उपेक्षित रहा। बीसवीं शताब्दी में जैनों का ध्यान इसके पुनरुद्धार की ओर गया। यहां भगवान शांतिनाथ की ५ मीटर ऊंची भव्य प्रतिमा है। इस प्रतिमा के अतिशय के कारण ही सिहोनिया तीर्थ बना है। इस मूर्ति के दोनों ओर भगवान कुंथुनाथ और भगवान अरह-नाथ की मूर्तियां हैं। यहां भूगर्भ से कुछ अन्य मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं जो दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी की बताई जाती हैं।

ग्वालियर

ग्वालियर आगरा और झांसी के बीच स्थित है। यह मध्य रेलवे का प्रमुख स्टेशन और भारत का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है। आगरा से ११८ कि० मी० तथा झांसी से ९७ कि० मी० है। स्वतंत्रतापूर्व यह सिंधिया महाराज की राजधानी था। यह नगर तीन भागों में विभाजित है : ग्वालियर, लश्कर और मुरार।

ग्वालियर में ४ मंदिर, ४ चैत्यालय और २ जैन धर्मशालाएँ हैं। लश्कर में २० मंदिर, ३ चैत्यालय और ६ धर्मशालाएं हैं। मुरार में २ मंदिर, २ चैत्यालय और एक धर्मशाला है। नई सड़क लश्कर की महावीर धर्मशाला सर्वाधिक संपन्न है।

ग्वालियर का किला देश का अति प्राचीन किला माना जाता है— ५००० वर्ष पुराना। एक हजार वर्ष पूर्व के शिलालेखों में इसका उल्लेख मिलता है। इसकी लंबाई ३ कि० मी० तथा चौड़ाई १८० से ८७० मीटर तक है। ग्वालियर के किले में पहाड़ी पर जैन मूर्तियों की संख्या लगभग १५०० है। ये मूर्तियां अत्यंत भव्य एवं दर्शनीय हैं। ये मूर्तियां पांच समूहों में हैं। उरवाही समूह उत्तर-पश्चिम समूह, उत्तर-पूर्व समूह, दक्षिण-पश्चिम समूह और दक्षिण-पूर्व समूह। सबसे विशाल मूर्ति भगवान आदिनाथ की १७.५ मीटर ऊंची खड्गासान में है। यह उरवाही दरवाजे के बाहर है। दूसरी विशाल प्रतिमा भगवान सुपार्श्वनाथ की है जो पत्थर की बावड़ी में है। यह पद्मासन प्रतिमा है और १०.५ मीटर ऊंची है। उरवाही समूह

में ४० खड्गासन, २४ पद्मासन और स्तंभों और दीवारों में उकेरी हुई ८४० प्रतिमाएं हैं।

किले में मूर्तियों के अतिरिक्त अन्य कई दर्शनीय स्थल है। मान मंदिर, गूजरी महल (जहां संग्रहालय है), बावड़ी, करण मंदिर, विक्रम मंदिर, जहांगीर महल, शाहजहानी महल, कई दर्शनीय हिंदू मंदिर भी है। सूर्यदेव, ग्वालिया, चतुर्भुज, तेली का मंदिर, सास-बहू (बड़ा मंदिर), सास-बहू (छोटा मदिर), माता देवी, घोंध देव और महादेव। हाथी दरवाजा और सास-बहू मदिर के बीच एक महत्वपूर्ण जैन मंदिर भी है।

ग्वालियर में हर साल अनेक जैन मेले होते हैं: असोज कृष्ण २,४ व अमावस्या को जलेव तथा २६ जनवरी को रथ-यात्रा।

मनहरदेव

ग्वालियर जिले में स्थित यह एक अतिशय क्षेत्र है। यह मध्य रेल मार्ग के आंतरी और उवरामंडी स्टेशनों से १० कि० मी० है। चिनौर तक पक्की सड़क है फिर ५ कि० मी० की सडक कच्ची है। यहां एक छोटी सी पहाड़ी पर एक जैन मदिर तथा ११ अन्य मदिर जीर्णावस्था में है। तलहटी में भी दो मंदिर हैं। पर्वत पर स्थित मदिर में मूलनायक भगवान शांति-नाथ की अतिशयसपन्न प्रतिमा साढ़े चार मीटर ऊंची है।

इस स्थान पर पुरातत्व सामग्री विपुल मात्रा में बिखरी पड़ी हैं। यहां ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में बहुत मूर्तियां थी। सुरक्षा का प्रबंध न होने के कारण यहां मूर्ति-चोरों ने काफी

उत्पात किया है। १९६७ में १९ मूर्तियों के सिर काटकर चुरा लिए गए थे। असुरक्षा के कारण ही मूलनायक प्रतिमा सोनागिरि पहुंचा दी गई है। परिणामत: अब इस स्थान का महत्व पहले जैसा नही रहा है।

सोनागिरि

सोनागिरि को स्वर्णगिरि, श्रमणगिरि आदि नामों से भी जाना जाता है। यह सिद्ध क्षेत्र है। यहां से लगभग पांच कोटि मुनि मुक्त हुए हैं। यहा अनेक मुनियो को केवलज्ञान प्राप्त हुआ है। भगवान चंद्रप्रभ का समवसरण भी यहा आया था।

यह क्षेत्र मध्य रेलवे के सोनागिरि स्टेशन से ५ कि० मी० और दतिया से ११ कि० मी० है। स्टेशन से क्षेत्र तक का मार्ग पक्का है। ग्वालियर से सीधी बस सेवा भी है। बस क्षेत्र के फाटक तक जाती है। ग्वालियर-दतिया बस से भी सोनागिरि मोड़ पर उतर कर क्षेत्र पहुंचा जा सकता है। मोड़ से क्षेत्र ४ कि० मी० है। क्षेत्र के मुख्य द्वार से ही मंदिरों औरधर्मशालाओं की शृंखला आरंभ हो जाती है। तलहटी में १७ मंदिर, ५ छतरी और १५ धर्मशालाएं है।

पहाड़ पर ७७ जैन मंदिर और १३ छतरियां हैं। मंदिर नं० ५७, जिसमें भगवान चंद्रप्रभ की ३ मीटर ऊंची मूलनायक प्रतिमा है, यहां का मुख्य मंदिर है। मंदिर अति विशाल और मूर्ति अति भव्य एवं अतिशयसंपन्न है। मंदिर के निकट एक छतरी में नंग-अनंग मुनियों के चरणचिह्न अंकित हैं।

यहां मंदिरों के अतिरिक्त आकर्षण के दो प्रमुख केंद्र हैं :

नारियल कुंड और बाजनी शिला। इन दोनों स्थानों के लिए मंदिर नं० ६७ के बाद एक मार्ग जाता है। नारियल कुंड नारियल के आकार का है। इसके बारे में लोगों में एक विश्वास है। यदि कोई निःसंतान व्यक्ति इसमें बादाम डाले और वह तैरने लगे, तो उस व्यक्ति को संतान की प्राप्ति हो जाती है। बाजनी शिला एक पहाड़ी शिला है। इसे बजाने से मधुर ध्वनि निकलती है।

यह क्षेत्र अति प्राचीन है। इस क्षेत्र की सबसे प्राचीन मूर्ति मंदिर नं० १६ में विराजमान है। कुछ विद्वानों के अनुसार भगवान चंद्रप्रभ मंदिर का शिलालेख १०३५ का है। क्षेत्र पर चारों ओर पुरातत्व सामग्री बिखरी पड़ी है। कुछ सामग्री मंदिर नं० ७६ के संग्रहालय में रखी है। यहां पुस्तकालय और औषधालय भी है।

क्षेत्र का पता है: मंत्री, श्री दिगंबर जैन सोनगिरि सिद्ध क्षेत्र संरक्षिणी कमेटी, सोनागिरि, जिला दतिया (म० प्र०).

पनिहार-बरई

ग्वालियर-शिवपुरी रोड पर ग्वालियर से २२ कि० मी० दूर सड़क के बाईं ओर पनिहार और दाईं ओर बरई गांव है। पनिहार रेलवे स्टेशन भी है। यह ग्वालियर से २४ कि० मी० है। स्टेशन से पनिहार गांव लगभग २ कि० मी० है। पनिहार गांव के बाहर ही प्राचीन जिनालय और भोंयरा है। सड़क से लगभग ३ कि० मी० की दूरी पर बरई गांव का टीला है। इस टीले पर जैन मंदिर है जो भग्नप्राय है। मंदिर में कई बड़ी-

बड़ी मूर्तियां हैं। एक तीर्थंकर मूर्ति लगभग साढ़े पांच मीटर ऊंची है। मूर्ति का सिर काट लिया गया है।

कोई व्यवस्था न होने के कारण कई मूर्तियां ऐसी हैं जिनके सिर काट लिए गए हैं।

शिवपुरी

पनिहार से शिवपुरी ९६ कि० मी० दूर है। यहां राजकीय संग्रहालय है। इसमें जैन सामग्री विपुल मात्रा में संग्रहित है। शिवपुरी में कई दर्शनीय जिनालय हैं।

खानियाधाना

खानियाधाना शिवपुरी से १०२ कि० मी० दूर है। मध्य रेलवे के बसई स्टेशन से ३७ कि० मी० और चंदेरी से ५३ कि० मी० है। यहां दो प्राचीन मंदिर है जिनमें से एक भग्नप्राय है। यहां एक मानस्तंभ भी है। यहां से अनेक अभिलेख प्राप्त हुए है। सुरक्षा की समुचित व्यवस्था न होने के कारण यहां समय-समय पर मूर्तियों की चोरी होती रही है। उपलब्ध सामग्री जैन धर्म और जैन कला की समृद्धि की द्योतक है। अधिकांश सामग्री १२वी, १४वीं शताब्दी की है।

गूडर

यह खानियाधाना से ८ कि० मी० है। यहां भग्नावशेष, मानस्तंभ तथा कुछ मूर्तियां है। कई मूर्तियों के सिर कटे हुए हैं।

गोलाकोट

गोलाकोट गूडर से २ कि० मी० है। मार्ग कच्चा है। क्षेत्र बांध के किनारे पर एक पहाड़ी पर है। यहां एक चहारदीवारी में मंदिर है। इस मंदिर में ११९ मूर्तियां हैं।

पचराई

यह खनियाधाना से १६ कि० मी० है। १४ कि० मी० का मार्ग पक्का तथा शेष कच्चा है। यहां २८ जैन मंदिर हैं जो एक परकोटे में हैं। मुख्य मंदिर भगवान शीतलनाथ का है। मूलनायक प्रतिमा लगभग पौने चार मीटर ऊंची है। यहां की मूर्तियों पर हीरे की पालिश की हुई है।

खानियाधाना के निकटवर्ती क्षेत्र में इंदौर (खानियाधाना से ३२ कि० मी०) सकर्रा (इंदौर से ३ कि० मी०) नामक स्थान भी उल्लेखनीय जैन स्थल है। यहां भी मानस्तंभ, मूर्तियां तथा भग्नावशेष मिलते हैं।

बजरंगगढ़

बजरंगगढ़ अतिशय क्षेत्र है। बीना-कोटा लाइन पर गुना रेल स्टेशन है। यह वहां से आरोन जाने वाली सड़क पर ७ कि० मी० दूर है। गुना में दो सुंदर मंदिर और जैन धर्मशाला हैं। गुना से बस या तांगे द्वारा बजरंगगढ़ पहुंचा जा सकता है। क्षेत्र सड़क के निकट ही है। यहां मुख्य मंदिर के अतिरिक्त बाजार में भी एक मंदिर है। दोनों मंदिरों के साथ धर्मशालाएं हैं। मुख्य मंदिर का निर्माण सं० १२३६ में सेठ पाड़ाशाह ने कराया

था। मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है। यह ४.५ मीटर (पीठासन सहित ५.५ मीटर) ऊंची है। मूर्ति के एक ओर भगवान कुंथुनाथ और दूसरी ओर भगवान अरहनाथ की मूर्ति है। यहां दीवारों पर चित्रकारी एवं मूर्तियां उकेरी गई है। एक मूर्ति भगवान बाहुबली की भी है जो लगभग पौने दो मीटर ऊंची है।

यात्री गुना में भी ठहरकर लोकल बस और तांगों द्वारा जाकर बजरंगगढ़ की यात्रा कर सकते हैं।

थूवौन

गुना से ४५ कि० मी० की दूरी पर अशोकनगर है। अशोकनगर-चंदेरी सड़क पर अशोकनगर से ६८ कि० मी० की दूरी पर थूवौन है। इस मार्ग का अंतिम ८ कि० मी० (पिपरौल से) का हिस्सा कच्चा है। यह पुरानी चंदेरी से १४ कि० मी० है। ललितपुर से चंदेरी (३४ कि० मी०) होते हुए ५०-५५ कि० मी० है। यह अतिशय क्षेत्र है। यहां २५ मंदिर हैं। धर्मशाला है जिसमें २६ कमरे हैं। बिजली की व्यवस्था है। जल के लिए कुएं हैं। थोड़ी दूर पर ही नदी बहती है।

यहां सबसे ऊंची प्रतिमा मंदिर नं० १५ में भगवान ऋषभदेव की कायोत्सर्ग मुद्रा में है। इसकी ऊंचाई ८ मीटर है। इसी प्रतिमा के अतिशय के कारण यह क्षेत्र अतिशय क्षेत्र कहलाता है। अन्य मंदिरों में मंदिर नं० १ में भगवान पार्श्वनाथ की (लगभग ४.५ मीटर ऊंची), मंदिर नं० २ में (पौने चार मीटर ऊंची), मंदिर नं ५० में भगवान शांतिनाथ की (५.५

मीटर ऊंची), मंदिर नं० ६ में भगवान आदिनाथ की (पौने दो मीटर ऊंची), तथा मंदिर नं ७० में भगवान पार्श्वनाथ की (४.५ मीटर ऊंची), मंदिर नं० १४ में भगवान अजितनाथ की (५ मीटर ऊंची), मंदिर नं० १७ में भगवान अभिनंदननाथ की (५ मीटर ऊंची) तथा मंदिर नं० २५ में भगवान ऋषभदेव की (५ मीटर ऊंची) प्रतिमाएं विशेष उल्लेखनीय हैं।

चंदेरी

चंदेरी थूबोन से २२ कि० मी० दूर है। अशोकनगर से चंदेरी तक बसें चलती हैं। चंदेरी बस स्टैंड से एक कि० मी० दूरी पर बड़ा जैन मंदिर है। इसी मंदिर में २४ तीर्थंकरों की अत्यंत कलापूर्ण प्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमा पृथक गर्भगृह में है और उसी वर्ण की है जिसे शास्त्रों में संबद्ध तीर्थंकर का वर्ण बताया गया है। इस मंदिर का निर्माण सवाईसिंह जी ने कराया था। मूर्तियों की प्रतिष्ठा सं १८९३ में हुई थी। मंदिर के समीप ही त्यागी-व्रतियों के लिए एक धर्मशाला है। एक धर्मशाला यात्रियों के लिए है। नगर में भी एक जैन मंदिर तथा एक चैत्यालय है। चंदेरी में वार्षिक मेला भी लगता है।

चंदेरी जैन संस्कृति का प्रसिद्ध केंद्र रहा है। इसके आस-पास अनेक स्थल हैं जहां प्राचीन मूर्तियां और मंदिर हैं। इनमें से कुछ ये हैं—खंदार (चंदेरी के समीपस्थ पर्वत पर), गुरीला-गिरि (चंदेरी से ७ कि०मी०), आमनचार (चंदेरी से मुगावली रोड पर २१ कि० मी०), बिठला (चंदेरी से १९ कि० मी०),

भामोन (चंदेरी से १६ कि० मी०), तथा भियांदांत (चंदेरी से १४ कि० मी०)।

खंदारगिरि

चंदेरी से पुरानी कचहरी होकर २ कि० मी० कच्चा मार्ग है। यह स्थान चंदेरी के किले के दूसरे और तीसरे दरवाजे के बीच में पड़ता है। मूर्तियां और गुफाएं चट्टानों में से बनाई गई हैं। तलहटी में भट्टारकों की छतरियां और मानस्तंभ हैं। निकट ही धर्मशाला कुआं, पूजामंडल आदि बने हैं। उपर जाने को सीढ़ियां हैं। ऊपर ६ गुफाएं हैं। यहां अनेक तीर्थंकर मूर्तियां हैं।

चंदेरी के वार्षिक मेले पर भगवान का विमान यहां आता है।

पपौरा

यह अतिशय क्षेत्र टीकमगढ़ से ५ कि० मी० दूरी पर है। रेल द्वारा जाना हो तो ललितपुर स्टेशन उतरकर ५८ कि० मी० सड़क द्वारा टीकमगढ़ जाना होता है। बस बराबर मिलती है। टीकमगढ़ से यहां बस, तांगा, स्कूटर द्वारा पहुंचा जा सकता है। सड़क से क्षेत्र लगभग २०० मीटर है।

वृक्षावली से घिरे मैदान में एक परकोटे के अंदर १०७ मंदिर हैं। कुछ मंदिरों में पृथक पृथक गर्भगृहों को पृथक मंदिर मान लिया गया है। यदि ऐसा न माना जाए तो मंदिरों की संख्या ६० है। ये मंदिर बारहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक के बताए जाते हैं। सभी मंदिर शिखरबंद हैं। यहां एक

चौबीसी, जिसमें मंदिरों की चौबीसी बनी है, और बाहुबली मंदिर विशेष दर्शनीय है। इस क्षेत्र में चार धर्मशालाएं हैं जिनमें १२५ कमरे और ५ हाल हैं। नल, कुएं, बिजली आदि की समुचित व्यवस्था है।

बंधा

बंधा भी अतिशय क्षेत्र है। टीकमगढ़-झांसी मार्ग पर टीकमगढ़ से ४० कि० मी० दूर बम्होरी-बराना ग्राम है। वहां से १० कि० मी० की दूरी पर बंधा गांव है। मार्ग कच्चा है। बंधा और आस-पास के क्षेत्र में बड़ी मात्रा में अवशेष मिले हैं।

खजुराहो

बंधा से टीकमगढ़, फिर छतरपुर होकर खजुराहो जाना चाहिए। खजुराहो न केवल भारत के अपितु विश्व के प्रसिद्ध पर्यटक केंद्रों में गिना जाता है। इसकी प्रसिद्धि इसके उत्कृष्ट शिल्प और भव्य मंदिरों के कारण है। यहां अनेक जैन एवं हिंदू मंदिर हैं। यहां एक अहाते में ३२ जैन मंदिर और धर्मशालाएं हैं। कहते हैं कभी यहां ८५ मंदिर थे। ५० मंदिर नष्ट हो गए। जैन मंदिरों का यह समूह बस स्टैंड से लगभग ३ कि० मी० की दूरी पर है।

खजुराहो में चंदेलकालीन शिल्प कला का उत्कृष्ट निदर्शन मिलता है। यहां के मंदिरों को तीन उपसमूहों में रखा जा सकता है—पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी। पश्चिमी समूह में हिंदुओं के प्रसिद्ध मंदिर, चौंसठ योगिनी मंदिर, महादेव मंदिर,

कंदारिया मंदिर, आदि प्रसिद्ध मंदिर हैं। कंदारिया मंदिर खजुराहो के मंदिर समूह में सबसे बड़ा मंदिर है। पूर्वी समूह में हिंदुओं का प्रसिद्ध मंदिर हनुमान मंदिर और ४ प्रसिद्ध जैन मंदिर हैं—आदिनाथ, पार्श्वनाथ, शांतिनाथ, और घंटई। जैन मंदिरों में पार्श्वनाथ मंदिर सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। दक्षिणी समूह में दूल्हादेव और चतुर्भुज मंदिर है।

मंदिरों की भीतरी और बाहरी भित्तियों, शिखरों, द्वार शाखाओं पर तीर्थंकर मूर्तियों के अतिरिक्त शासन देव-देवियों, सुर-सुंदरियों, गंधर्व-मिथुनों और व्यालों की भी मूर्तियां बनी हुई हैं। यहां के मंदिरों की मूर्तियों में १००० वर्ष पुरानी अनेक मूर्तियां हैं। शांतिनाथ मंदिर में भगवान शांतिनाथ की मूर्ति लगभग ५ मीटर ऊंची है और अति मनोज्ञ है। पार्श्वनाथ मंदिर के खुले मैदान में एक संग्रहालय है जिसमें प्राचीन जैन मूर्तियां संग्रहीत हैं।

यहां ६ जैन धर्मशालाएं हैं जिनमें से कुछ में यात्री निःशुल्क ठहर सकते हैं। खजुराहो की गाइड बुक भी मिलती है जो बड़ी सहायक सिद्ध होती है।

अहार

टीकमगढ़ से अहार पहुंचा जा सकता है। यह अतिशय क्षेत्र है और टीकमगढ़-बल्देवगढ़ मार्ग पर है। इस मार्ग पर टीकमगढ़ से १५ कि० मी० दूर अहार-तिगोल की पुलिया है। वहां से ५ कि० मी० दूर मदन सागर पहुंचना होता है। इसके आगे अहार क्षेत्र है। क्षेत्र तक बसें जाती हैं। सड़क पक्की है।

यहां भगवान शांतिनाथ का मंदिर है। इसका निर्माण पाड़ाशाह ने कराया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है जो लगभग ५ मीटर ऊंची है। हाल में ६२ दीवार वेदियां, तीन चौबीसी और २० विदेह क्षेत्रस्थ तीर्थंकरों की प्रतिमाएं विराजमान है। गर्भगृह के बाहर चार वेदियां हैं।

मुख्य मंदिर के अतिरिक्त ६ मंदिर तथा २ मानस्तंभ और है। क्षेत्र से लगभग ४०० मीटर के फासले पर पहाड़ी पर ६ लघु मंदिर है। क्षेत्र पर एक संग्रहालय है जिसमें निकटवर्ती क्षेत्र से प्राप्त पुरातत्व सामग्री संग्रहीत है। इनमें अनेक मूर्तियां ११वीं-१२वीं शताब्दी की बताई जाती है।

क्षेत्र पर धर्मशाला, नल, कुआं, बिजली आदि का उत्तम प्रबंध है।

यहां शांतिनाथ दिगंबर जैन विद्यालय, महिलाश्रम और व्रती नामक संस्थाएं चल रही हैं।

द्रोणगिरि

मलहरा से द्रोणगिरि ७ कि० मी० है। सागर, हरपालपुर महोबा, सतना से भी मलहरा पहुंचा जा सकता है। यह इन सभी जगह से लगभग १०० कि० मी० पड़ता है। गांव का नाम सेंधपा है। द्रोणगिरि क्षेत्र पहाड़ी पर है। सेंधपा बस अड्डे से ६० मीटर दूर गांव के भीतर धर्मशाला और गांव का मंदिर और गुरुदत्त जैन संस्कृत विद्यालय है। धर्मशाला में कुल ३ कमरे हैं। बिजली-जल की सुविधा है। गद्दे, बरतन आदि

की सुविधा है। फाल्गुन कृष्ण १ से ५ तक यहां वार्षिक मेला होता है।

यह निर्वाण क्षेत्र माना जाता है। यहां से गुरुदत्त मुनि तथा अन्य मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया था। पर्वत पर पहुंचने के लिए २३२ सीढ़ियां हैं। पर्वत पर २८ जिनालय हैं। यह स्थान पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी को बहुत प्रिय था। क्षेत्र पर कई संस्थाएं भी हैं।

रेशंदीगिरि (नैनागिरि)

यह निर्वाण क्षेत्र है। यहां से वरदत्त आदि मुनिराज ने मुक्ति प्राप्त की। मलहरा से दलपतपुर (६४ कि० मी०) है। वहां से रेशंदीगिरि १२ कि० मी० है। सड़क के एक ओर (पहाड़ी पर) क्षेत्र है, दूसरी ओर गांव है। पर्वत पर ३६ और तलहटी में १५ मंदिर हैं। तलहटी के मंदिरों में जल मंदिर अति भव्य है। यहां तीन धर्मशालाएं हैं जिनमें ५२ कमरे और ३ हाल हैं। बिजली और कुएं की सुविधा है।

पजनारी

पजनारी अतिशय क्षेत्र है। सागर से कानपुर रोड पर २२ कि० मी० पर कंदारी ग्राम है। वहां से ५ कि० मी० पर पजनारी क्षेत्र है। मंदिर में भगवान शांतिनाथ की सवा मीटर ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। दोनों पार्श्वों में भगवान कुंथुनाथ और भगवान अरहनाथ की लगभग पौने दो मीटर ऊंची खड्गासन मूर्तियां हैं।

नदी-तट पर धर्मशाला बन चुकी है।

बीना-बारहा

यह भी अतिशय क्षेत्र है सागर से देवरी कलां ६६ कि० मी० है। सड़क पक्की है। फिर ६ कि० मी० कच्चा मार्ग है। (सड़क बन रही है।)

क्षेत्र पर ६ जैन मंदिर हैं। मुख्य मंदिर भगवान शांति-नाथ का है। उनकी खड्गासन प्रतिमा साढ़े चार मीटर अवगाहना की है। इस प्रतिमा के अतिशयों की अनेक अनु-श्रुतियां प्रचलित हैं।

क्षेत्र पर पहुंचने से पहले ग्राम के बाहर छोटी सी नदी पड़ती है। इस पर पुल नहीं है। ग्राम में प्रवेश करने के लिए नदी पार करनी होती है। ग्राम में प्राचीन भग्नावशेष बिखरे पड़े हैं। कई मकानों में इन भग्नावशेषों का उपयोग उदारतापूर्वक किया गया है। गांव की सीमा पर क्षेत्र है। कोई प्रवेश द्वार या अहाता नहीं है। प्राचीन कुआं है। गरमी के दिनों में या मेले के अवसर पर जल पर्याप्त नहीं हो पाता। यहां धर्मशाला है।

पटनागंज

सागर से ४२ कि० मी० पर रहली है। दमोह से रहली ७० कि० मी० है। रहली के पास नदी के पार क्षेत्र है। रहली और पटनागंज दोनों में धर्मशालाएं हैं पर बाजार आदि की सुविधा रहली में ही है।

इस क्षेत्र में २५ जैन मंदिर हैं। मंदिर नं० २२ बड़ा मंदिर

है जिसमें विराजमान साढ़े चार मीटर ऊंची भगवान महावीर की प्रतिमा को 'बड़े देव' कहा जाता है। इसके अतिशय के कारण यह क्षेत्र अतिशय क्षेत्र कहलाता है। मंदिर नं० २३ में भगवान पार्श्वनाथ की दो अद्भुत प्रतिमाएं हैं।

अजयगढ़

अजयगढ़ छोटा सा गांव है। उसके निकट पहाड़ी पर प्राचीन किला है। यह कालिंजर से लगभग ३२ कि० मी० है। किला लंबा है। भगवान शांतिनाथ की यहां ४.५ मीटर ऊंची खड्गासन प्रतिमा है। चट्टानों में तीर्थंकर मूर्तियां उकेरी हुई हैं। भव्य मानस्तंभ है जिसमें सैकड़ों जैन प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। तलहटी में और आसपास के क्षेत्र में जैन मूर्तियां बिखरी पड़ी हैं।

कारीतलाई

कारीतलाई गांव मैहर से ३५ कि० मी०, कटनी से ४६ कि० मी० और उचहरा से ५० कि० मी० है। गांव के उत्तर में पहाड़ी के किनारे हिंदू और जैन मंदिरों के अवशेष विद्यमान हैं। इन कलावशेषों का बहुत सा सामान—पाषण मूर्तियां और स्तंभ—गांव वालों ने अपने घरों में लगा लिया है। कुछ मूर्तियां, ताम्र पट्ट आदि जबलपुर और रायपुर के संग्रहालयों में संग्रहीत हैं।

कुंडलपुर (कुंडलगिरि)

कुंडलपुर अतिशय क्षेत्र है। जब से इसे अंतिम अननुबद्ध केवली श्रीधर की निर्वाण भूमि माना जाने लगा है, तब से इसे सिद्ध क्षेत्र भी मानते हैं। यह स्थान दमोह से पटेरा (३५ कि० मी०) होते हुए ३८ कि० मी० है। रहली से दमोह की दूरी ७० कि० मी० है।

कुंडलाकार पर्वतमाला से घिरा यह स्थान अत्यंत रमणीक है। यहीं वर्धमान सागर नामक सरोवर की एक ओर मंदिरों की श्रृंखला है, और तीन ओर पर्वतमाला। पर्वत पर मंदिरों की संख्या ६१ है। एक मानस्तंभ भी है। मुख्य मंदिर पहाड़ी पर मंदिर नं० ११ है। इसे बड़े बाबा का मंदिर कहा जाता है। इसमें बड़े बाबा की लगभग ४ मीटर ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। धारणानुसार यह मूर्ति भगवान महावीर की मानी जाती है। किंतु लक्षणादि से यह भगवान आदिनाथ की प्रतिमा प्रतीत होती है।

इस स्थान से महाराज छत्रसाल का संबंध रहा है। कहते हैं, उन्होंने यहां मनौती मनाई थी। फलतः उन्हें विजय प्राप्त हुई। विजयोपरांत उन्होंने यहां पक्का घाट बनवाया। मंदिर का जीर्णोद्धार किया। पीतल का दो मन का घंटा तथा अन्य वस्तुएं भेंट कीं। उनके सान्निध्य में एक विशाल समारोह भी हुआ था।

यहां धर्मशालाएं हैं जिनमें कुल १०० कमरे हैं। बिजली, पानी आदि की सुविधा है। यहां महावीर जयंती और दीपावली के अवसर पर मेले लगते हैं।

यहां का पता है : मंत्री, श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, कुंडलपुर (दमोह), (म० प्र०) ।

जबलपुर

कुंडलपुर से वापस दमोह आकर जबलपुर जाना चाहिए। जबलपुर जैनों का प्रमुख केंद्र है। यहां ४६ दिगंबर जैन मंदिर हैं। लार्ड गंज, हनुमान ताल आदि में जैन धर्मशालाएं हैं। हनुमान ताल के मंदिर में अत्यंत कलापूर्ण मूर्तियां हैं।

त्रिपुरी (तेवर)

यह स्थान जबलपुर से ९ कि० मी० पश्चिम में है। इसका वर्तमान नाम तेवर है। इसके समीप संगमरमर की चट्टानें तथा नर्बदा का धुआंधार जलप्रपात है। बंदरकूदनी नामक प्रसिद्ध संगमरमरी चट्टानें यहीं हैं। यह स्थान अति मनोज्ञ एवं प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। यात्री लोग नाव में बैठकर इनको देखने जाते हैं। लौटते हुए मार्ग में चौंसठ योगनियों का मंदिर पड़ता है।

मढ़िया

मढ़िया एक अतिशय क्षेत्र है, यह 'पिसनहारी की मढ़िया' के नाम से प्रसिद्ध है। जबलपुर-नागपुर मार्ग पर यह जबलपुर से ९६ कि० मी० दूर है। सड़क के किनारे ही धर्मशाला (६० कमरे) तथा महावीर जिनालय है। उसके सामने एक मानस्तंभ है। मंदिर एक पहाड़ी पर है। यहां कुल ३७ मंदिर हैं।

कोनी

यह अतिशय क्षेत्र है। जबलपुर-दमोह मार्ग पर जबलपुर से ३२ कि० मी० की दूरी पर पाटन है। वहां से ४ कि० मी० दूर बासन ग्राम है। कोनी बासन से २ कि० मी० है। सड़क पक्की है। यहां कुल ६ मंदिर हैं। गर्भमंदिर अतिशयसंपन्न है। इस मंदिर में सहस्त्रकूट चैत्यालय है। यहीं नंदीश्वर जिनालय भी दर्शनीय है। क्षेत्र पर धर्मशाला है। यहां प्रतिवर्ष जनवरी में मेला लगता है। यह स्थान काफी समय तक उपेक्षित रहा। अब पाटन के जैन समाज ने इसकी ओर ध्यान देना शुरू किया है।

लखनादोन

जबलपुर लौटकर लखनादोन जाना चाहिए। लखनादोन जबलपुर-सिवनी मार्ग पर है और जबलपुर से ८३ कि० मी० दूर है। यह राष्ट्रीय मार्ग नं० २६ एवं नं० ७ के संगम पर स्थित है। यहां महावीर दिगंबर जैन मंदिर है। इस मंदिर में भगवान महावीर की भूगर्भ से प्राप्त पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमा अत्यंत भव्य एवं अतिशय संपन्न है।

यहां एक जैन धर्मशाला है जो पानी, बिजली आदि की सुविधाओं से संपन्न है।

पनागर

लखनादोन से जबलपुर पहुंचकर पनागर जाना चाहिए। यह जबलपुर से कटनी-जबलपुर रोड पर १६ कि० मी० की दूरी पर है। जबलपुर-सागर रेलमार्ग के देवरी स्टेशन से पनागर

केवल १ कि० मी० पड़ता है। यहां भगवान शांतिनाथ की सातिशय मूर्ति है। यह लगभग ढाई मीटर ऊंची है। इस नगर में कुल १७ मंदिर हैं। पंचायती मंदिर में भगवान ऋषभदेव की कायोत्सर्गासन में लगभग ढाई मीटर ऊंची अत्यंत मनोज्ञ प्रतिमा है। इसके अतिशयों के कारण ही यह क्षेत्र प्रसिद्ध हुआ है। यहां दो धर्मशालाएं हैं। यहां अगहन शुक्ला पूर्णिमा को वार्षिक मेला लगता है।

बहोरीबंद

यह जबलपुर से ६४ कि० मी० और सिहोरा रोड स्टेशन से २४ कि० मी० है। मध्यकाल में यह प्रसिद्ध सांस्कृतिक केंद्र और समृद्ध नगर था। ब्राह्मण, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों के मंदिर आदि थे। जैनों का तो बहुत बड़ा केंद्र रहा है। यहां एक हजार वर्ष पुरानी भगवान शांतिनाथ की ४ मीटर ऊंची प्रतिमा है। पहले यह खुले में थी और इसकी अविनय होती थी। अब वह जैनों के अधिकार में है और मंदिर बन रहा है। मूर्ति के कारण इस क्षेत्र की गणना अतिशय क्षेत्रों में की जाती है। खुदाई में १६ मूर्तियां और निकली हैं। ६ कमरों वाली एक धर्मशाला भी है। इस क्षेत्र का नवनिर्माण हो रहा है।

मक्सी पार्श्वनाथ

यह अतिशय क्षेत्र भोपाल-उज्जैन रेल लाइन पर मक्सी स्टेशन से ३ कि० मी० दूर है। स्टेशन से लगभग २०० मीटर के फासले पर दिगंबर जैन धर्मशाला है।

उज्जैन से यह ३८ कि० मी० और इंदौर से ७२ कि० मी० है। उज्जैन, इंदौर और शाजापुर से बसें मिलती हैं। गांव (जहां क्षेत्र है) का नाम कल्याणपुर है।

क्षेत्र पर दो मंदिर और धर्मशालाएं है। बड़ा मंदिर भगवान पार्श्वनाथ का है। उन्हीं के अतिशय के कारण यह अतिशय क्षेत्र बना है। मंदिर में दिगंबर और श्वेतांबर दोनों ही अपनी मान्यतानुसार दर्शन-पूजन करते हैं। दर्शकों पर कोई प्रतिबंध नही है। दिगंबर लोग पूजन प्रातः ६ से ९ बजे तक करते है।

छोटा मंदिर भगवान सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर है। उसके पृष्ठ भाग में यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था है। नल, बिजली आदि की व्यवस्था है।

उज्जैन

उज्जैन प्राचीन सांस्कृतिक नगर है। यह क्षिप्रा नदी के तट पर बसा है। भारतीय साहित्य और राजनीति में इसका विशेप स्थान है। जहां तक जैनों से इसके संबंध का प्रश्न है। यहां पर श्मसान में भगवान महावीर पर रुद्र ने उपसर्ग किया था। यहीं पर दुर्भिक्ष की भावी घटना ज्ञात होने पर अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु अपने विशाल संघ सहित दक्षिण भारत की ओर चले गए थे। उनके साथ सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य भी मुनि दीक्षा लेकर गए थे।

मुनि अभय घोप अंतकृत केवली यहां से मोक्ष पधारे, इसलिए इस स्थान को निर्वाण क्षेत्र माना जाता है। उज्जयिनी के

आस-पास भी जैनों से संबंधित प्रचुर सामग्री, मूर्ति आदि के रूप में मिलती हैं। बदनावर, गोंदल, मऊ, सुंदरसी, गुना, सुसनेर आदि अनेक स्थानों से मूर्तियां, मूर्तिफलक आदि प्राप्त हुए हैं। उज्जयिनी में जैसिंहपुरा मुहल्ले में स्थित दिगंबर जैन मंदिर में एक जैन पुरातत्व संग्रहालय स्थापित किया गया है। यह परमार कालीन जैन पुरातत्व सामग्री से समृद्ध है। इसमें लगभग ५०० प्राचीन मूर्तियां और कलाकृतियां सुरक्षित हैं।

विक्रम विश्वविद्यालय पुरातत्व संग्रहालय में भी उज्जैन जिले और आसपास से प्राप्त जैन सामग्री संग्रहीत है।

गंधर्वपुरी

उज्जैन से देवास होते हुए सोनकच्छ ६६ कि० मी० पड़ता है। वहां से ६ कि० मी० की दूरी पर गंधर्वपुरी है। नगर में एक जैन मंदिर है और एक राजकीय संग्रहालय है। संग्रहालय में अनेक जैन मूर्तियां हैं। नगर में और बाहर जैन पुरातत्व सामग्री बिखरी पड़ी है। यहां धर्मशाला नहीं है।

विदिशा

विदिशा (भेलसा) मध्य रेलवे का स्टेशन है। इसके पास कई जैन केंद्र थे। यहां से कुछ दूर पर सांची है जहां पर प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप है।

यहां पर सेठ लक्ष्मीचंद्र की धर्मशाला सुविधासंपन्न है। उसी में जिनालय है। इधर-उधर से प्राप्त मूर्तियां भी उसमें

हैं। ये सभी ९वीं-१०वीं शताब्दी तक की मूर्तियां बताई जाती हैं।

विदिशा में एक राजकीय संग्रहालय भी है। इसमें भी कुछ प्राचीन जैन मूर्तियां हैं। इनमें उल्लेखनीय सम्राट रामगुप्त द्वारा प्रतिष्ठित भगवान चंद्रप्रभ की मूर्ति है।

उदयगिरि गुहा मंदिर

विदिशा से ६ कि० मी० और सांची से ८ कि० मी० पर है। पहाड़ काटकर गुफाओं का निर्माण किया गया है। बीस गुफाएं हैं जिनमें नं० १ और नं० २० जैन हैं, शेष शैव और वैष्णव हैं।

उदयपुर

विदिशा से उत्तर दिशा में ४५ कि० मी० दूर है। यहां पर कई हिंदू और जैन मंदिरों का निर्माण हुआ था। वर्तमान में जैन मंदिर भग्नावस्था में हैं, उनमें कई विशाल तीर्थंकर मूर्तियां है।

ग्यारसपुर

विदिशा से सागर जाने वाली सड़क पर ३८ कि० मी० दूरी पर ग्यारसपुर है। यह प्राचीन नगर और कला तीर्थ है। कुछ विद्वान इसको भगवान शीतलनाथ की तपोभूमि और कल्याणक क्षेत्र मानते हैं। कतिपय दैवी घटनाओं के कारण यह अतिशय क्षेत्र माना जाता है।

नगर के भीतर और बाहर पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। नगर के दक्षिण की ओर पहाड़ी पर माला देवी का मंदिर है। वहां से

उतरकर मैदान में वज्रमठ मंदिर है । ये दोनों जैन मंदिर हैं। इनकी कला उच्च कोटि की है।

यहां कोई धर्मशाला नहीं है। नगर में एक चैत्यालय है।

पठारी

विदिशा से रेल मार्ग द्वारा मंडी बमौरा ६८ कि० मी० है। वहां से पठारी १२ कि० मी० है। यहां गडरमल नाम का जैन मंदिर विशाल मंदिर है और पहाड़ की तलहटी में जैन मंदिरों का समूह है। ये संभवत: आठवीं-नवीं शताब्दी के हैं। यहां कतिपय प्राचीन जैन मूर्तियां और मंदिरों के ध्वंसावशेष भी हैं।

बनेड़िया

यह अतिशय क्षेत्र है। इंदौर से देवालपुर होकर बनेड़िया ४५ कि० मी० है। सड़क पक्की है। बसें क्षेत्र तक जाती हैं। यहां सरोवर के तट पर परकोटे में दो जिनमंदिर हैं। जिनमें एक प्राचीन है। यहां के अतिशय की किंवदंतियां प्रचलित हैं । धर्मशाला (३० कमरे) है, बिजली है, कुआं है। यहां चैत्र सुदी १३ से १५ तक वार्षिक मेला लगता है।

इंदौर

व्यवसाय, कला और साहित्य से संपन्न इंदौर नगर मध्यप्रदेश के प्रमुख नगरों में है। यह उज्जैन से ८० कि० मी० और देवास से ४० कि० मी०, रतलाम से १२० कि० मी० और खंडवा से १४० कि० मी० है। यहां जंवरीबाग में सर सेठ हुकुमचंद जी

की नशिया है। वहीं धर्मशाला, जिनालय, महाविद्यालय आदि हैं। यह नगर जैनों का गढ़ है। यहां बहुत सी जैन संस्थाएं हैं। यहां प्रमुख मंदिरों में कांच मंदिर (शीश महल), तुकोगंज-मल्हारगंज और दितवारिया के मंदिर हैं। यहां राजमहल आदि अन्य अनेक भवन दर्शनीय हैं।

चूलगिरि (बावनगजा)

इंदौर से सड़क द्वारा १५० कि० मी० बड़वानी है, वहां से क्षेत्र ७ कि० मी० है। बस क्षेत्र तक जाती है। यहां सिद्धक्षेत्र है। माना जाता है कि इंद्रजीत कुंभकरण आदि अनेक मुनि यहां से मोक्ष पधारे थे।

यहां पाषाण में भगवान आदिनाथ की लगभग २७ मीटर ऊंची प्रतिमा उकेरी हुई है। (यह प्रतिमा ५२ हाथ ऊंची है, पहले संभवत: एक हाथ को गज कहते थे इसलिए यह बावनगजा कहलाती है) अनुमान है कि यह मूर्ति १३वीं शताब्दी से पहले की है।

पहाड़ी पर ११ और तलहटी में १५ मंदिर हैं। चार धर्मशालाएं हैं जिनमें कुल ५० कमरे हैं और पानी, बिजली आदि की व्यवस्था है।

बड़वानी

यह एक अच्छा नगर है। यहां पर विशाल दिगंबर जैन मंदिर है। चूलगिरि क्षेत्र की चार धर्मशालाएं भी बड़वानी में हैं।

तालनपुर

बड़वानी से कुक्षि होकर तालनपुर पहुंचना चाहिए। यह दूरी कुल २७ कि० मी० है। सड़क पक्की है और बस सेवा नियमित है। तालनपुर अतिशय क्षेत्र है। यहां भूगर्भ से १३ मूर्तियां प्राप्त हुई थीं। इनमें से ८ छोटी मूर्तियां श्वेतांबर समाज ने तथा ५ बड़ी मूर्तियां दिगंबर समाज ने ले लीं। दोनों समाजों के मंदिर पास पास ही हैं। यहां एक दिगंबर जैन धर्मशाला भी है।

पावागिरि

बड़वानी लौटकर बस द्वारा ऊन पहुंचना चाहिए। सड़क के किनारे ही क्षेत्र और धर्मशाला है। यह सिद्ध क्षेत्र है। यहां से स्वर्गभद्र आदि मुनियों को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। यहां के चमत्कारों के बारे में अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं।

ऊन की जनसंख्या लगभग चार हजार है। यहा दवाखाना, थाना, डाकघर, स्कूल आदि हैं। ऊन इंदौर से १४५ कि० मी०, खंडवा से १०४ कि० मी०, सनावद से ८३ कि० मी० है। खंडवा और सनावद से आने वाला मार्ग खरगौन होकर है तथा इंदौर से आने वाला मार्ग बड़वानी जुलवानिया होकर।

यहां तीन मंदिर हैं। ग्वालेश्वर या शांतिनाथ मंदिर क्षेत्र से दो फर्लांग पर है। लौटने के मार्ग में पंच पहाड़ी नामक एक टीला है। उस पर पांच लघु मंदिर हैं। ऊन नगर में ११वीं-१२वीं शताब्दी के मंदिर और मूर्तियां हैं।

यहां धर्मशाला बहुत बड़ी है और सभी सुविधाओं से संपन्न है।

सिद्धवरकूट

ऊन से सनावद होते हुए मांधाता पहुंचना चाहिए। यह दूरी कुल ८८ कि० मी० है। सड़क पक्की है। मांधाता से सिद्धवर-कूट जाना होता है। इंदौर-खंडवा रेलमार्ग पर बड़वाह स्टेशन से क्षेत्र केवल १९ कि० मी० है। किंतु नदी पार करनी होती है और सड़क कच्ची है। सिद्धवरकूट नर्मदा और कावेरी नदियों का संगम स्थल है। मांधाता में क्षेत्र की धर्मशाला है। धर्मशाला के मैनेजर से नाव आदि की पूरी जानकारी मिल जाती है। सिद्धवरकूट क्षेत्र को नाव द्वारा ही जाना होता है। यहां दोनों नदियों के मध्य पर्वत आ गया है। उसी पर्वत पर प्रसिद्ध ओंकारेश्वर वैष्णव तीर्थ है।

सिद्धवरकूट सिद्ध क्षेत्र है। यहां से २ चक्रवर्ती, १० काम-देव और असंख्य मुनि हुए हैं। यहां १० जिनालय हैं और १४ धर्मशालाएं हैं। इन धर्मशालाओं में कुल मिलाकर ६४ कमरे हैं। नल, बिजली, बरतन आदि की सुविधाएं उपलब्ध है। यहा का पता है : मंत्री, श्री दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र, सिद्धवर-कूट, पो० मांधाता, (ओंकारेश्वर), जिला पूर्व निमाड़, म० प्र०।

यहां फागुन सुदी १३ से १५ तक वार्षिक मेला लगता है।

प्रश्न

१. हस्तिनापुर, मथुरा, अयोध्या, बनारस और पटना का वर्णन कीजिए ?

२. कुंडलपुर, राजगृह और पावापुर का संक्षेप में वर्णन करो ?

३. सम्मेदशिखर जैनों का महान तीर्थ क्यों कहलाता है ? इस तीर्थ के बारे में जो कुछ आप जानते है विस्तार से लिखिए।

४. उदयगिरि और खंडगिरि तीर्थों के विषय में आप क्या जानते हैं ? खारबेल का संक्षिप्त विवरण दीजिए ?

५. बाहुबली और भद्रबाहु स्वामी के बारे में आप क्या जानते हैं ? श्रवण-बेलगोल और मूड़बद्री तीर्थों का वृतान्त लिखिए ?

६. कारकल, कुंथलगिरि, एलोरा की गुफाओं, मांगीतुंगी और गजपंथा का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ?

७. पावागढ़, पालीताणा-शत्रुंजय, गिरिनारजी, तारंगाजी और आबू पर्वत के तीर्थों के बारे में आप क्या जानते है ?

८. श्री केशरियानाथ, बीजोल्या पार्श्वनाथ, सिद्धवरकूट, पावागिरि, बावनगजाजी, मक्सी पार्श्वनाथ, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ, मुक्तागिरि, द्रोणगिरि, नैनागिरि खुजराहो, देवगढ, चंदेरी, पपौरा, अहार, कंपिला, सोनागिरि और महावीरजी अतिशय क्षेत्र कहां हैं ? उनका संक्षिप्त परिचय लिखिए ?

९. वह कौन सा तीर्थ है जहां किन्हीं तीर्थंकर के पांचों कल्याणक हुए थे। संक्षेप में उसका वर्णन कीजिए ?

१०. तीर्थक्षेत्र कमेटी, शिलालेख, मानस्तंभ और भट्टारक से आप क्या समझते हैं ?

११. जीर्णोद्धार किसे कहते है ? किन किन जैन तीर्थों के जीर्णोद्धार की विशेष आवश्यकता है ? जीर्णोद्धार का कार्य नए मंदिर बनवाने की अपेक्षा अधिक आवश्यक और महान पुण्यबंध का कारण है—इसके पक्ष मे लिखिए।

१२. तीर्थक्षेत्रों की उन्नति के कुछ उपाय बताइए।

१३. तीर्थयात्रा में एक यात्री की दिनचर्या और व्यवहार कैसा होना चाहिए ? उसे यात्रा में क्या क्या सावधानी रखनी चाहिए ?

१४. अप्रकट तीर्थों का पता लगाना क्यों आवश्यक है ?

१५. कौन सा तीर्थ अनादि तीर्थ माना जाता है ? सक्षेप मे उसका वर्णन कीजिए।

१६ श्रवणबेलगोल मे भ० बाहुबली की प्रतिमा का अभिषेक कितने वर्षों बाद होता है। सन १९८१ का महामस्तभिषेक प्रतिमा की स्थापना के कितने वर्षों बाद हो रहा है।

१७. १०० तीर्थों के नाम कठस्थ कीजिए।

१८. ऐसे तीन संग्रहालयों के नाम बताइए, जहा जैन प्रतिमाए एव लेख सुरक्षित है।

१९. कला की दृष्टि मे कौन सा तीर्थ अच्छा माना जाता है।

२०. सिद्ध क्षेत्रों की एक सूची बनाइए।

२१. चौबीसों तीर्थकरो की निर्वाण भूमि कहा कहा है ?

यात्रा के लिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

आप देश के सरकुलर भ्रमण के लिए पहले या दूसरे दर्जे का सरकुलर यात्रा टिकट निर्धारित स्टेशनों से खरीद सकते हैं। इसका रियायती किराया डाक गाड़ी के सामान्य किराए से १५ प्रतिशत कम है। किराया-श्रेणी तथा वैधता की अवधि (३०, ६० या ९० दिन) यात्रा की कुल दूरी पर निर्भर करेगी। मार्ग में आप जिस स्टेशन पर यात्रा विराम करना चाहें और जितने समय के लिए करना चाहें उसके लिए आपको अनुमति होगी किंतु यह अवधि टिकट वैधता की अवधि से आगे नहीं होनी चाहिए।

रेलवे ने ३० प्रकार के मानक सरकुलर यात्रा टिकट निर्धारित किए हैं। इनमें भारत के संपूर्ण मनोरम दर्शनीय स्थलों को शामिल किया गया है। इनमें से आप किसी भी एक यात्रा का चयन कर सकते हैं।

यदि आपने अपनी सुविधा के अनुसार अपना कोई अलग से कार्यक्रम बनाया है तो कृपया इस संबंध में रेलवे से आप स्वयं संपर्क स्थापित करें या अपनी आवश्यकता के बारे में उन्हें लिखें। रेलवे आपके भ्रमण कार्यक्रम के लिए रियायती किराए का हिसाब लगाकर आपको जानकारी देगी। (यह आवश्यक है कि यात्रा सरकुलर होनी चाहिए और यात्रा की दूरी २४०० किलोमीटर से कम नहीं होनी चाहिए तथा प्रभारी किराया-दूरी सीधे यात्रा मार्ग द्वारा भ्रमण सूची में दर्ज प्रारंभिक स्टेशन और सबसे दूर के स्टेशन के बीच की दूरी से तीन गुना से अधिक होनी चाहिए)।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया समीपवर्ती स्टेशन के स्टेशन मास्टर या संबंधित मंडल के वाणिज्य अधीक्षक से संपर्क स्थापित करें। दिल्ली में दूरभाष ३८७३२६/३८७५०३ पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी सुविधा के लिए हमने १० यात्रा मार्ग प्रस्तावित किए हैं। इनमें से भी आप चुन सकते हैं और रेलवे से सरकुलर यात्रा टिकट के लिए संपर्क कर सकते हैं अथवा अपनी बस कर सकते हैं।

मार्ग विवरण

यात्रा मार्ग-१

स्थान	कि० मी०
बंगलौर से कांचीपुरम्	२६३
काचीपुरम् से मद्रास	७१
मद्रास से महाबलीपुरम्	६०
महाबलीपुरम् से वेदानथगल	६४
वेदानथगल से तिडीवनम्	३१
तिडीवनम् से पांडिचेरी	३६
पांडिचेरी से चिदंबरम	६०
चिदंबरम से तिरुचिरपल्ली	१६३
तिरुचिरपल्ली से तजावूर	६०
तंजावूर से मदुरई	१६८
मदुरई से रामेश्वरम्	१३६
रामेश्वरम् से मदुरई	१३६
मदुरई से कन्याकुमारी	२३२
कन्याकुमारी से त्रिवेंद्रम्	८७
त्रिवेंद्रम् से कोवलम्	१३
कोवलम् से ठेकाडी	२६६
ठेकाडी से कोचीन	२०८
कोचीन से उटकमंड	२६१
उटकमंड से बांदीपुर	७८
बांदीपुर से मैसूर	८०
मैसूर से मेरकारा (वाया गोम्मटगिरि)	७२
मेरकारा से तालकेवरी	४८
तालकेवरी से मंगलौर	१२५
मंगलौर से मूडबिद्री	३४
मूडबिद्री से वेन्नूर	१६
वेन्नूर से धर्मस्थल	३२
धर्मस्थल से बेलूर	८०
बेलूर से हलेबीडू	१६
हलेबीडू से हासन	३२
हासन से श्रवणबेलगोल	५२
श्रवणबेलगोल से बंगलौर	१४५

यात्रा मार्ग-२

स्थान	कि० मी०
मैसूर से गोम्मटगिरि	२७
गोम्मटगिरि से मैसूर	२७
मैसूर से बंगलौर	१३५

बंगलौर से हैदराबाद	५६६
हैदराबाद से नागपुर	४८८
नागपुर से रामटेक	४८
नागपुर से जबलपुर	२४९
जबलपुर से खजुराहो	२७०
खजुराहो से झांसी	१९२
झांसी से सोनागिरि	४५
सोनागिरि से ग्वालियर	६६
ग्वालियर से आगरा	११८
आगरा से मथुरा	५४
मथुरा से दिल्ली	१५०

यात्रा मार्ग-३

स्थान	कि० मी०
दिल्ली से जयपुर (वाया कोटपुतली)	२५९
जयपुर से पदमपुरा	३४
पदमपुरा से जयपुर	३४
जयपुर से अजमेर	१३८
अजमेर से चित्तौड़गढ़	१८२
चित्तौड़गढ़ से रतलाम	१८४
रतलाम से इंदौर	१२०
इंदौर से सिद्धवरकूट	७७
सिद्धवरकूट से पावागिरि	८६
पावागिरि से बड़वानी (चूलगिरि)	५९
बड़वानी से धूलिया (वाया जुलवानिया)	२०७
धूलिया से चालीस गांव	५५
चालीस गांव से एलोरा	६४
एलोरा से औरंगाबाद	२९
औरंगाबाद से अजंता	९९
अजंता से औरंगाबाद	९९
औरंगाबाद से पैठण	५६
पैठण से अहमदनगर	८५
अहमदनगर से पूना	११८
पूना से कोल्हापुर	२२५
कोल्हापुर से कुंभोज बाहुबली	२५
कुंभोज बाहुबली से कोल्हापुर	२५
कोल्हापुर से निप्पानी	४०
निप्पानी से स्तवनिधि	६
स्तवनिधि से बेलगांव	६५
बेलगांव से हुबली	१०२
हुबली से जोगफाल्स	११६
जोगफाल्स से शिमोगा	१०४
शिमोगा से हुमचा	४८
हुमचा से कुंदाद्रि	३५
कुंदाद्रि से आगुंबे	४६
आगुंबे से श्रृंगेरी	४६
श्रृंगेरी से वरांग	२७
वरांग से उडुपी	६५
उडुपी से कारकल	३८
कारकल से मंगलौर	५३
मंगलौर से मूडबिद्री	३४
मूडबिद्री से वेन्नूर	१९

वेन्नूर से धर्मस्थल	३२
धर्मस्थल से बेलूर	८०
बेलूर से हलेबीडू	१६
हलेबीडू से हासन	३२
हासन से श्रवणबेलगोला	५२
श्रवणबेलगोल से मैसूर	८५

यात्रा मार्ग-४

स्थान	कि० मी०
दिल्ली से मथुरा	१५०
मथुरा से श्री महावीरजी	११६
श्री महावीरजी से सवाई माधोपुर	६८
सवाई माधोपुर से पदमपुरा	१०६
पदमपुरा से जयपुर	३४
जयपुर से अजमेर	१३८
अजमेर से आबू रोड	३०५
आबू रोड से महेसाना	११८
महेसाना से तारंगा	५७
तारंगा से महेसाना	५७
महेसाना से गिरनारजी	४६६
गिरनारजी से सोनगढ़	१८४
सोनगढ़ से पालीताणा	२२
पालीताणा से अहमदाबाद	२१५
अहमदाबाद से वड़ौदा	१२०
वड़ौदा से पावागढ़	५६
पावागढ़ से वड़ौदा	५६
बड़ौदा से सूरत	१२६
सूरत से बंबई	२६२
बंबई से पूना	१६६
पूना से कोल्हापुर	२२५
कोल्हापुर से कुम्भोज बाहुबली	२५
कुंभोज बाहुबली से कोल्हापुर	२५
कोल्हापुर से निप्पानी	४०
निप्पानी से स्तवनिधि	६
स्तवनिधि से बेलगांव	६५
बेलगांव से गोवा	४६
गोवा से हुबली (वाया लौंडा)	८२
हुबली से जोगफाल्स	११६
जोगफाल्स से शिमोगा	१०४
शिमोगा से हुमचा	४८
हुमचा से कुंदाद्री	३५
कुंदाद्रि से आगुबे	४६
आगुबे से श्रृंगेरी	४६
श्रृंगेरी से वरांग	२७
वरांग से उदुपी	६५
उदुपी से कारकल	३६
कारकल से मंगलौर	२६
मंगलौर से मूडबिद्री	३२
मूडबिद्री से वेन्नूर	१६
वेन्नूर से धर्मस्थल	३२
धर्मस्थल से बैलूर	८०
बैलूर से हलेबीडू	१६
हलेबीडू से हासन	३२
हासन से श्रवणबेलगोल	५२

श्रवणबेलगोला से मैसूर	८५

यात्रा मार्ग-५

स्थान	कि० मी०
मैसूर से बंगलौर	१३५
बगलौर से तुमकुर	७०
तुमकुर से चित्रदुर्ग	१३०
चित्रदुर्ग से हुपी	१५०
हुपी से हुनगुड	१०७
हुपी से पट्टकदल	१२
पट्टकदल से बादामी	२६
बादामी से एहोले	२५
एहोले से बीजापुर	१३६
बीजापुर से शोलापुर	१०१
शोलापुर से कुथलगिरि	१५
कुथलगिरि से ऐलोरा (वाया औरंगाबाद)	१६१
ऐलोरा से अजंता	६५
अजन्ता से धूलिया (वाया जलगांव)	१४३
धूलिया से जुलवानिया	१३०
जुलवानिया से बड़वानी	४४
बडवानी से पावागिरि (वाया जुलवानिया)	३०
पावागिरि से सिद्धवरकूट	८६
सिद्धवरकूट से इंदौर	७७
इंदौर से उज्जैन	५३
उज्जैन से मक्सीजी	३८
मक्सीजी से भोपाल	१८६
भोपाल से ग्वालियर (वाया सोनागिरि)	४२४
ग्वालियर से आगरा	११८
आगरा से मथुरा	५४
मथुरा से दिल्ली	१५०

यात्रा मार्ग-६

स्थान	कि० मी०
दिल्ली से जयपुर (वाया कोटपुतली)	२५६
जयपुर से अजमेर	१३८
अजमेर से चित्तौड़गढ़	१८२
चित्तौडगढ़ से उदयपुर	११७
उदयपुर से अहमदाबाद	२३४
अहमदाबाद से बंबई	४६२
बंबई से नासिक	१८५
नासिक से गजपंथा	६
गजपंथा से मांगीतुंगी	१६०
मांगीतुंगी से अजंता	१०५
अजन्ता से ऐलोरा	७५
ऐलोरा से औरंगाबाद	२६
औरंगाबाद से कुंथलगिरि	१६१
कुंथलगिरि से शोलापुर	१५
शोलापुर से बीजापुर	१०१
बीजापुर से बाबानगर	५

वाबानगर मे बीजापुर	५
बीजापुर से एहोले	१३६
एहोले मे पट्टकदल	२५
पट्टकदल से बादामी	२६
बादामी मे सौदत्ति	७२
सौदत्ति से सिरसी	६०
सिरसी मे हुबली	११६
हुबली से जोगफाल्स	११६
जोगफाल्स मे शिमोगा	१०४
शिमोगा से हुमचा	४८
हुमचा से कुंदाद्रि	३५
कुदाद्रि से आगुबे	४६
आगुबे से शृंगेरी	४६
शृंगेरी से वरांग	२७
वरांग से उदुपी	६५
उदुपी से कारकल	३८
कारकल से मंगलौर	५३
मगलौर मे मूडबिद्री	३४
मूडबिद्री मे वेन्नूर	१६
वेन्नूर मे धर्मस्थल	३२
धर्मस्थल मे वेन्नूर	८०
वेनूर मे हलेबीडू	१६
हलेबीडू मे हासन	३२
हासन से श्रवणबेलगोला	५२
श्रवणबेलागोल से मैसूर	८५

यात्रा मार्ग-७

स्थान	कि० मी०
बंगलौर से हैदराबाद	५६६
हैदराबाद मे नागपुर	४८८
नागपुर से रामटेक	४८
रामटेक स नागपुर	४८
नागपुर से रांची (रायपुर, सबलपुर, सुंदरगढ़, राउरकेला)	६७२
रांची से सम्मेदशिखर जी	२००
सम्मेदशिखर जी से राजगिरि	२३०
राजगिरि मे पावापुरी	३४
पावापुरी से पटना	८६
पटना मे वाराणसी	२५६
वाराणसी से सिंहपुरी	६
सिंहपुरी से चंद्रपुरी	१५
चंद्रपुरी से वाराणसी	२१
वाराणसी मे अयोध्याजी	१३२
अयोध्याजी मे रत्नपुरी	२२
रत्नपुरी मे फैजाबाद	१६
फैजाबाद मे लखनऊ	१२६
लखनऊ से कानपुर	७७
कानपुर मे फिरोजाबाद	२६४
फिरोजाबाद मे अलीगढ़	६४
अलीगढ़ से दिल्ली	१३४

यात्रा मार्ग-८

स्थान	कि० मी०
मैसूर से श्रीरंगपट्टनम्	१६
श्रीरंगपट्टनम् से बगलौर	१५१
बगलौर से कांचीपुरम	२६३
कांचीपुरम से महाबलीपुरम	६४
महाबलीपुरम से मद्रास	६०
मद्रास से विशाखापट्टनम्	७८३
विशाखापट्टनम् से पुरी	४७८
पुरी से भुवनेश्वर	६२
पुरी से कोनार्क	३२
कोनार्क से भुवनेश्वर	६४
भुवनेश्वर से कटक	२४
भुवनेश्वर से खण्डगिरि उदयगिरि	५
कटक से बलसौर	१७०
बलसौर से खडगपुर	१७२
खडगपुर से कलकत्ता	१३२
कलकत्ता से बोधगया	४६७
(बोधगया से जाते समय सम्मेद-शिखरजी के लिए डुमरी से जाएं)	
बोधगया से गया	११
गया से राजगिर	६६
राजगिर से पावापुरी	३४
पावापुरी से गुणावा (वापसी)	३
पावापुरी से पटना	८६
पटना से वाराणसी	२४६
वाराणसी से सिंहपुरी	६
सिंहपुरी से चंद्रपुरी	१५
चंद्रपुरी से वाराणसी	२१
वाराणसी से अयोध्याजी	१९२
अयोध्याजी से लखनऊ	१३२
लखनऊ से कानपुर	७७
कानपुर से फिरोजाबाद	२६४
फिरोजाबाद से आगरा	४५
आगरा से मथुरा	५४
मथुरा से दिल्ली	१५०

यात्रा मार्ग-९

स्थान	कि० मी०
पटना से वैशाली	स्टीमर व बस
वैशाली से मुजफ्फरपुर	अथवा रेल
मुजफ्फरपुर से गोरखपुर	२७३
(वाया मोतीहारी गोपालगंज)	
गोरखपुर से देवरिया	५१
देवरिया से काकंदी	१४
काकंदी से कुकुभग्राम	१६
कुकुभग्राम से वाराणसी	२००
(वाया चंद्रपुरी, सिंहपुरी	
वाराणसी से इलाहाबाद	१२२
इलाहाबाद से कौशांबी	६३
कौशांबी से पभोसा	१०
पभोसा से इलाहाबाद	७०
इलाहाबाद से अयोध्याजी	१६५

अयोध्याजी से फैजाबाद	६
फैजाबाद से रत्नपुरी	१६
रत्नपुरी से फैजाबाद	१६
फैजाबाद से श्रावस्ती	११५
(वाया उत्तराउल्ला व बहरमपुर)	
श्रावस्ती से बाराबंकी	१२५
(वाया बहराइच)	
बाराबंकी से त्रिलोकपुरी	१६७
त्रिलोकपुरी से लखनऊ	२६०
लखनऊ से अहिच्छेत्र	१८०
(वाया सीतापुर बरेली)	
अहिच्छेत्र से दिल्ली	२३०

यात्रा मार्ग १०

स्थान	कि०मी०
दिल्ली से मथुरा	१५०
मथुरा से आगरा	५४
आगरा से ग्वालियर	११६
ग्वालियर से सोनागिरि	६६
सोनागिरि से झांसी	४१
झांसी से ललितपुर	६२
ललितपुर से खजुराहो	१७३
खजुराहो से सागर	१८८
सागर से विदिशा	११०
विदिशा से उदयगिरि	३८
उदयगिरि से सांचीभोपाल	६६
सांचीभोपाल से देवास	७७
देवास से मक्सी पारसनाथ	३५
मक्सी पारसनाथ से इंदौर	७०
इंदौर से फालघाट	८३
फालघाट से बड़वानी	६६
बड़वानी से चूलगिरि	११
चूलगिरि से धुले	२०६
धुले से मालीगांव	४५
मालीगांव से मांगी-तुंगी	६८
मांगी-तुंगी से एलोरा औरंगाबाद	४८
औरंगाबाद से अजंता	८६
अजंता से औरंगाबाद	८६
औरंगाबाद से बिर	१२७
बिर से कुंथलगिरि	६३
कुंथलगिरि से तेर	१६
तेर से उस्मानाबाद	५३
उस्मानाबाद से शोलापुर	५६
शोलापुर से हैदराबाद	३०३
हैदराबाद से कुरनूल	२०८
कुरनूल मे गूटी	६४
गूटी से अनंतपुर	५७
अनंतपुर से बंगलौर	२१३
बंगलौर से मैसूर	१४६
मैसूर से वृंदावनगार्डस	१६
वृंदावनगार्डस से गोम्मटगिरि	२२
गोम्मटगिरि से मैसूर	२७
मैसूर से श्रवणबेलगोल	१००
श्रवणबेलगोल से हासन	४०

हासन से हेलिबिड	३१	अंकलेश्वर से बड़ोदरा	८४
हेलिबिड से बेलूर	१४	बड़ोदरा से पावागढ़	४८
बेलूर से मूडगिरि	३३	पावागढ़ से अहमदाबाद	१६०
मूडगिरि से धर्मस्थल	४५	अहमदाबाद से राजकोट	२२३
धर्मस्थल से वेनूर	३२	राजकोट से जूनागढ़	१००
वेनूर से मूडबिद्री	२५	जूनागढ़ से पालीताणा	२२०
मूडबिद्री से कारकल	२६	पालीताणा से सोनगढ़	२३
कारकल से वरांग	२७	सोनगढ़ से अहमदाबाद	
वरांग से कुंदारगिरि	७३	(वाया भावनगर धनडुका)	२२८
कुंदारगिरि से हुमचा	७२	अहमदाबाद से मेहसाना	६९
हुमचा से नरसिंहराजपुर	७५	मेहसाना से तारगाजी	६०
नरसिंहराजपुर से शिमोगा	४५	तारगाजी से आबू	१२१
शिमोगा से जोगफाल्स	९६	आबू से दिलवाड़ा	३
जोगफाल्स से हुबली	१५९	दिलवाड़ा से अचलगढ़	६
हुबली से बेलगांव	१०२	अचलगढ़ से उदयपुर	
बेलगांव से स्तवनिधि	६५	(वाया रणकपुर)	२६०
स्तवनिधि से निप्पानी	६	उदयपुर से ऋषभदेव	
निप्पानी से कोल्हापुर	४०	(केशरियानाथ)	६५
कोल्हापुर से बाहुबली कुंभोज	२५	ऋषभदेव से उदयपुर (वापस)	६५
बाहुबली कुंभोज से सतारा	११९	उदयपुर से चित्तौड़गढ़	९८
सतारा से पूना	१०६	चित्तौड़गढ़ से अजमेर	१८७
पूना से बंबई	१९५	अजमेर से पुष्कर	९
बंबई से नासिक	१४१	पुष्कर से जयपुर	१३९
नासिक से गजपंथा	६	जयपुर से श्रीमहावीरजी	१७५
गजपंथा से वलसाड	१५६	श्रीमहावीरजी से अलवर	१९०
वलसाड से सूरत	८७	अलवर से तिजारा	६०
सूरत से अंकलेश्वर	५४	तिजारा से दिल्ली	११२

हवाई अड्डों की सूची

अगरतला
अहमदाबाद
अमृतसर
आगरा
इम्फाल
इन्दौर
उदयपुर
औरंगाबाद
कलकत्ता
कानपुर
केशोद
कोचीन
कोयम्बटूर
कोटा
खजुराहो
ग्वालियर
गोरखपुर
गोहाटी
चण्डीगढ़
जबलपुर
जयपुर
जम्मू
जामनगर
जोधपुर
जोरहाट
डिब्रूगढ़
तिरुचिरापल्ली
तिरुपति
त्रिवेन्द्रम्
दिल्ली
दिमापुर
नागपुर
पटना
पुणे
पोरबंदर
बम्बई
बेंगलूर
बेलगाम
भावनगर
भोपाल
भुवनेश्वर
भुज
मद्रास
मदुराई
मेंगलूर
रायपुर
राजकोट
रांची
लखनऊ
वाराणसी
बड़ोदरा
विजयवाडा
विशाखापत्तनम्
श्रीनगर
सिल्चर
हैदराबाद

परिषद् के अन्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम		लेखक
जैन धर्म शिक्षावली	[भाग 1]	पं० उग्रसेन जैन
जैन धर्म शिक्षावली	[भाग 2]	पं० उग्रसेन जैन
जैन धर्म शिक्षावली	[भाग 3]	पं० उग्रसेन जैन
जैन धर्म शिक्षावली	[भाग 4]	पं० उग्रसेन जैन
जैन धर्म शिक्षावली	[भाग 5]	पं० उग्रसेन जैन
चरित्र निर्माण	[भाग 1]	पं० उग्रसेन जैन
चरित्र निर्माण	[भाग 2]	पं० उग्रसेन जैन
चरित्र निर्माण	[भाग 3]	पं० उग्रसेन जैन
छह ढाला		कविवर दौलत राम

पुस्तक प्राप्ति का एकमात्र स्थान—

अ० भा० दि० जैन परिषद् पब्लिशिंग हाउस

3625, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002